श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥
अथ दशमस्कंधवर्णनं ॥ अथ जन्माष्टमी की वधाई ॥
राग बिलावल ॥ धनि गोकुल जहां गोविंद आए ॥ धनि धनि
नंद सुमंगल धनि दिन धनि जसुमति जिन गोद खिलाए
॥१॥ धनि ये बाल केलि जमुनातट धनि बन सुरभी कान्ह च
राए ॥ धनि यह समय धन्य यह लीला धनि यह वेणु अध
र धरि गाए ॥२॥ धनि ये चरण सदा सुखकारी संतजनन के
हृदय समाए ॥ धन्य सूर ऊखल धनि गोपी जाके हित गोपा
ल बधाए ॥३॥ राग देवगंधार ॥ आजु अति बाढ्यौ है अनुरा
ग ॥ पूत भयौ री नंद महरि कें बड़े बे सब बड़भाग ॥१॥ दई है
सुवछ लछ है गैया नंद बढायौ त्याग ॥ पुनि गनक बंदी
जन मागध पायौ है अपनौ लाग ॥२॥ फूले ग्वाल मनो रण
जीते आनंद फूले बाग ॥ हरद दूब दधि माखन छिरकत म
चौ भटैया फाग ॥३॥ गोपी गोप आप सब सुख गावत मं
गलचार ॥ सूरदास प्रभु कों मुख निरखत बारबार बलि
हार ॥४॥ राग आसावरी ॥ देखो अद्भुत अवगति की गति कै
सो रूप धर्यौ है हरि ॥ तीनि लोक जाके उदर बसत है सूप के
कोन पर्यौ है हो ॥१॥ जाको काल भये ब्रह्मादिक सकल लोक विश्व
आराधे हो ॥ ताको नाल छेद ब्रजजुवती बारि नगा सो बा
धे हो ॥२॥ जा मुख को सनकादिक षोजत सकल चतुराई ग
ने हो ॥ सो मुख चूमति महरि जसोदा दूध लार लपटाने हो
॥३॥ तीनि लोक जाकी आस करत सो तो मांखन देषि अर्यौ
है हो ॥ सो गिरधर गिर वर हू तें भारौ पलना मांझ पर्यौ है हो
॥४॥ जो अश्रवणनि सुन्यों निगम निरंतर नेति नेति कहि गा
वे हो ॥ तिन श्रवननि के निकट जसोदा गावें अरु हुलरावे
हो ॥५॥ जो हरि भुजबल प्रह्लाद उबारे हिरनकस्य पउर फा
रे हो ॥ सो भुज पकरि कहत ब्रजजुवती ठाढे होहु दुलारे हो
॥६॥ सनकादिक जाको ध्यान धरत हें सिव समाधि न हारि
री हो ॥ सो अब सूरदास को ठाकुर गोकुल गोप विहारी हो
॥७॥ राग आसावरी ॥ धन्य जसोदा भाग तिहारो जिनि ऐसो
सुत जायो है हो ॥ जाके दरस परस सुख उपजत कुल कों तिमि
र नसायो हो ॥१॥ विप्र सुजान चारण बंदीजन हरषि नंद

Brihanmandiradhishwar

॥ बधाई॥ गृह आए हो॥ कुमकुम हार दूब दधि अछत हरखत सीस
बधाए हो॥ २॥ गरग मुनी सकहै हैं सवलछन अव गति हैं अ
विनासी हो॥ सूरदास प्रभु को जस सुनि के आनंदे ब्रज वा
सी हो॥ ३॥ राग आसावरी॥ जसुमति लटकनि पाइ परें॥
तेरो भलो मनै हो झगरें न तू मति मनहि डरें॥ १॥ दीनों हार
दुरकर कंचन मोतिन थार भरे॥ सूरदास स्वामी प्रगटे हैं
औसर पै झगरें॥ २॥ राग कांन्हरौ॥ झगरिन तें हो बहुत खि
जाई॥ कंचन हार दीये नहि मानत तुही अनोखी दाई॥ १॥
बेगि तू नाल छेदि बालक कौ जाति बयारि भराई॥ सत
संजम तीरथ व्रत कीने तब यह संतति पाई॥ २॥ मेरो ची
त्यो भयो नंदरानी नंद सुवन सुखदाई॥ दीजें बिदा जाऊ
घर अपने कालि सांझ की आई॥ ३॥ इतनी सुनत मगन हुई
रानी बोलि लई झगराई॥ सूरदास कंचन के आभरन झग
रनि पहराई॥ ४॥ राग देवगंधार॥ जसोधा नारन छेदन दे
हो॥ मनि मय जटित हार ग्रीवा को वे ही आजु हो लेहों॥ १॥ औ
रन के हैं गोधन सबै मेरें एक [illegible] नति हारो॥ मिलि सु गयो सं
ताप जननम को देखो नैं [illegible] लाग्यो॥ २॥ जन्म जन्म की आसा
लागी झगरनि झगरो कीनो॥ मनमें विहसत वे नंदरानी
हार हिये को दीनो॥ ३॥ जाको नाल आदि ब्रह्मा दिक सक
ल विश्व आधार॥ सूरदास प्रभु गोकुल प्रगटे मेटन को
भुव भार॥ ४॥ राग बिलावल॥ दधि सुत जम्यो नंद के द्वार
कर पल्लव ही टेकि रहे सब सो सुत अरुझ्यो द्वार हि द्वार॥ १॥
साखा पत्र जस सोभित के ग्रह फूलन फल तन लागी बार
ताके मोल न गण गंधर्व मुनि ब्रह्म रुद्र श्रुति करें विचार
२॥ दीन वचन बोलत ब्योपारी रहे ठगाहि तहां मन हि बिचा
र॥ सूरदास बलि जाय तुम्हारी ब्रज बनिता पहिर्यो उर हार
३॥ राग बिलावल॥ नंदनंदन है दावन चंद॥ जदुकुल नभ
तिथि द्वितिया देवकी प्रगटे त्रिभुवन वंद॥ १॥ जठर कुहू ते बि
हरि वाफैली दिस मधुपुरी सुछंद॥ वसुदेव संभु सीस धरि
आन्यो गोकुल आनंद कंद॥ २॥ ब्रज प्राची जसोदा राका की नि
सा सास सम ई दरित तुनंद॥ उडुगण सहित सरवा संकर्षण
तम कुल दनुज निकंद॥ ३॥ गोपीजन चकोर चित बांध्यो॥

Brihanmandiradhishwar

निमि निवारि पल छूटै॥ सूरदास कला षोडस पारि पूरन प
रमानंद॥४॥ राग कान्हरो॥ नंदमहर ते ढोटा आयो॥ देखत नं
द राय कौ वैभव मनहि गौरी लायो॥१॥ बंस बषानन लाग्यो
नंद कौ देखि गोप सब फूले॥ सूरदास रीझे ब्रजबासी आनं
द रस में फूले॥२॥ राग धनाश्री॥ तैं पढि नंद रिझायो ढाढिन
जसुमति सुत की कीरति गाई सब हिन के मन भायो॥१॥ नं
द सुवन गो अपने गरे कौ ढाढिन कौ पहरायो॥ दीनी धेनु बछ
गज घोरे उरभंड प बुलायो॥२॥ ढाढिन कौ सोने के नूपुर ग
हनो आगर गढायो॥ रतन जटित खगवारो गरे कौ जसुम
ति आप पठायो॥३॥ तेरे भलें भलो सब हिन कौ तें भलो मंग
ल गायो॥ सूरदास कौ सर्व सु दीनो मंगल सुजस सुनायो॥
४॥ राग सारंग॥ कृष्ण कंस सुनि नृप हरषायो॥ पुनि विनती क
रि नाय चरन सिर मधुरे वचन सुनायो॥१॥ मथुरा प्रगट होय
पुनि कैसे गोकुल आय पधारे॥ पुनि मथुरा कहि विधि ह
जाइ हैं पुनि द्वारिका सिधारे॥२॥ केहि विधि सुख दीनो निज
जन कौ केहि विधि दैत्य सिघारे॥ कहौ कृपा करि सकल भ
ली विधि येहि विधि वचन उचारे॥३॥ सुनि मन मुदित होय
शुक बोले आति अधर्म भुव भारी॥ असुरन कर सब धर्म
बिलाने गो द्विज आति दुखभारी॥४॥ तब पृथ्वी गो रूप धा
रि कैं विधि कै लोक सिधाई॥ करि बिलाप ब्रह्मा सो भाष्यौ
तुम कछु करो उपाई॥५॥ सुनि विधि सिव आदिक संग लै कै
छीर सिंधु तट धाई॥ हरि की अस्तुति कीए बहुत विधि स
ब दुख कहि रिहि सुनाई॥६॥ ह्वै नभ बानी कह्यो ब्रह्म सो सुर
सुरन सुनायो॥ तुम जादव में जन्म लेहु सब यह तुम सों
कहि गायो॥७॥ राम कृष्ण वसुदेव ग्रेह में प्रगट होय हैं जब
ही॥ धरा कौ भार हरे प्रभु जन मे दुःख नासेंगे सब ही॥८॥ पु
नि धरनी कौ समाधान करि विधि निज धाम सिधाए॥ जादु
व पति हैं सूरसेन ज्यों मथुरापुर में छाए॥९॥ देवकी अरु
वसुदेव ब्याह करि विदा होय सुख पायो॥ कंस बहिन भ
यौं सारथी होइ जब हू तहि बायो॥१०॥ भई अकासवानी सु
नि लैं तू कूबि देवकी जोई॥ सुत अष्टम सो तोहि मारि हैं यह
निश्चय है सोई॥११॥ सुनि पापी तब कंस देवकी पकरि संघा

Brihanmandiradhishwar

बधाई· रनिधारहीं॥ ज्ञानवान वसुदेव दीनहें यह तव वचन उचारयौं
१२॥ तियावहन अरु ब्याह समय ये हि हतिजग अपजस॥
छाहैं॥ ताते याके पुत्र सौंप जे सो सव तुमकों दैहैं॥ १३ सुनि
कें छोडि दियो घर आयो कीर्तिमान सुत जायौ॥ लें वसुदे
व चले सुत कों तब कंस महि जाय दिखायो॥ १४ कंस कह्यो
मोहि अष्टम दीजो तव नारद समुझायो॥ पुनि बुलाय मा
ह्यो सुत तबही वसुदेव दुख करि छायो॥ १५॥ यों हि विधि ष
ट बालक संघारे पुनि कारागृह दीनों॥ उग्रसेन हू कों तिन
बांध्यो जादव वैरी चीनों॥ १६॥ असुर पूतना सकट तृणावर्त
तिन सों बात विचारे॥ सूरदास यायी संगति ते दृष्ट ज्ञान मन
न धारे॥ १७॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे प्रथ
मोध्यायः॥ १॥ राग विहागरो॥ मातें गर्भ पधारे राम इच्छा ह
रि की जानि जोगमाया यह कीने काम॥ १॥ तैं सो गर्भ रोहिनी
कें धरि पुनि हरि इच्छा जानी॥ जसोदा गर्भ भई माया तव वा
तन कछु पहचानी॥ २॥ पुनि देवकी उदर हरि आये दस दिसि
सकल प्रकासी॥ देषन कंस तहां आयो ह मन में अकवकाणों म
मनासी॥ ३॥ नीरयारें कृष्ण आय देखे वेर हृदय धरि लीनों॥ ब्र
ह्मादिक सब आय देवकी गर्भहि अस्तुति कीनों॥ ४॥ करि वि
नती निज धाम सिधाये हरखे मन हि मझारी॥ सूरदास भक्त
न वस माधो आये गर्भ मुरारी॥ ५॥ इति श्री भागवते दसमस्कं
धे द्वितीयोध्यायः॥ २॥ राग सारंग॥ भादों कृष्णपक्ष सुखका
री अर्द्धनिसा बुधवार अष्टमी सव जगमंगलकारी॥ १॥ स्यं
म स्वरूप पीतपट औढें अति सुंदर भुजचारी॥ सुर कुसमु
नि वरखा वहु कीनी वसुदेव मन हि विचारी॥ २॥ दस ह जा
र गो दान मन हि करि हरि की स्तुति कीनी॥ पुनि देवकी क
री विनती बहु कंस डर हि दुख भीनी॥ ३॥ हरि बोले तुम उ रों
न मन में तुम तप कीनों भारी॥ वर दीनों में प्रगट भयो अ
व तुम यह हिय में धारी॥ ४॥ नंद महर घर सुत नहि लेइ कें
वसुदेव तुरत सिधाए॥ वेरी कटी पहरुवा सोये द्वार कपा
ट खुलाए॥ ५॥ शेष सहस्र फण वूंद वचावें जमुना मार
ग दीनों॥ जाय नंद घर धर्यो पुत्र कों कन्या निज करि ली
नों॥ ६॥ आए घर यह ज्ञान न काहू हरि माया वल भारी॥ सू

Brihanmandiradhishwar

सूरदास हरि की लीला लखि सब जन मंगलकारी ॥७॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे तृतीयोध्यायः ॥३॥ राग बिहा
गरो ॥ वसुदेव जब आए निज ठौर ॥ बेरी परी द्वार लागे सब जो
पहरुवा सब चहुं ओर ॥१॥ जाय कंस तें कही जन्म की उरबट
तब धायौ आयौ ॥ तब देवकी दीन ह्वै बोली कन्या जन्म सुनायौ
॥२॥ यह मो कों अब मागें दीजें सुन नहि कंस रिसायौ ॥ खिझि के
झटकि के लई अति मूरख सिला हि पटकि चितलायौ ॥३॥ कर
तें निकसि जाय नभ ऊपर अष्टभुजा धरि लीनौ ॥ अरे मूढ तो
हि मारन हारौ प्रगट्यौ है धरि चीनौ ॥४॥ मुनि के दुख पायौ पु
नि देवकि अरु वसुदेव छुडायौ ॥ दीन वचन कहि गयौ भव
न सौं मन अति सोच बढायौ ॥५॥ निस बीती जब भोर भयौ तब
असुरन कौं बुलायौ ॥ बैरी प्रगट भयौ काहू दिस करि उपाय
मन भायौ ॥६॥ असुर कहैं तुम सोच करौ जिनि दस दिन के
जे बाल ॥ सब के प्राण हरैं एक छिन में सुख पावे भूपाल ॥७॥
बैरी छोटो बडो न छोडें यह है नृप की रीति ॥ ताते वेगि
करै अब उद्दिम सुनत भई परतीति ॥८॥ यज्ञ दान
गो विप्रन तें ये न बस सब देव डराय ॥ यहीं हमारो म
त है नीकौ सुनत मूढ अति काय ॥९॥ काल विव
स कंस हि मन भाई भली बुद्धि तुम दीनी ॥ जाय कं
स सब असुरहि प्रेरौ धाय उपद्रव कीनी ॥१०॥ रि
षि मुनि हरिजन सब दुख पायो कंस काल नियरा
यौ ॥ मंगल है है अरु अघ आगि लगावे प्रजा बहुत दुख
पायौ ॥११॥ हरिजन द्वेष दोऊ दिस बिगरे सो यह कंस हि भाई
सूरदास प्रभु ब्रज में प्रगटे निज जन के सुखदाई ॥१२॥ इ
ति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे चतुर्थोध्यायः ॥४॥
राग बिहागरो ॥ भरोसो दृढ इन चरनन केरौ ॥ श्रीवल्लभ नख
चंद्र छटा बिनु सब जग मांझ अंधेरौ ॥१॥ साधन और नहीं या क
लि में जासों होय निवेरौ ॥ सूर कहा कहै द्विविध आंधरौ बिना
मोल कौ चेरौ ॥२॥ राग सारंग ॥ व्यास कह्यो शुकदेव सों श्री
भागोत बखांनि ॥ नवम स्कंध नृपसों कहै श्री शुकदेव सु
जांन ॥ सूर कहत अब दशम कों उर धरि के हरि ध्यांन ॥१॥
राग सारंग ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौ ॥ हरि चरणारविंद

Brihanmandiradhishwar

वधाई उरधरों १ जयअरुविजयपारखददोइ ॥ विप्रसरापअसुर
भयेसोइ २ दोऊजनममेंज्योंहरिउद्धारे ॥ सोतोमेंतुमसोंउ
च्चारे ३ ॥ दोऊजनममेंज्योंहरिउद्धारे ॥ सोतोमेंतुमसोंउचारे
४ ॥ दंतवक्रसिसुपालसुभये ॥ वासुदेवकेंसोपुनिहये ५
औरोंलीलाबहुविस्तार ॥ कीनोंजीवनकोनिस्तार ॥ ६
सोअबतुमसोंसकलबखानो ॥ प्रेमसहितसुनिहिरदें
आनो ॥ ७ ॥ जोयहकथासुनोंचितलाइ ॥ सोभवतरिबैकुंठ
सिधाय ॥ ८ ॥ जैसेंसुकनृपसोंसमझाई ॥ सूरदासत्योंही
करिगाई ॥ ९ ॥ रा ग मा रं म ॥ आदिसनातनहरिअविना
सी ॥ सदानिरंतरघटघटवासी ॥ १ ॥ पूरणब्रह्मपुराणब
खानें ॥ चतुराननसिवअंतनजानें ॥ २ ॥ महिमाअगमनि
गमजिहिगावें ॥ सोजसोदालियेंगोदखिलावें ॥ ३ ॥ एक
निरंतरध्यावेंज्ञानी ॥ पुरुषपुरातनहैनिरवानी ॥ ४ ॥ सुकसा
रदजाकोंकरतविचारा ॥ नारदसेंनहिपावेंपारा ॥ ५ ॥ जप
तपसंजमध्याननआवें ॥ सोईनंदकेआंगनधावें ॥ ६ ॥
लोचनश्रवणनरसनानासा ॥ बिनपदपानकरेपरकासा
७ ॥ अरुणअसितसितबरणनिधारे ॥ मुनिमनसामेंकहुं
विचारे ॥ ८ ॥ विश्वंभरजिननामकहावें ॥ घरघरगोरसजाइ
चुरावें ॥ ९ ॥ जरामरणतेरहितअमाया ॥ मातपितासुतबंधुन
हुया ॥ १० ॥ आदिअनंतरहैनलसांई ॥ परमानंदसदासुखदा
ई ॥ ११ ॥ ज्ञानरूपहिरदेमेंबोले ॥ सोईबछरनकेपाछेंडोले
१२ ॥ जलधरअनलअनलनभछाया ॥ पांचतत्वतेंजगउप
जाया ॥ १३ ॥ लोकरचेराखेअरुमारे ॥ चौदहभवनपलकनहि
टारे ॥ १४ ॥ कालडरेंजाकेडरभारी ॥ सोऊखलबांध्योमहतारी
१५ ॥ मायाप्रगटसकलजगमोहे ॥ कारनकरनकरेसोसोहे
१६ ॥ जाकीमायालखेंनकोई ॥ निर्गुणसगुणधरेंतनसोई ॥ १७
सिवसमाधिजाकोंअंतनपावें ॥ सोईगोपकीगाइचरावें
१८ ॥ गुनअनंतअविगतहिजनावें ॥ जसअपारस्रुतिपा
रनपावें ॥ १९ ॥ चरनकमलनितरमापलोटें ॥ चाहेंहरसप
लोपलजोवें ॥ २० ॥ अगमअगोचरलीलाधारी ॥ सोराधाब
सकुंजविहारी ॥ २१ ॥ जोरसब्रह्मादिकनहिपावो ॥ सोरसगो
कुलनदीबहावो ॥ २२ ॥ बडभागीएसबब्रजवासी ॥ जिहिके

Brihanmandiradhishwar

संगखेलेंअविनासी २३ सूरसुजसकहिकहांवखानें गोवि
दकीमानिगोविदजांनें २५ ॥ रागरामकली ॥ अद्भुतचरि
त्रगोकुलराइ ॥ दांवानलकोंपांनकीनोंपीवतदूधसिरा
इ ॥ १ ॥ पूतनांकेप्रांनसोषेरहेउरलपटाय ॥ कहतिजननी
दूधवारनिरखिजनकछुनसुहाय ॥ २ ॥ तणावर्तआकाशतें
पटकोंसिलापरआइ ॥ डारतलालहिंडोलफूलतखरेदेत
झुलाइ ॥ ३ ॥ बकासुरकीचोंचिफारीसकलदृष्टिदिखाइ ॥ की
रपिजरातेंतअघसुरीस्यांमलेतभजाइ ॥ ४ ॥ बिनादीपकधरअ
धारेंस्यांमधरतनपाइ ॥ अघासुरमुखपैठिनिकस्योंबाल
वछजिनाइ ॥ ५ ॥ धर्योंगिरवरदेंहनीकरधरतबांहपिराइ
सकटभंजनछुवतनिपकुचकठिनलागतपाइ ॥ ६ ॥ लि
छोकोरेननागकालीस्यांमदेखिडराइ ॥ सहसफनपरनि
तकीनोंसप्ततालवनाइ ॥ ७ ॥ घोषनारीसंगमोहनरच्योंरा
सवनाइ ॥ कहनजननीव्याहकिनवलसिवदनसराइ
८ ॥ जमलार्जुनतोरितापेहृदयप्रेमवसाइ ॥ कहतनांनपा
लासपल्लवदेहुदेनदिखाइ ॥ ९ ॥ बालकवछनवहतन
हेतदौरीमाइ ॥ फूरिपसुछपिरहोवनमेंदुमनदूठतजाइ
१० ॥ वृषभभंजनमथनकेसीत्योंपूछफिराइ ॥ भजतसख
नसमेतमोहनदेखिबालगाय ॥ ११ ॥ कहेंकहाजूएकरस
नाकरोंअनेकउपाइसूरप्रभुकीअगममहिमाएकअगनि
तमाइ ॥ १२ ॥ रागकेदारों ॥ बदतविरंचिसिवेंसुकृतव्रजवा
सिनके ॥ श्रीहरिप्रगटेजिनिकेहेतकोंनसुकृतव्रजवासिन
के ॥ १ ॥ ज्योतिरूपजगन्नाथजगतगुरुजगतपिताजगदीस
जोगजज्ञजपतपमुनिदुर्लभसोप्रभुगोकुलईस ॥ २ ॥ इक
इकरोमविराटकोरिननेंअनंतकोटिब्रह्मांड ॥ नाकोंउछ
गेंलेतिजसोदाअपनेंनिजभुजदंड ॥ ३ ॥ अनुदिनसुरतरुपु
जसुधारसचिंतामनिसुरधेनु ॥ सोनजिजसोमतिकोंपय
पीवतभगतनकोंसुखदेन ॥ ४ ॥ रविससिकोटिकलासेलो
चनत्रिविधितिमरभजितात ॥ अंजनदेतहेतसुतकेचख
मुखजाकेहाथ ॥ कार्येकामरिहाथलकुटियाविहरतव
छरामाथ ॥ ६ ॥ जाकेजठरलोकत्रैजलथलपंचतत्वचहु
खांनि ॥ सोबालकह्वैंझूलतपलनाजसुमतिकेग्रहआंनि ॥ ७ ॥

पुंकरागहिजसुमतिमाता ॥ कमलानयनकोंदुखदायक १८

॥ वधाई ॥ छिति न विचित्र पद करी करुणामय वालि छलि दीयो पतार
देहरी उलंघि सकत नहिं सो प्रभू खेलत नंद दुवार ॥ ८ ॥ ह
रणाकरण दालाभुक्ता प्रभु विश्वंभर जग जांनि ॥ तिहि लगा
इ माषन की चोरी बांधत हैं नंदरांनि ॥ ९ ॥ वदत वेद उपनि
षद षष्ट रस अर्पें भुक्ता नांहि ॥ गोपी गोप ग्वाल मंडल में ह
सि हसि झूठनं खाइ ॥ १० ॥ वकी वकासुर सकट तनावर्त
अघ प्रलंब वृषभासुर केशी ॥ कंस कों वह गति दीनी रा
खि चरननि निवासी ॥ ११ ॥ भक्तवछल प्रभु पतित उधारन र
ह्यौ सकल भरि पूर ॥ मारग रोकि पर्‌यौ है ठाढो पतित सि
रोमनि सूर ॥ १२ ॥ जन्मलीला वर्णनं ॥ राग सारंग ॥ बा
लविनोद भावती लीला अति पुनीत मुनि भाखी ॥ साधु
साधु तुम कह्यो परीक्षित सकल देव मुनि साखी ॥ १ ॥ का
लिंद्री के कूल प्रगट एक मधुपुरी रसाला ॥ कालिनेम उ
ग्रसेंनि राजकुल उपज्यो कंस भूपाला ॥ २ ॥ आदि ब्रह्म ज
ननी सुरदेवी नाऊ देवकी बाला ॥ दई विवाहि कंस वसु
देवहिं दुखभंजन सुखमाला ॥ ३ ॥ हय गय रतन हेम पाट
वर आनंद मंगल चारा ॥ समुदित भई अनाहद वानी कं
स कांन परी सारा ॥ ४ ॥ याकी कूखि अवतरें गो सुत करिहैं
प्रांन प्रहारा ॥ रथ तें उतरि कंस गहि लीनी करौं षड्ग पट ता
रा ॥ ५ ॥ तब वसुदेव दीन ह्वै वोल्यौ पुरुष न तिय वध करई
मो कों भई अनाहद वानी ता तें सोच न टरई ॥ ६ ॥ आगें वृक्ष फलें
जो विष फल वृक्ष विना अनु सरई ॥ याहि मारि तो हि और विवा
हैं कहां सोच दुख जरई ॥ ७ ॥ यह सुनि सकल देव मुनि भाखी
राजन ऐसी कीजें ॥ तुम्हरे मान्य वसुदेव देवकी जीवदान इ
हि दीजें ॥ ८ ॥ कीनौं जज्ञ होत हैं निहफल वेद भंग नहिं कीजें
याकी कूखि औतरें जो सुत सो वधान होय लीजें ॥ ९ ॥ वाचक
वंधु कंस करि छांडे तव वसुदेव पतीजें ॥ मानों मृग परत
गह्वन में नेंन नीर उर भीजें ॥ १० ॥ पहलौ पुत्र देवकी जायौ
सो वसुदेव दिखायौ ॥ वालक देखि कंस हसि दीनौं सुत अ
पराध छमायौ ॥ ११ ॥ कंस कह्यौ लरिकाई कीनी नारद कहि
समझायौ ॥ जाके डर तुम करत हौ अपडर सो मति पहलें आ
यौ ॥ १२ ॥ यह सुनि कंस पुत्र फिरि मांग्यौ इहि विधि कंस सिधा

Brihanmandiradhishwar

हौं ॥ नवदेवकीभई अतिव्याकुल वे संग्रानग्रह्यौं ॥१३॥ कं
सवंसकोंनासकरनदूं कह्योलोंजीवउवारों ॥ यहविपरक
वमिरिहूंश्रीपति औरकहूंपुकारो ॥१४॥ धेनुरूपह्वै पौंहै
सिपुकरीशिवविरंचिकेद्वारा ॥ सवमिलिगएपुरुषोतम
आयेंजिहिगतिअगमअपारा ॥१५॥ क्षीरसमुद्रमध्यातिहि
पौढेवोलतनिगमअपारा ॥ उधरोंधरदानवकुलमारोंले
नरतनअवतारा ॥१६॥ आपुहीगर्भदेवकीआउंमधुपुरी
आनअधारा ॥ असुरमारिसुरसाधिवढाऊं व्रजजनसु
खदातारा ॥१७॥ सुरनरअरुपसुपंछीवांछें सवकोंआ
युसदीनों ॥ गोकुलजन्मलेहुसंगमेरेजोचाहोसुखकी
नों ॥१८॥ जिहिमायाविरंचिसिवमोहे वहैमानकरिचीनों
देवकूषिआकर्षरोहिनीआपुनआसनलीनों ॥१९॥ हरि
केगर्भदेवकीजननीवदनउजारोलागे ॥ मानोसरदचं
द्रमाअगाथ्यो देखनहीनमभागे ॥२०॥ सुरसवदेववंदना
आएवसुदेवसोवनजागे ॥ अविनासीकोआगमजान्यो
सकलदेवअनुरागे ॥२१॥ कछुदिनगएगर्भकोआगम
उरदेवकीजनायो ॥ कह्योकरोंसावानाहिंकोऊं चाहतगर्भ
दरायो ॥२२॥ आठेंवुधरोहिनीपाछेंचीवसुदेवनिकटवुला
यौं ॥ अखिललोकनायकसुखदायक अजनजन्मधरिआ
यो ॥२३॥ माथेमुकटसवनपरओढे अरुसोहेंभृगुरेखा ॥ शं
खचक्रगदापद्मविराजतअतिप्रतापसासिपेखा ॥२४॥ नव
देवकीभई अतिव्याकुल अद्भुतचरित्रविसेखा ॥ वैठीस
कुचिनिकटपतिवोल्योदेहुनपुत्रमुखदेखा ॥२५॥ सुनि
देवकीइकआनजन्मकीतोकुंकथासुनाऊं ॥ तेमांगोमोमें
दीयोंकृपाकरितुमसोंवालकपाऊं ॥२६॥ शिवसनका
दिआदिब्रह्मादिकग्यानध्याननहिंआऊं ॥ भक्तवछलवि
रदहैमेरोंविरदहिंकहांलजाऊं ॥२७॥ यहकहिमायामोह
उपजारोसिसुह्वैरोवनलागे ॥ अहोवसुदेवजाहुलैगो
कुलहमहैंपरमअभागे ॥२८॥ घनदामिनिधरनीलो
काधेजमुनाजलसोंपागे ॥ लैवसुदेवधसेदहस्रधे
सकलदेवअनुरागे ॥२९॥ आगेंजाऊंजमुनजलगह्यो
पाछेंसिंहदहागे ॥ गुल्फजंघगलनासिकानवल

Brihanmandiradhishwar

वधाई गइयांमइछागे ॥ ३० ॥ चालपसारि परसि कालिंदी तरवानीर
जुलागे ॥ ऊपरसीसमहिसफणछाए लेंगोकुलकोभागे ॥ ३१ ॥
पौढेहैंजाइमहरिमंदिरमें नेंकनसंकाकीनी ॥ पाइहरी ॥
जेमाकीसंपतिवसुदेवगोदकरिलीनी ॥ ३२ ॥ लेंवसुदेवतु
रतहींआयेसकलदेवजयवांनी ॥ देवेंकूखिअवतरीक
न्याकंसप्रतीतिनमांनी ॥ ३३ ॥ पटकतसिलागईआकास
कोंदोऊभुजलपटाई ॥ गईअकासबोलीसुरदेवीकंसअ
वधिनियराई ॥ ३४ ॥ जैसेंमीननीरमेंबूडतसकेंनआपलखा
ई ॥ ऐसेंकंसकालउपज्योहेंव्रजमेंजाइवराई ॥ ३५ ॥ यहसु
निकंसगयोदेवकीपेंजाइचरणलपटाई ॥ मेंअपराधकि
योसिसुमारे लिष्योनमेंट्योजाई ॥ ३६ ॥ छमिअपराधदेवा
कीमोकोंकरजोरेंविलखाई ॥ आठेंगर्भअवतरयोहेसुत
पुत्रीमितीवुलाई ॥ ३७ ॥ बाधिपहरसिज्यातरपोंटेनेंकनी
दनहिआई ॥ रोवनलगेभयोउजियारोप्रगटेकुवरकन्हाई
३८ ॥ जागेमहरिपुत्रमुखदेष्योआनंदतूरवजाई ॥ कंचन
कलसहोमद्विजपूजाचंदनभवनलिपाई ॥ ३९ ॥ बारनिवं
दनिवारवधाएजुवतिनाचनलगाए ॥ दिसदिसतेंवरखे
कुसमनिसुरफूलनमोकुलछाए ॥ ४० ॥ अतिआनंदपरसि
पूरनमनसुरनारनिरखाए ॥ आनंदभरेकरतकौतूह
लमुदितमुदितनरनारि ॥ निरभयभयेनिसांनवजावत
देतनंदसोंगारि ॥ ४१ ॥ नचतमहरिमगनमनकीनेभावि
वजावतनारी ॥ सूरदासप्रभुगोकुलप्रगटेकंसहिगर्भ
प्रहारी ॥ ४२ ॥ रागविलावल ॥ आनंदेंआनंदवढ्यौअति
देवनिदेवदुंदुभीवजाईसुनिमथुराप्रगटेजादवपति
॥ १ ॥ गावतगुनगंधर्वपुलकततननाचतिसवसुरनारिरसि
कअति ॥ वरषतकुसमसुदेससूरघनगाजतथेईथेई
तालजननिजवन ॥ शिवविरंचिअरुइंद्रअमरमुनिफूले
सुखनिसमानमुदितमन ॥ २ ॥ रागकेदारो ॥ हरिमुखदेखि
होवसुदेव ॥ कोटिकामस्वरूपवालककोऊनजानेंभेव
॥ १ ॥ फरेतारेपरेपहरुवाभज्योमनसंदेह ॥ रैनिअंधयारीवी
जचमकेसघनवरखेंमेह ॥ २ ॥ खानसोएपहरुपोटेभए
मुक्ताद्वार ॥ वंदवेरीसर्वेछूटीकान्हकेअवतार ॥ ३ ॥ वाजिमु

Brihanmandiradhishwar

जजाकें चारि आयुध निरखि हों नरनाहि ॥ अजहूं मन पती
ति नाहीं नंद घर लें जाहि ॥ ४ ॥ लें चले उत्संग सुत कों देखित
वहु जन संक ॥ हृदय लाय दुराय लीनों लई निधि मनें रंक
॥ ५ ॥ सिंघ आगें शेष पाछें जौंति जमुना पूरि ॥ नासिका लों
नीर आयो पार पेली दूरि ॥ ६ ॥ गोद लैने धुनकार दीनों नदी
पायो भेव ॥ पुलकि कें हरि चरण परसे पार गये वसुदेव ॥ ७
महरि ढिग मन जा निरखि अमर मुनि आनंद ॥ सूरदास
विसाल ब्रज हित प्रगटे आनंद कंद ॥ ८ ॥ राग धनाश्री ॥
भादौं की रैनि अति अधियारी ॥ द्वार कपाट कोट रोके भट
दस दिसि कत तकं सभय भारी ॥ १ ॥ गरजत मेघ महाडर लाग
त बीच वहे जमुना जल कारी ॥ ताते सोच भई मन मेरे कौ
दे हैं सिसु वदन उज्यारी ॥ २ ॥ तब कहि न कंस रोकि राखी हों ता
है दिन कार हूं नहि मारी ॥ देखी धौं के सों सुत विछुरन कों ने
विधिनी वेम दूनारी ॥ ३ ॥ सुनि सुनि दीन वचन देवकी के दी
नबंधु भक्तन भयहारी ॥ छोपी वंद के वालक धरि गये सूरसु
मघवा ब्रह्म मुनि वारी ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ अहो पाय मोई उपा
इ कछु कीजे ॥ जिहि उपाय अपनो इहि वालक राखि कंस सों
लीजे ॥ १ ॥ मनसा वाचा और कर्मना न एक वहू न पतीजे ॥ छ
ल बल करि उपाउ के सें हूं कोटि अनंत नाहि दीजे ॥ २ ॥ नाहि
अपनो भाग्य जु पहु सुरझाने तलो वनपुट पीजे ॥ सूरदास ऐ
से सुत को जस श्रवननि सुनि सुनि लीजे ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥
सुनि देवकी इक कहूं हित हमारो ॥ असुर कंस अपवंस वि
नासन सिर ऊपर वेंनो रखवारो ॥ १ ॥ ऐसो कों समरथ त्रि
भुवन में जो इहि वालक नेक उवारें ॥ खरग धरें आवत तो
हि देखत अपने कर छिन माहि पछारें ॥ २ ॥ पहु सुनि कें अ
कुलाई गिर धरानें नैन नीर ढरेउ भरि टारें ॥ देखि ने देखि वसु
देव देवकी प्रगट भयो धरिकें भुज चारें ॥ ३ ॥ बोलि उठे पर
तिज्ञा यह प्रभु हम नेउ वरें न वमो हि मारें ॥ अति देखे में सु
घरें पितु मातहि सूरज प्रभु नंद सुवन सिधारें ॥ ४ ॥ राग
विहागरो ॥ देवकी मन मन चकृत भई ॥ देखो आइ पुत्र मुख
काहे न ऐसी कहूं देखी नई ॥ १ ॥ सिर पर मुकट पीत उपरना
भृगु पद उर भुज चारि करें ॥ पूर्व कथा सुनाय कही हरि तु
म मांग्यो यह भेष धरें ॥ २ ॥ छोरी निगड सुवाय पहरूवा द्वा

Brihanmandiradhishwar

॥ वधाई ॥ रैकीं कपाट उघहौं ॥ तुरत मोहि गोकुल पहुचावहु यह कहि
कैं सिसु भेष धस्यौ ॥ ३ ॥ तब ही उठि वसुदेव सु सुनि कैं हरष
वंत नंद घर आये ॥ बालक धरि लै सुरदेवी कौं सूर मधुपु
रि छाये ॥ ४ ॥ राग देवगंधार ॥ आधियारी भादौं की राति
बालक हित वसुदेव देवकी देखि बहुत पछितात ॥ १ ॥
बीच नदी घन बरखत गाजत दामिनि आवत जात ॥ वे
ठति उठति सेज सोवति मैं कंस डरनि अकुलात ॥ २ ॥ गोकुल
बानन सुनी वधाई लोगन हियें सु हरति ॥ सूरदास आन
दनंद कैं देत कनक नग राति ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ गोकु
ल प्रगट भये हरि आइ ॥ अमर उधारन असुर संघारन अं
तरजामी त्रिभुवन राइ ॥ १ ॥ माथे पर वसुदेव धरि ल्याए नं
द महरि घर गए पौढे चाइ ॥ जागी महरि पुत्र मुख देख्यौ
पुलकि अंग उर मैं न समाइ ॥ २ ॥ गदगद कंठ बोल न हिआ
वें हरखवंत ह्वै नंद बुलाइ ॥ आहो कंत सरस न भये तुरत
पुत्र मुख देख्यौ आइ ॥ ३ ॥ दौरि नंद गये सुत मुख देख्यौ सो सो
भा मोपै वरनी न जाइ ॥ सूरदास पहलें यह माग्यौ दूध पि
वावहु जसुमति माइ ॥ ४ ॥ राग आसावरी ॥ ब्रज भयौ महर
रि कैं पूत जब यह बात सुनी ॥ तब आनंदे सब लोक गोकु
ल गन क गुनी ॥ १ ॥ अति पूर्व पूरे पुन्य रूपी कुल सिथर थुनी
ग्रह लग्न नक्षत्र बल सोधि कीनी वेद धुनी ॥ २ ॥ सुनि धाई
सबें ब्रज नारि सहज सिंगार किये ॥ तन पहरें नौतन चीर
काजर नैंन दिये ॥ ३ ॥ कसि कंचुकी तिलक लिलाट सोभित
हार हिये ॥ कर कंकन कंचन थार मंगल साज लिये ॥ ४ ॥ वे
अपने अपने मेलनि कसी भांति भली ॥ मांनौ लाल मुनिन
की पांति पिंजरन चूरि चली ॥ ५ ॥ ते गावत मंगल गीत मिलि
दस पांच अली ॥ मांनौ भोर भयौ रवि देखि फूली कमल कली
॥ ६ ॥ उर अंचल उडत न जाने सारी सुरंग सुही ॥ मुख माडें रोरी
रंग मैं दर मांग छुही ॥ ७ ॥ अवश्र वणनि तरल तरोना वैंनी
सुमन गुही ॥ सुख बरखत सुमन विमान मानौं मेघ फुही ॥ ८ ॥
एक पहलैं पौहोचीं जाइ अति आनंद भरी ॥ लई भीतर भवन
बुलाइ सब सिसु पाइ परी ॥ ९ ॥ एक वदन उघारि निहारि देहि
असीस खरी ॥ चिरजीयौ जसोदा नंद पूरन कांम करी ॥ १० ॥ ध
नि धन्य महरि जी की कूषि भाग सुहाग भरी ॥ धनि दिन धनि

Brihanmandiradhishwar

पहूरानिधांनियह पहरघरी ॥११॥ जिनिजायौं ऐसौ पूतस
वसुखकानिकरी ॥ पिरथ्यौ सवपरिवारमनकी सूलहरी
१२ ॥ सुनिग्वारनिमाइ बोहोरि वालक वोलिलए ॥ गुहिगुंजाघ
सिवनधातुअंगअंगचित्रठए ॥१३॥ सिरदधिमाखनकेमाट
गावतगीतनए ॥ जेफांकिमदंगवजावतसवनंदभवनगए
१४ ॥ एकंनाचतकरतकुलाहलछिरकतहरदहरदही ॥ मानौं
वरखतभादौंमासनदी घृतदूधवही ॥१५॥ जाकौंजहीजही
चितजाइकौतिकतहीतही ॥ अतिआनंदमगनगुवाल
काहूंवदतनही ॥१६॥ एकधाइनंदजूपैंजाइ पुनिपुनिपाइपरें
एकआपआपहीमाहिहसिहसिमोदभरें ॥१७॥ एकअभरन
सवेउतारिदेतनिसंककरें ॥ एकदधिरोचनअछदूबसवन
केसीसधरें ॥१८॥ जवनंदन्हाइभयेठाढेलैंकुसहाथधरें ॥ नं
दीमुखपितरपुजाइअंतरसोचहरें ॥१९॥ घसिचंदनचारुम
गायविप्रनतिलककरें ॥ द्विजगुरजनकौंपहराइसवके
पाइपरें ॥२०॥ गानगेयागिनिपनजाइतहांसवबछवढी न
एचरैंजमुनाकेकाछदूनेदूधचलीं ॥२१॥ खुरहपेंतामेपीठि
ठिसोनेसीगमढी ॥ तेदीनीद्विजनअनेकहरखिअसीसप
ढी ॥२२॥ तवइसमित्रअहवंहसिहसिवोलिलयौ ॥ घसि
मगमदमलयकपूरमाथैतिलककियौ ॥२३॥ उरमनिमाला
पहराइवसनविचित्रदियौ ॥ मानौवरखतमासअषाढद
दमोरजियौ ॥२४॥ सितरीजनमागधसूतआंगनभवनभरें
तेवोलेंलेंलेंनामहितकोकनाविसरें ॥२५॥ जिहिजाचौ
सोतिहिंदीनों ईसनंदरायढरें ॥ अतिदेनमांनपरधांनपू
रनकामकरें ॥२६॥ तवअंवरऔरमगाइ सारीसुरंगघनी
तेदीनीवधूनवुलायजैसीजाइवनी ॥२७॥ तेनिकसीदेति
असीसरुचिअपनीअपनी ॥ तेअतिआनंदसमेतनिजग
हगृहगवनी ॥२८॥ तवघरघरभेरिमदंगपटहनिसांनवजें
वरवांधीवंदनवारस्वच्छजलकलससजें ॥२९॥ तादिनतेवे
लोगसुखसंपतिनतजें ॥ सुनिसूरसवनकीयहगतिजिन
हरिचरनभजे ॥३०॥ रागआसावरी ॥ आजुवनकोऊवैंजि
नजाइ ॥ सवगाइवछरनसमेतसवलावहुचित्रवनाइ ॥१॥
सवेंघोषमेंभयोकुलाहलआनंदउरनसमाइ ॥२॥ वालक
आजुभयोजसमतिकेंकहतसुनाइसुनाइ ॥ सवेंघोषमेंभ

Brihanmandiradhishwar

॥बधाई॥ योंकुलाहलआनंदउरनसमाइ॥१॥कितहोंगहरुकरतबिन
कामेंवेगिचलोउठिधाउ॥अपनेअपनेमनंकोचीत्योंसब
कोऊदेखोंआइ॥३॥एकफिरतदधिदूबधरतासिरएकगह
तगहिधाइ॥एकहसिहसिदेतबधाईएकहसतिउठिगाइ॥
४॥बालकवृद्धतरुननरनारीभयोचौगुनोचाइ॥सूरदास
सबप्रेममुदितक्षणगिनतनराजाराइ॥५॥रागआसावरी॥
सखीहोंकाहेकोंगहरुलगावत॥सबकोऊऐसोसुखसु
निकेंकोंनारीउठिधावत॥१॥आजुसुबालविधाताकीनी
मनजुचितनितभावत॥सुतकोंजन्मजसोदाकेघरताल
मितेहिबुलावत॥२॥दधिरोचनभरिवेगिचलोंमिलिक
नकथारकरगावति॥साचेंहीसुतभयोनंदकेंकाहेकोंबौ
रावति॥३॥अंचरउडतसिथलचोटीसिरसुमनसुधनवर
षावति॥सूरदाससुनिजहांतहांतेआवतिसोभापावति॥
४॥रागरामकली॥सखीहेंअपनीचालोआई॥ऐसेदिननि
नंदकेसुनियतउपज्योकुवरकन्हाई॥१॥बाजतब्रजनिसानस
बकीविधिरुजमुरजसहनाई॥महरिमहरिसेऊहाथलुटाव
तआनंदउरनसमाई॥२॥चलोसखीहमहूंमिलिजेयेंनेंकक
रोंअतुराई॥कोऊपहरीकोऊपहरतिकोऊऐसेहीउठिधाई॥
३॥कंचनथारदूबदधिरोचनगावतचलीबधाई॥भांतिभांति
बनिचलीजुवतीजनउपमावरनिनजाई॥४॥अमरविमान
चढेसुरदेखतजयधुनिशब्दसुनाई॥सूरदासप्रभुभक्तहेत
हितदुष्टनिकेदुखदाई॥५॥रागसारंग॥आजुएकभलीबा
तसुनिआई॥महरिजसोदाबालकजायोआंगनबजतबधा
ई॥१॥कहियेंकहांकहतनहिआवेंरतनभूमिसबछाई॥
नाचतवृद्धतरुनबालकगोरसकीचमचाई॥२॥छपेंभीएगो
पग्वालनकीवरनोंकहांबनाई॥सूरदासप्रभुअंतरजामी
नंदसुवनसुखदाई॥३॥रागसारंग॥आजुनंदकेद्वारेंभीर॥ए
कआवतएकजातबिदाह्वैएककठेमंदिरकेतीर॥१॥को
ऊकेसरिकोंतिलकबनावतकोऊपहरतकंचुकीचीर॥
एकनिमाथेंदूबरोचनाएकनकूंवंदतिकेंधीर॥२॥एक
नकोंगाऊदानसमर्पतएकनकोंदेंरायतहीर॥सूरदास
धनिस्यामसनेहीधन्यजसोदापुन्यसरीर॥३॥रागधनाश्री॥
आजुबधावोनंदरायकेंगावहुमंगलचार॥आएमंगलक

लसम्माजिकें दधिफलनूतनदुग्ध ॥ १ ॥ पुमेलें नंदराइकें गोप
सखनमिलिहूए मागधवंदीसूतअतिकरहिकौतूहलबा
र ॥ २ ॥ आएपूरनआसके सबमिलिदेतअसीस ॥ नंदराइकौं
लाडिलो जीवौकोटिवरीस ॥ ३ ॥ तबब्रजलोगननंदजूदीने
वसनबनाइ ॥ ऐसीसोभादेषिकें सूरदासबलिजाइ ॥ ४ ॥
रागजैतश्री ॥ आजुवधाईनंदकेंमंदिरअगयौपूतसक
लसुखकंदर ॥ १ ॥ नसोभातेसोभाब्रजकीसोभा ॥ देखिसखी
कछुऔरेंगोभा ॥ २ ॥ लक्ष्मीसीजहांमालिनिबोलें ॥ वंदन
मालाबांधतिडोलें ॥ ३ ॥ द्वपवुहारतफिरतअष्टसिद्धि ॥ क
वोसाथियाचीततिनवनिधि ॥ ४ ॥ ग्रहग्रहतेंगोपीनिक
सीजब ॥ रंगगलिनमेंभीरभईतब ॥ ५ ॥ स्वर्णथारहेंहाथ
नमेंलसि ॥ कमलनचढिआएमानोससि ॥ ६ ॥ उमग्यौप्रेमन
दीछविपावें ॥ नंदसदनसागरकोंधावें ॥ ७ ॥ कंचनकलसज
गमगेनगाके ॥ भागेसकलअमंगलजगाके ॥ ८ ॥ डोलतग्वा
लमनोंरंगजीते ॥ भयेसबनकेमनकेचीते ॥ ९ ॥ अतिआनंद
नंदरसभीने ॥ पर्वतसातरतनकेदीने ॥ १० ॥ कामधेनुतेनेंक
नहीने ॥ द्वैलक्षधेनुद्विजनकोंदीने ॥ ११ ॥ नंदद्वपजेजाचन
आये ॥ बहुरोफिरिजाचककहाए ॥ १२ ॥ घरकेठाकुरकेंसु
तजायौ ॥ सूरदासतबसबसुखपायौ ॥ १३ ॥ रागबिलावल
आजुनंदमहरिकेंघरवधाई ॥ प्रातसमेंमोहनमुखनिर
खतकोटिचंदछविछाई ॥ १ ॥ मिलिब्रजनागरिमंगलगा
वतिनंदभवनमेंआई ॥ देतअसीसजियोजसोदासुत
कोटिकवर्षकन्हाई ॥ २ ॥ अतिआनंदवढ्यौगोकुलमेंउप
माकहियनजाई ॥ सूरदासधनिनंदकीघरनीदेषतनेंन
सिराई ॥ ३ ॥ रागकांनरो ॥ नंदरायकेंनवनिधिआई ॥ माथें
मुकटश्रवणमनिकुंडलपीनवसनअरुचारिभुजाई ॥ १ ॥
बाजतवेंनुमृदंगचतुरागतघसेअरगजाअंगचढाई ॥
अछतदूबालियेंरिषिठाढेवारनिवंदनवारवधाई ॥ २ ॥
दधिलीपातिअरुचंदनछिरकतिरपाटिपरतयौंलेतउठा
ई ॥ सूरदाससबमिलतपरस्परदांनदेतनहिंनंदअघा
ई ॥ ३ ॥ रागगौरी ॥ गोपीगावेंमंगलचारवधावौब्रजराज
कें ॥ अबभएअमरसबकाजवधावौब्रजराजकें ॥ १ ॥ रां

Brihanmandiradhishwar

वधाई नीजायोमोहनपूतवधावोंव्रजराजकें ॥ बहुतनकरिसिंगारसुं
दरऔरघोषकुमार ॥ सजनप्रीतमनामलेलेंदेहिपरस्पर
गारि ॥ २ ॥ आनंदअतिसबसेंवधाौंघरघरनितेंतठावेंठांव
नंदद्वारेंभेटलेलेंउमह्यौंगोकुलगांव ॥ ३ ॥ बोंकितंदनला
पिकेंआरतीधरींसंजोइ ॥ कहतघोषकुमारिऐसोंआनं
दजोनितहोइ ॥ ४ ॥ सखियाननुसामादेहिद्वारेंसानसीकवना
इ नवकिसोरीमुदितह्वेहेंगइहतंजसोदाजूकेपाइ ॥ ५ ॥ क
रिकरिअलंगनगोपिकापहरेंआभूषणचीर ॥ गाइवछ
सवारिल्याएभईग्वारनिभीर ॥ ६ ॥ मुदितमंगलसहितली
लाकरेंगोपीग्वाल ॥ हरदअक्षतदूवदधिलेंतिलककरें
व्रजबाल ॥ ७ ॥ एकएकनगिनतकोंहूंइकखिलावतगाइ
एकहेरीदेहिगावेंएकवैठेधाइ ॥ ८ ॥ एकवृद्धकिसोरबा
लकएकजोबनजोग ॥ कृष्णजन्मसुप्रेमसागरपरतस
वव्रजलोग ॥ ९ ॥ प्रभुमुकुंदकेहोतसवनहोहिसकल
विलास ॥ देखिव्रजकीसंपदाकोंफूलिसूरजदास ॥ १० ॥ अ
थढाढीवर्णनं ॥ रागआसावरी ॥ नंदजूमेरेमनआनंदभ
योंहोंगोवर्द्धनतेंआयों ॥ तुमरेंपुत्रभयोहोंसुनिकेंअतिआ
तुरउठिधायों ॥ १ ॥ वंदीजनअरुभिक्षुकसुनिसुनिदेसदेस
तेंआये ॥ एकपरवैठेंहीआसालागीवोहेतरिननकेछाए
२ ॥ तुमदीनेकंचनमनिमुक्तानानावसनअनूप ॥ मोहिमि
लेमारगमानोंजातककहूंकेभूप ॥ ३ ॥ तुमहोंपरमउदारनंद
जूजोमांग्योसोदीनों ॥ ऐसोंऔरकोनत्रिभुवनमेंतुमस
रसाकोंकीनों ॥ ४ ॥ जछदेहूतोंपरयोरहूमेंविनुदेखेंनहि
जेहों ॥ नंदरायसुनिविनतीमेरीतबहींविदाभलेंह्वेंहों ॥ ५
दीजेंमोहिकृपाकरिसोईजोहोंआयोंमागन ॥ जसुमति
सुतअपनेपाइनिचलिखेलनआवेंआंगन ॥ ६ ॥ जबतु
ममदनमोहनकहिटेरोंयहसुनिकेंघरजाऊं ॥ होंतोंते
रेघरकोंढाढीसूरदासमेरोंनाऊं ॥ ७ ॥ रागजैतश्री ॥ मेंतो
तेरेघरकोंढाढी ॥ मोसरकरेंकोआन ॥ सोईलेंहोंजोईमन
भावेंमंदमहरिकीआन ॥ १ ॥ धनिनंदधनिधन्यजसोदा
धनिधनिजायोपूत ॥ धन्यभूमिव्रजवासीधनिधनिआनं
दकरतअकूत ॥ २ ॥ घरघरहोतआनंदवधाईतहांतहांमा

Brihanmandiradhishwar

गधमूत मनिमानिकपाटंवरअंवरलेतनवनताविभूत ॥ ३
हयगयरवोलिभंडारदयेसवफेरिभिरेताभांति ॥ लेभानदेतफे
रिपुनिदेखनसंपतिघरनअमाति ॥ ४ ॥ तेमोहिमिलेजातघ
रअपनेमेपूछीतववात ॥ हसिहसिदेरिरिमिलेअंकनभरिद
मतुमएकेजात ॥ ५ ॥ संपतिदेहूलेंहुनहीएकोंअन्नवस्त्रकिहि
काज ॥ जामेंतुमसोंमांगनआयोंसोलेंहोंनदराइ ॥ ६ ॥ अपनेसु
तकोंवदननिरखोवहुवडेमहरिसिरताज ॥ तुमसाहिवमेंढाढी
तुम्हरोंप्रभुमेरोंव्रजराज ॥ ७ ॥ चंद्रवदनदरसनसंपतिदेंसो
मेंलेघरजांउं ॥ जोसंपतिसनकादिकदुर्लभसोसवतुम्हरोंगां
ऊं ॥ ८ ॥ जाकोंनेतनेतश्रुतिगावततेईकमलपरधाउं ॥ हेंतो
तेरोंजनमजनमकोंढाढीसूरदासकहाउं ॥ ९ ॥ रागधनाश्री ॥
ढाढीदानमांनकेभाई ॥ नंदउदारभयेपहराएवतवहुतभली
वनिआई ॥ १ ॥ जवजवजनमधरोंढाढीकोंजनमकरमगुनगा
ऊं ॥ अर्थधर्मकामनामुक्तफलचारिपदारथपांऊं ॥ २ ॥ लेंढा
ढिनिकंचनमनिमुक्तानानावसनअनूप ॥ हीरारतनपाटंवर
हमकोंदीनेव्रजकेभूप ॥ ३ ॥ अवतोंमेंभयेपारायणदर
सनिरषिनिधिपांऊं ॥ जहांनहांसिंदननमालाविराजतघरघर
वजनवधाई ॥ ४ ॥ जिहिजाचकमोईनिहिपायोंतुम्हरीभईवडा
ई ॥ भक्तिकरोंपालनेंफुलांऊंसूरदासवलिजाई ॥ ५ ॥ रागध
नाश्री ॥ नंदजूदरसगायोंसुखदीयोंसवनकोंदेवपितरभ
लोमान्यों ॥ तुमरेपुत्रप्रानसवहिनकोंभवनचतुर्दसजान्यों
॥ १ ॥ होंतोंतिहारेघरकोंढाढीनाऊंसुनेंसुचिपांऊं ॥ गिरिगोव
र्द्धनवासहमारोंगिरितजिअनततनजाऊं ॥ २ ॥ ढाढिनमेरीना
चेंगावेंहोंहीढाढवजाउं ॥ हमरोंचीत्योंभयोंतुमारेंजोमागों
सोपाऊं ॥ ३ ॥ अवतुममोकोंकरोअजाचीजोकवहूंकरन
पसारों ॥ द्वारेपरयोरहूंदेहुएकमंदिरस्यांमसरूपनिहारों ॥
४ ॥ हसिहसिढाढिनिढाढीसोंवोलीअवतुमवरनिवधाई
ऐसेंदियोंनदेइसूरकोंऊजसुमतिहोंपहराई ॥ ५ ॥ इतिश्रीभा
गवतेदसमस्कंधेसूरदासजीकृतेपंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ रागप
रज ॥ ढाढीप्रेममगनह्वेनाचें ॥ ढाढिनिसंगव्रजनंदघरआति
अद्भुतसुखसाचे ॥ १ ॥ पुत्रजन्ममेंसुन्योंतिहारेसवहिनकोंसु
खदानी ॥ वहुतदिननकीहुतीलालसासुफलआजुमेंजानी ॥ २

Brihanmandiradhishwar

बधाई धुनिधनिघरीमहूरतपलछिनुधन्यदिवसनिसमांनी ॥ अव
हों आयोटेंनआसिकाजसुमतिकूं खिसिरानी ॥ ३ ॥ मछकछवा
राहनरसिंहरूपरसरांमवपुधार्‍यो ॥ श्रीरघुवीरधीरकैंप्रगटेवि
बुधसकलनिस्तार्‍यो ॥ ४ ॥ अवश्रीकृष्णप्रगटभयेतुमरेसवज
गकोंउजियारों ॥ लीलाचरित्रविनोदवढावतयहजससर
सतुम्हारों ॥ ५ ॥ अवतुमसुनोंपढोविरदावलिवल्लभकुलज
सगाऊं ॥ परमउदारदयानिधिदातातिनकोंसुजससुनाऊं ॥ ६
गोपसभामेंनरनारिनकेआनंदप्रेमवढाऊं ॥ तिनकीकृपा
अनुग्रहमोपेंवारवारसिरनाऊं ॥ ७ ॥ महावाहुभयेवंजनाभ
जूतिनकोजससुनिलीजें ॥ भववलिचित्रसेनअजमीदह
परनालीमनदीजें ॥ ८ ॥ तिनकेपुत्रनवहुसुखदाईकरदिये
ममयभीजें ॥ महानंदसुरसुरानंदसुनंदनंदसुखकीजें ॥ ९
धरानंदध्रुवनंदऔरउपनंदपरमसुखकारी ॥ अभिनंद
श्रीनंदरायजूवहुप्रेसीमहतारी ॥ १० ॥ कूखिजसुमतिकृष्ण
प्रगटभयेतिनकीहोंवलिहारी ॥ असुरासिंघार्‍योदशुनिमा
र्‍योंभक्तनकेसुखकारी ॥ ११ ॥ जसोमतिसुतश्रीगोकुल
ज्यायोंपरमसलोंनीरांनी ॥ पांचगोपकीवेदनभाखीसोमेंप्र
गटवखांनी ॥ १२ ॥ अवकुलयहपरिवारतिहारोंभूरिभागर
जधांनी ॥ यहअसीसढाढीढाढिनकीवेदनहूमेंगानी ॥ १३
सातसमाखवेंढाढीतिहारोंऔरनकोंऊजाचूं ॥ श्रीसंपति
तुम्हारेप्रतापतेगोपनकेगुणवाचूं ॥ १४ ॥ जवलोंवहुइछाह
तुम्हारेढांढिनसंगलेंनाचूं ॥ अववाहतगोपालवालकी
चरणकमलरजराचूं ॥ १५ ॥ रतनहेमजोटेउमुरदियापाटं
वरपहराए ॥ मणितुरंगभूषणगजमहिषीगायनखरिक
वनाए ॥ १६ ॥ धनघनलोंदीनोंव्रजजनजूभयेसवनमन
भाए ॥ सूरदासव्रजराजरीझिदासिअपनीवाहवसाए ॥ १७
इतिश्रीभागवतेदशमस्कंधेषष्टमोध्यायः ॥ ॥ अवश्रीकृष्ण
जीकोंछटीकोंव्योहारवर्णनं ॥ रागसारंग ॥ गुहगणेससुरवि
नेहोदेवीसारदनोहि ॥ गाऊंहरिजूकोंसोहिलामनअनंदे
मोहि ॥ १ ॥ वधावोंहरिकोमनभयोरानीजायोंजसोमतिपू
त ॥ घरआंगनवांहरसवनदेमागेमागधसूत ॥ २ ॥ आछमां
सवंदनपियोंनोंवेपियोंकपूर ॥ दसोंमासमोंहनभयोंमेरे

Brihanmandiradhishwar

अंगनावाजेंतूर ॥३॥ दूरावीबारपरोंसिनहूर खेनगरकेलोग
दूरखीसावीस हूलरियानंदभयोसुभयोग ॥४॥ बाजनबाजे
गहगहे मिलिबाजेमंदिरभीर ॥ मालनिबांध्योंतोरनामेरे
अंगनाहोवेंअपछेकी रा ॥५॥ प्रनगढसोनोंढोलनागढिलो
बहुचतुरसुनार ॥ बीचबीचहीरालगोनंदलालगरेकोहार
६ ॥ जसुमतिभागिसुहागिनि जिनिजायोऐसोपूत ॥ करहु
ललनकीआरती अरुदधिकांदौमूत ॥७॥ नायनबोलेंनंद
रंगीले आठेमहावरवेग ॥ लाखटकेअरुझूमकसारीदेहु
आहुकोनेग ॥८॥ अगरचंदनकोपालनोंगढिगढिढारसुढा
र ॥ लेंआयोगढिढोलनाविश्वकर्मासोसुनार ॥९॥ धन्यसुरि
नधनिसोघरी धन्यमहरिकेभाग ॥ धन्यधन्यमथुरापुरी
धन्यज्योतिषजाग ॥१०॥ धनिधनिमातादेवकी धनिवसुदे
वसुजांन ॥ धनिधनिभादोंअष्टमी धनिजन्मलियोंजदुकां
न ॥११॥ काठेकोरेकापराकाठेंघीकेभोंन ॥ जातिपांतिप
हिरापसव समदत छतिसोपोन ॥१२॥ कोजरएरीआनिहें
मिलिकरिहैंछटीकोंचार ॥ अपनीमिलिकेंपूतरी सबस
खियनकियोंव्योहार ॥१३॥ सीसमुकटसोभावनी अंगअं
गवनमाल ॥ सूरदासप्रभुगोकुलजन्मेमोहनमदनगोपा
ल ॥१४॥ रागकान्हरो ॥ पालनेंअतिपरमसुंदरगढिल्याउरेबढै
या ॥ सीतलचंदनकटाउधरिषरादरंगलाऊं विविधिचौ
कीबनाऊं ५ [illegible]रसमलगाऊं हीरामोतीलालमढैया ॥१॥
विश्वकर्मासोसुतारस्योंकांमकेसुनार ॥ मनिमनलागेअपा
पारनंदमहरिसुतकोंम्योंअवढैयां ॥२॥ आनिधस्योंनंदद्वारअ
तिहीसुंदरसुढार ॥ ब्रजबधूदेखेंबारंबारसोभानहिंवार ॥३॥
पारधुनिधुनिधनिहैंगढयोपालनेंअन्यों ॥ अतिमनमान्यों
नीकोंदिनहिंधराइ ॥४॥ सखियनमंगलगवाइरंगमहलमें
पौढयावारौंकन्हैया ॥ सूरदासप्रभुकीमैयाजसुमतिनंद
रानीजोईमागनतांहिदेतबधैया ॥५॥ रागआसावरी ॥ क
नकरतनमनिपालनोंअतिगढ्योकामसुनहार ॥ विविधि
खिलौनाभांतिकेगजमुक्ताचहूंधार ॥१॥ जननीउवटिन्ह
वाइकेंअतिक्रमसोंलीनेगोद ॥ पौढाये पालनेंसिसुनिर
खिजननीमनमोद ॥२॥ अतिकोमलदिनसातकेअधरच

Brihanmandirdhishwar

।बधाई। रनकरिलाल।सूरस्यामछबिअरुनतानिरखिहरखिब्रजबा
ल॥३॥रागधनाश्री॥जसोदाहरिपालनेंझुलावें।हलरावेंदु
लरावेंमलहावें॥१॥जोईजोईभावेंसोईसोईकछुगावेंमेरे
लालकोंआउनीदरीकाहेंनआनिसुवावें॥२॥तोकुंकान्ह
बुलावेंतूकाहेंनवेगिसीआवें।कबहूंकपलकहरिमूंदि
लेतहेंकबहूंअधरफरकावें॥३॥सोवतजांनिमौंनव्हेरहि
करिकरिसेंनबतावें।इहिअंतरअकुलाइउठेजसुमति
मधुरेंगावें॥४॥जोसुखसूरसकलमुनिदुर्लभसोनिनज
सुमतिपावें॥५॥रागगोंडमलार॥हालरोंदुलरावेमाता॥ब
लिबलिजाउघोषसुखदाता॥१॥जसोमतिअपनोंपुन्यविचा
रें।बारबारसिसुबदननिहारें॥२॥अंगफरकाइअल्पमुसिका
ने।याछबिपरउपमाकोजांनें॥३॥हुलरावतिगावतिकहिप्या
रे।बालादसाकेकौतुकन्यारे॥४॥महरिनिरखिसुखहीहुल
सांनी।सूरदासप्रभुसारंगपांनी॥५॥रागविलावल॥करप
दगहिअंगूठामुखमेलत।पौढेपालनेंमोहनहसिहसि
अपनेंरुचिसोंखेलत॥१॥मुनिसभीतभएगिरिकंपेबटखा
ओंसायरजलकेझेलत।सिवचलेमनुप्रलयजांनिकेंदि
गादिगपतिनिजसेकेलत॥२॥सिवसकुचेबिधिबेरउचारत
शेषसहसफनसीससठेलत।सबविधिसुखपावतब्रजबा
सीसूरसकलसंकटपगपेलत॥३॥रागविलावल॥चरण
गहेअंगूठामुखमेलत।नंदघरनिगावतिहुलरावतिपल
नापरकिलकतहरिखेलत॥१॥जोचरणरबिंदश्रीभूषण
उरतेंनेंकनटारति।देखोधोंकहांरसचरणनिमेंमुखमेल
तिकरिआरति॥२॥जाचरणारबिंदकेरसकोंसुरनरकरत
बिचार।सोरसहेंमोहूकोंदुर्लभतातेलेतसवार॥३॥उछलो
सिंधुधराधरकांप्योकमठपीठअकुलाइ।शेषसहसफनबो
लनलागेहरिपीवतजबपाइ॥४॥बढ्योबृक्षबटसुरअकु
लान्योंगगनभयोउतपात।महाप्रलयकेमेघउठेकरिजहां
तहांअघात॥५॥करुनाकरिछांडीपगदीनोंजानिसुरनिम
नसंसा।हूहाधुंधूधारटतसूरप्रभुसुरनकरतप्रसंसा॥६॥रा
गविलावल॥जसोदामदनगोपालबुलावें।देखिसेंनगति
त्रिभुवनकांपतईसविरंचिभ्रमावें॥१॥अरुनअसितसितआ

Brihanmandiradhishwar

लसलोचनउभयपलकमिलिआवें॥ज्योंरविसमिगतिहै
तमहूंनासिकआलिंगनऊरगानयावें॥२॥चौंकिचौंकिसिसुरि
साप्रगटकरिछबिमनूंमेंनहिंआवें॥जनुनिसपतिकरि
कर्मअमृतरससुरनिभजउगरभरावें॥३॥नाभिसरोजप्रगट
पदमासनउतरिउतरिनालपछितावें॥स्वासाउदरउसास
नियोजनुदुग्धसिंधुछबिपावें॥४॥करसिरतरकरिस्याम
मनोहरअलिकअधिकसोभापावें॥सूरदाससमानोंपन्न
गभुवपतिप्रभुऊपरफनकरिछावें॥५॥पूतनावध॥राग
बिहागरो॥कंसरायजियसोचपरी॥कहांकरोंकाकोंव्रज
पठवोंविधनाकहांकरी॥१॥वारंवारविचारतमनमननीर
भूषविसरी॥सूरबुलाइपूतनासोंकह्यौकरिनविलंवघरी
॥२॥रागधनाश्री॥राजकोंआजकाजकरिआऊं॥वेगिसिंघा
रौंसकलघोषसिसुज्योंसुखआयुसपाऊं॥१॥मोहनमूरति
वपुधरिकरनेपछिगतिमतिहरोंनछाऊं॥अमृतभगासजिकैवि
धिमूरतिनेंबनिमाऊंसमाऊं॥२॥घसिकेगरलचढाइउरोज
निलैरूचिसोंपयप्याऊं॥सूरसोचमतिअवहोनौंपूतनाकह
ऊं॥३॥रागआसावरी॥प्रथमकंससपूतनापठाई॥नंदघरनि
सुतलिएजहांबैठीतहांचलिआई॥१॥अतिमोहनीरूपध
रिलीनोंदेखतसवहुनकोमनभाई॥जसुमतिदेखिरहीवा
कोंसुखकाकीवधूकोंनधौंआई॥२॥नंदसुवनतवहीप
हचांनीअसुरसदनअसुरनकीजाई॥आपुनवज्रसमान
भएमाताढांखितभईभरमाई॥३॥अहोमहरिपालागनमे
रोमेंतुमसौंसुनतदेखनआई॥यहकहिगोदलीएअपनीत
वत्रिभुवनपतिमनमेंमुसिकाई॥४॥मुखचूम्योंमाहिकंठल
गायोंविषलपट्योंअस्तनमुखनाई॥पयसंगप्रानअचप
हरिलीनोंजोजनडेढगिरीमुरझाई॥५॥त्राहित्राहिकरित्र
जजनधाएअतिबालककौंवचेकन्हाई॥अतिआनंदस
हितसुतपायोंहिरदेमांहिरहेलपटाई॥६॥करवरवउरोट
रीमेरेकीघरघरआनंदकरतवधाई॥सूरस्यामपूतनाप
छारीयहसुनिजियडरप्योंनपराई॥७॥राग[illegible]॥कपट
करिव्रजहिपूतनाआई॥रूपसरूपविषस्तनलायेंराजाकें
सयकाई॥१॥मुखचूंवतिअरूनेंनननिहारतिराखतिकंठलगा

Brihanmandiradhishwar

वधाई ६ भागि वडे तुम्हारे नंदरानी जिन्हि के कुवर कन्हाई ॥ २ ॥ कारगहि
हीरपिञ्चावत अपनें जांनत के सवराई ॥ वाहर हूं के असुर
कारै अलवल लेहु छुडाई ॥ ३ ॥ गई सुरूप्प गिरीधरनी परम
नो भवें गमरखाई ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी लीला भक्तन गाय सु
नाई ॥ ४ ॥ राग सोरठ ॥ देषौं यह विपरीति भई ॥ अद्भुत रूप ना
रि एक आई कपट हेत कीयें सहीं दई ॥ १ ॥ कांन्ह लये जसुमति
कों राते रुचि करि कें चलगाए ॥ तव उन देह धरी जोजन लौं
स्यांम रहे लपटाए ॥ २ ॥ वडे भागि हैं नंद महरि के वडभागिन
नंदरानी ॥ सूरस्याम उर रूपर ऊवरे घर घर यह सव जांनी ॥ ३ ॥
राग जैतश्री ॥ कन्हैया हालरो हुलरोइ ॥ हों वारी तेरे इंदवदन
पर अति छवि लालन रोइ ॥ १ ॥ कमल नैंन कों कपट कीये मा
ई इहि व्रज आवें जाइ ॥ पहलेई विधि वेगि वकी ज्यों नृति हि
करत वगोइ ॥ २ ॥ सुनों देवता वडे जगपावन तू पति यां गो
कुल कों कोई ॥ तुहि पूजों मो कों यह वालक व रिदें नेक वडो
इ ॥ ३ ॥ यह सुख सूरदास के नेंनन दिन दिन दूनो होइ ॥ सूतिया
के सखि ज्यों वारें सिसु जननी बलि वेसोइ ॥ ४ ॥ श्रीधर अंगभंग
राग विलावल ॥ श्रीधर व्राम्हण कर्म कसाई कह्यौ कंस सों व
चन सुनाई ॥ १ ॥ प्रभु में तेरो आग्याकारी ॥ नंद सुवन कों आ
ऊ मारी ॥ २ ॥ कंस कह्यो तुम ते यह होई ॥ तुरत जाय करि विलम
न कोई ॥ ३ ॥ श्रीधर नंद भवन चलि आयो ॥ जसोदा उठि कपि
माथो नायो ॥ ४ ॥ करो रसोई में वलि जाउं ॥ तुमरे हूं न जमुना
जल लाउं ॥ ५ ॥ यह कहि जसोदा जमुना गाई ॥ श्रीधर कही भ
ली यह भई ॥ ६ ॥ उन अपने मन मारग ठांन्यो ॥ हरि जू ताकों न
व ही जांन्यो ॥ ७ ॥ व्राम्हण मारें नहीं भलाई ॥ अंग याकों भेद दे उ
न साई ॥ ८ ॥ जवहीं व्राम्हण ढिग आयो ॥ हाथ पकरि कें
ताहि गिरायो ॥ ९ ॥ सुरभि चापि लई जीभ मरोरी ॥ दधि ढरकायों
भाजन फोरी ॥ १० ॥ राख्यो कछु तिहि मुख लपटायो ॥ आप रहे
पलना पर आई ॥ ११ ॥ रोवन लागे कृस्न विनानी ॥ जसोमा
ति आय गई लें पांनी ॥ १२ ॥ रोवत देखि कह्यौ अकुलाई ॥ क
हां कियो तें विप्र अन्याई ॥ १३ ॥ व्राम्हण के मुख वात न आवें
जीभ छोड तो कहि समझावें ॥ १४ ॥ व्राम्हण कों घर वाहिर की
नों ॥ कृस्न उठाय गोद करि लीनों ॥ १५ ॥ व्रजवासी सव देखन

Brihanmandiradhishwar

आवे सूरदास हरि के गुन गाए ॥ ६ ॥ रागविलावल ॥ पलनां
पोढे किलकत ह॰ म ॥ जसोदा गृह काज विलमांनी हरि
आवेस भूलि गई कांम ॥ १ ॥ हरि सिसु रूप रूप सकट है माह्यो
उलटे कर दीनों ताहि डारि ॥ अनुचर कंस असुर एक ताने नभ
चूर भयो तोहि सकट मझारि ॥ २ ॥ हाथ हाथ करि जसोमति धे
री लेइ उछंग हियमांझ लगाई ॥ अस्तन पांन किये मनमोहन
तब जिय में कछु धीरज पाई ॥ ३ ॥ ब्रजवासीन देखि कैं सब ही
धाय आय यह भाखी ॥ बडी कुसल बीती ये हरि ऐसो मरत सुन
हि नारायन राखी ॥ ४ ॥ इंन हरियों तबनंद जसोदा मन आनंद तिह
र सब ढायो ॥ द्विजलरि कावेल नहें तिन सों पूछि कौंन भय रा
यो ॥ ५ ॥ भूखलगी तब सुत कों भारो हरदन कर नंत बलाय पो
निज्ज चरण अंगूठ विंइ ऊंचों करि कों धहियों कछु पायो ॥ ६ ॥ छि
नमें सकट गिराय दियो इन हमा निजनें नानि देखी ॥ सुनत
बात अचरज सब पायो चक्रत नंद विसेषी ॥ ७ ॥ कोउ मांनी
कोउ नें कुनमांनी बालबुद्धि कहां जाने ॥ सूरदास प्रभु की
यह लीला माया देख्य हरि आवें ॥ ८ ॥ अथ कागासुरवध ॥
रागविलावल ॥ सुनो कंस अधीर जब माह्यो ॥ सोच भयों ना
के जिय भारो ॥ १ ॥ कागासुर को निकट बुलायो ॥ तासों कहि
सब भेद सुनायो ॥ २ ॥ मम आयुस तुम माथें धरो ॥ छलबल
करि मम काज करो ॥ ३ ॥ पहुसु निके तिन माथो नायो ॥
सूरतुरत ब्रज कों उठि धायो ॥ ४ ॥ अथ सारंग ॥ काम रूप ए
क दनुज धह्यो ॥ आयुस लें करि धरि माथे पर हरख बंत
उर गर्भ भह्यो ॥ १ ॥ कितीक वात प्रभु तुम आयुस नें यह जा
नों मो जात कह्यों ॥ इतनी कहि गोकुल उठि आयो आइ नं
द घर छाज अह्यो ॥ २ ॥ इह पलना पर पोटे हरि देखे तुरत आ
इ नितहि काज अह्यो ॥ कंठ चापि वहू पास फिरायो गहि पट
कों न पपास पह्यो ॥ ३ ॥ तुरत कंस पूछन तिहि लाग्यो क्यों
आयो नहि काज सह्यो ॥ बीते जाम बोलत क आयो सुन हु
कंस तेरो अयु गह्यों ॥ ४ ॥ धरें अवतार महाबल कोउ एक हि
कर मेरो गर्भ ह ह्यो ॥ सूरदास प्रभु कंस निकंदन भक्त हेत अव
तार धह्यो ॥ ५ ॥ रागविलावल ॥ मथुरा पति जिय अति डिरानों
सभा मांझ असुरन के आगें बार बार सिर धुनि पछितानों ॥ १

Brihanmandiradhishwar

॥ वधाई ॥ व्रजभीतरउपज्योंरिपुमेरोमेंजानीयहवात ॥ दिनहीदिनवढ़त
उतजाततहैंमोकोंकरिहैंघात ॥ १ ॥ दनुजसुतापूतनापठाईछिन
कमांझसंघार ॥ खेंचिमरोरिकागासुरदीनोंमेंरेंढिगफटकारि
॥ ३ ॥ अवहीतेयहवालकरतहेंदिनदिनहोतप्रकास ॥ सेनापति
नसुनायवातयहनृपमनभयोउदास ॥ ४ ॥ ऐसोकोंनमारि
हैंताकोंमोहिकहेंसोआय ॥ वाकोंमारिआपुनपोंरावेंसुर
व्रजहिसोंजाय ॥ ५ ॥ सकटासुरवध ॥ रागसूहो ॥ नृपतिवच
नयहसवनसुनायों ॥ मुहाचुहीसेंनासवकीनीसकटासुरसु
निगर्भवढायों ॥ १ ॥ देउंकाजजोंभियोंतवठाठेंप्रभुआयुसमें
पांऊ ॥ इहांतेजायतुरतहीमारोंकहेतोंजीवनलाऊं ॥ २ ॥ यह
सुनिनृपतिहरखमनकीनोंतुरतहिवीरादीनों ॥ वारवारसुर
कहिताकोंआपप्रसंसाकीनों ॥ ३ ॥ रागमलार ॥ पालनेंवलेपौ
नृपआंनकीनों ॥ कहोंसिरनायकेंगर्भहिठाडेंसकटकों
रूपधारिअसुरलीनों ॥ १ ॥ सुनतघहरातजलोकचहकतभये
कहांआगाधोकरतआवें ॥ देखिस्यामाचावहूंपासदसहूंदि
साइरेनरनारितनसुधिभुलावें ॥ २ ॥ आपगयोतहांजहांप्र
भुरहेपालनेंकरगरेहचरणअंगूठाचचोरें ॥ किलकिकिलक
तहसतवालसोभालसतजानियहकपटरिपुआयोंभोरे
॥ ३ ॥ नेंकपटक्योंवाकोपांवअतिआघातगिरयौभहरातसक
टासंघारयों ॥ सुरप्रभुनंदलालदनुजमारयोंख्यालमेंटिजें
जालव्रजजनउवारयो ॥ ४ ॥ त्रिणावर्तवध ॥ रागनट ॥ जसुमति
मनअभिलाखकरें ॥ कवमेरोलालघुटरूवनरेंगेंकवधर
नीपगद्वेकधरें ॥ १ ॥ कवव्वेदांतदूधकेदेखोंकवतोतरेमुख
ववनझरें ॥ कवमेरोंअंचरागहिहेंमोहनजोईसोईसोईकहि
मोसोंझगरें ॥ २ ॥ कवनंदहिवावाकहिवोलेंकवजननीक
हिमोहिररें ॥ कवधोंतनककतनककछुखेहेंअपनेकरतेंमु
खहिभरें ॥ ३ ॥ कवेंसुवातकहेंगेमोसोंवाछविनेंदुषदूरिहरें
स्यांमअकेलेआंगनछांडेआपगईकछुकाजघरें ॥ ४ ॥ इ
हिअंतरअधवाउठोइकगरजतगगनसहितघहरें ॥ सूरदा
सव्रजलोगसुनतधुनिजहांतहांसुअंतहिडरें ॥ ५ ॥ राग सू
हो ॥ अतिविपरीतितृणावर्तआयों ॥ वातचक्रमिसव्रजऊ
परपरनंदप[illegible]रकेभीतरधायों ॥ १ ॥ पोंढेस्यांमनंदकेआंगन

Brihanmandiradhishwar

लेतउछौंग्रंकामचढायौ॥ अंचलसुधभयौसवगोकुलमेंजो
जहांरह्यौसोतहांहीछायौ॥२॥ जसोमतिधायआयजोदेखें
स्यामस्यामकहिटेरलगायौ॥ धावहुनंदसुवारकरौकित
तेरोसुतइहिअंचलउरायौ॥३॥ इहिअंतरआकासतेआवत
पर्वतसमकहिसवनवतायौ॥ मारयौअसुरसिलासोंपट
कौंआपचढेताउपरभायौ॥४॥ दौरेनंदजसोदारोहीनुर
तहिलैहिनकंठलगायौ॥ सूरदासयौंकहतिजसोदानाम्ना
नौंविधनाकामायौ॥५॥ रागविलावल॥ उवहौंस्यामममहरि
वडभागी॥ वहुतदूरितेंआंनिपर्यौधरदेख्यौंकहुवोटनलाधो
गी॥१॥ रोगजाउवलिजाउकन्हैयायौंकहिकंठलगाये॥ तु
महीहौंव्रजकेजीवनधनदेषतनैंनसिराए॥२॥ भलीनही
तेरीप्रकृतिजसोदाछांडिअकेलीजात॥ अहूकोंकामइन
हूंतेप्यारोंकोहूनहीडरात॥३॥ भलीभईअवकेहरिवांचेअज
हूंसुरतिसभारि॥ सूरदासप्रभुकिकहौंवारिगिमनमनमह
रिविचारि॥४॥ रागधनाश्री॥ हरिकिलकतजसुमतिकीक
नियां॥ निरखिनिरखिमुखकहतलालसोंमोनिधनीकोंध
नियां॥१॥ अतिकोमलतननचितैस्यामकोंवारवारपछितात
केसेंवच्योंजाउवलितेरीत्रनावर्तकेघात॥२॥ नाजांनौंधौं
कौंनपुन्यकरिकोकरिलैमोसहाय॥ वैसोंकामपूतनाकीनो
इनऐसीकरिआई॥ मातादुखितजांनिहरिविहंसेनान्ही
दतुलरिखाइ॥ सूरदासप्रभुमाताचितनेंदुखडार्यौविसरा
इ॥५॥ रागधनाश्री॥ सुतमुखदेषिजसोदाफूली॥ हरषितदे
खिदूधकीदंतुलीप्रेममगनतनकीसुधिभूली॥१॥ वाहरतें
जवनंदबुलायेदेखौंधौंसुंदरसुखदाई॥ तनकतनककसी
दूधकीदंतुलियानेंनसुफलकरोंआई॥२॥ आनंदसहि
तमहरितवआएमुखचितवतदोउनेंनअघाई॥ सूरस्या
मकिलकतमुखदेख्यौंमनोकमलपरवीजजमाई॥३॥ रा
गधनाश्री॥ हरिकिलकतजसुमतिकीकनियां॥ मुखमेंती
निलोकदिखायेचकृतभईनंदरानियां॥१॥ घरघरहाथदि
खावतडोलतवांधतिगरेंवधनियां॥ सूरदासस्वामीकीली
लानहिजानतमुहिजनियां॥२॥ इतिश्रीभागवतेमहापुरा
णेदसमस्कंधेसप्तमोध्यायः॥७॥ रागरामकली॥ वसुदेव

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ गरगमुनीस पठाए ॥ अति आनंद आय मुनि हरखित धन्य भा
ग्य ब्रज दरसन पाए ॥१॥ पूरन ब्रह्म बसत जे हि भीतर तिन कों
दरसन पाऊं ॥ देखत नंद पाय परि भाख्यो तुम गुन कैसे करि पा
ऊं ॥२॥ हम ग्रह हस्त माया में अटके करी कृपा निज जांनी ॥ च
रण धोय चरणोदिक लीनों करी विनय मृदु बांनी ॥३॥ मम
सुत नाम करन प्रभु कीजे सुनत नहिं गर्ग बखांनी ॥ है जदु
कुल कों प्रोहित मुनि हैं कंस दुष्ट रिस मांनी ॥४॥ कहि यन
एक रहस्य पाठ कानों तहां गर्ग लें आयो ॥ देखत मुनि चर
ण लगायो मुनि हृदै भरि आयो ॥५॥ पुत्र रोहिनी कों बल
भारी नाम एक बलदेव ॥ सुहृद रमावे नांम राम यह मनक
र्खे संकर्षण एव ॥६॥ धौरो लाल पीत स्याम हियें चारों जुग
के रंग ॥ स्याम बरण ते कृष्ण नाम इक नारायण सम अंग
॥७॥ कमू अगर वसुदेव भवन में वासुदेव हि जांनों ॥ याके
नाम रूप बहु बिधि हैं कहा लगि गाय बखांनो ॥८॥ सब ब्र
ज कों सुख दे हैं भारी सकल आपदा हारी ॥ सूरदास योहि भां
ति गरग कहि गये भवन हि सधारी ॥९॥ राग बिलावल ॥ म
हरि भवन रिषि राज गये ॥ चरण धोइ चरणोदिक लीनों
आसन करि है तव ॥१॥ धन्य आजु बड भागि हमारे रि
षि आए अति कृपा करी ॥ हम कहां धन्य धन्य नंद जसोम
ति धनि यह बानि जहां अवतार हरी ॥२॥ आदि अनादि रूप रेखा
नहिं इह नें प्रभु नाहिं और बियो ॥ देवकी उदर अवतार लें न
कह्यों दूध पीवन तुम मांगि लियो ॥३॥ बालक करि इहकों जि
न जांनों कंस बधाई करि हैं ॥ सूरदेह धरि असुर संघार न भव
कौ भार ये ई हरि हैं ॥४॥ राग आसावरी ॥ धन्य जसोदा भाग नि
हारो जिनि ऐसो सुत जायो ॥ जाके दरस परस सुख नव घन
गोकुल तिमर नसायो ॥१॥ विप्र सजन चारण वंदीजन सक
ल नंद घर आए ॥ नवतन सुभग हरद दूब दधि हरखित
सीस चढाए ॥२॥ गर्ग पुरोहित कहें सब लछन अविगति
हैं अविनासी ॥ सूरजदास सुनत प्रभु कों जस आनंदे ब्रजवा
सी ॥३॥ श्री कृष्ण कों अन्न प्राशना ॥ राग बिलावल ॥ कान्ह कु
वर कों करौ अन प्राशन कछुक दिन घटि खट मास गये
नंद महरि यह सुनि पुलकित जिय हरि अनुप्रासन जोग भ

Brihanmandiradhishwar

ए॥१॥ विप्रबुलायनामलेंपूछेरासिपूछिएकसुदिनधर्यौ
आछौंदिनसुनिमहरिजसोदासखिनबुलायसवमानकर्यौ
२॥जुवतीमहरिकेंमारिगावेंऔरमहरिवोंनाउलियौ॥व्र
जघरघरआनंदवढ्यौअतिप्रेमपुलकिनसमानहियें
३॥जाकौंनेतिनेतिश्रुतिगावतध्यावतमुनिसवध्याननधरें
सूरदासतिहिकौंव्रजवनितानाककरोरनिदुरसंकभरें॥४॥रा
ग॥सा॥रंग॥आजकान्हकरिहैंअन्नप्रासन॥मनिकंचनकेथार
भराएभांतिभांतिकेवांसन॥१॥नंदघरनिव्रजवधूवुलाई
जेसवअपनीपांति॥कोउजेवनारिकरतकोउघृतपकष
टरसके[illegible]भांति॥२॥वहुतप्रकारकीयेसवव्यंजनअने
कवरनमिष्टान॥अतिउज्जलकोमलसुचिसुंदरमहरिदेखि
मनमान॥३॥जसुमतिनंदहिवोलिकह्यौतवमहरिवुलाव
हुजाति॥आपगएनंदमहरिसवनकौंतवआएसवजाति
४॥आदरकरिवैठारिसवनकौंभीतरगयौनंदराइ॥जसु
मतिउवटिन्हवाइकान्हकौंपटभूषनपहराइ॥५॥तनभगु
लीसिरलालचौतनीकरचूराहूपाइ॥वारवारमुखनिर
खिजसोदाहसिहसिलेतवलाइ॥६॥धरीआनीसुतमुख
जुठावीनंदलेंवैठेगोद॥महरिवोलिवैठारिमंडलीआन
दकरतविनोद॥७॥कनककथारकरावीरधर्यौलेंतापरघृत
मधुनाइ॥नंदलिएहरिमुखजुठावतनारिउठीसवगाइ॥८
खटरसकेपरकारजहांलौंलेंलेंअधरछुवावत॥विश्वंभ
रजगदीशजगतगुरुपरसतमुखकरवावत॥९॥तनकतन
कजलअधरपोंछिकेंजसुमतिपेंपहुचाए॥हर्षवंतजुव
तीसवलेंलेंमुखचूवतिउरलाए॥१०॥महरिगोपसवहिलि
मिलिवैठेपनवारीपरसाइ॥भोजनकरतअधिकरुचिउ
पजतजोजिहिजिहिमनभाइ॥११॥इहविधिसुखविलसत
व्रजवासीधनिगोकुलनरनारि॥नंदनंदनकौयाछविऊ
परसूरदासवलिजाइ॥१२॥श्रीकृष्णकीवर्षगांठि॥रागवि
लावल॥आजुभोरतमचुरकेरोर॥गोकुलमेंआनंदहोत
हैंमंगलधुनिमहराननेटोर॥१॥फूलेफिरतनंदअतिसुख
भयोहरखिमगावतफूलनतवोल॥फूलीफिरतजसोदाघर
घरउवरिकान्हअन्हवायअमोल॥२॥तनककवरनदेउजन

Brihanmandiradhishwar

॥सू॰सा॰ नकतनककरचरणपोछतपटझोल॥ कांम्हगरेंसोभितकन
मालाअंगआभूषणअरुअगुरीनगोल॥३॥ सिरचौतनीदिठौंना
दीनोंअंगविराजिपहराइनिचोल॥ स्यांमकरतमातासोंफ
गरोअटपटातकलबलकरिबोल॥४॥ दोऊकपोलगहिकें
मुखचूंबततबरखतरिवसकोंकरतकलोल॥ सूरस्यांमब
जजनमनमोंहनबंषगाछिकीडोरीबोल॥५॥ श्रीकृस्नकोंक
र्णछेदन॥ रागधनाश्री॥ कुवरकांन्हकोंकरनछेदनोंहा
थसुहारी॥ गुरुकीभेलीविधिविहसतहरहसतहरिहरि
जसुमतिकीसीधुकधुकीउरकी॥ ॥ रोचनभरिभरिदेतसे
कसोंअवणनिकरअतिहीआतुरकी॥ कंचनकेद्वैदरसम
गाएकहुंकहुंछेदनआतुरकी॥२॥ लोचनदेखिजननीअ
कुलानीलियोंतुरतनतुलाकोंफुरकी॥ हसतनंदसुवतीं॥
सवविहसतझमकिचलीछविभीतरसुरकी॥३॥ सूरदास
नंदकरतबधाईअतिआनंदबालब्रजपुरकी॥४॥ राग
सारंग॥ जबहिभयोंकर्णछेदहरिकों सुखनितासबक
हतपरस्परब्रजवासीसमंदिरकों॥१॥ गोपीमगनभईसव
गावतहुलरावतसुतलैमहरिकों॥ जोसुखमुनिजनध्यां
ननपावतसोसबनंदनंदसुतघरकों॥२॥ मुनिमुक्ताहल
करतन्योछावरिसुरनहिंदेतबिलंबनधरकों॥ सूरनंदब्र
जनपहरावतउमगिचल्योसुखसिंधुलहरकों॥३॥ आगन
खेलनवर्णनं॥ रागकांन्हरों॥ खेलतव्रजआंगनगोविंद॥ दे
खिदेखिजननीसुखपावतिवदनमनोहरइंदु॥१॥ कटिकिं
किनीचंद्रिकामांनिकलटकनलटकतभाल॥ परमसुदेस
कंठकेहरिनखविचविचवज्रप्रवाल॥२॥ करपोहोंचीपा
इननूपरअतिराजतपटपीत॥ घुटुरुनचलतअछसंगावि
हरतमुखमंडितनवनीत॥३॥ सूरविचित्रस्यांमकेरसनाक
हतनआवें॥ बालदसाअवलोकिसकलमुनिजोगवरत
विसरावें॥४॥ रागविलावल॥ सोभितकरनवनीतलियें॥
घुटुरुनचलतरेणुतनमंडितमुखदधिलेपकियें॥१॥ चारु
कपोललोललोचनछविगोरोचनकोंतिलकदियें॥ लट
लटकनिमनमधुपमत्तगनमाधुरीमधुहिपियें॥२॥ कठु
लाकंठवज्रकेहरिनखराजतरुचिरहियें॥ सूरधन्यपलकों

Brihanmandiradhishwar

पलयहू सुख कासतकल्पाजियें ॥ ३ ॥ रागबिलावल ॥ बालबि
नोद आंगनमेंडोलनि ॥ मनिमयभूमि सुभगानंद आलयच
लिबालिगईतो नरी बोलनि ॥ १ ॥ लोटोंकरि परसत आसन
पाकछूलोयोंकछूलगयोंकपोलनि ॥ बारिजवदनतिल
कगोरोचनलटलटकनिजोंअलिगनडोलनि ॥ २ ॥ कठु
लाकंठकुटिलकेहरिनखवज्रप्रवाललियेंबहुमोलनि
यहसुखसूरकहालोंबरनोंधन्यजसोमतिजीवनिधनि
तोलनि ॥ ३ ॥ रागधनाश्री ॥ किलकतकांन्हघुटरुवनआव
त ॥ मनिमयकनककनंदकेआंगनमुखप्रतिबिंबपकरिब
धावत ॥ १ ॥ कबहूंनिरखिहरिआपछांहकोंकरसोंपकरि
नचावत ॥ किलकतहसतराजतद्वैदतुलीपुनिपुनिहरि
अवगावत ॥ २ ॥ कनकभूमिपरकरपगछांहींयहउपमा
एकराजत ॥ करिकरिप्रतिपदप्रतिमनुवसुधाकमलबैं
ठकीसाजत ॥ ३ ॥ बालदसामुखदेखिजसोदापुनिपुनिनं
दबुलावत ॥ अचरातरलेंढांकिसूरकेप्रभुकोंदूधपिंवा
वत ॥ ४ ॥ रागनट ॥ कहांलोंबरनोंसुंदरताई ॥ खेलतकुंवर
कनकमयआंगननेंननिरखिछबिसुखदाई ॥ १ ॥ कुलहलसत
सिरस्यांमसुंदरकेबहुबिधिनगनबनाई ॥ मांनोंमेघऊप
राजतहैंमघवाधनुषचढाई ॥ २ ॥ नीलअसितसितपीत
लालमनिलटकनिभालरचाई ॥ मानोंअसुरदेवगुरुस
निमिलिभूमिसुवनसमुदाई ॥ ३ ॥ अतिसुदेसकुटिलकच
राजतसुंदरमुखवगराई ॥ मानोंसुंदरकंजप्रफुल्लितअ
लिआवलिफिरिआई ॥ ४ ॥ दूधदंतदुतिकहिनजाइअद्
भुतउपमापाई ॥ किलकतहसतदूरतपरघटमनुससि
मेंबीजलताई ॥ ५ ॥ खंडितबचनदेतपूरनसुखअद्भुतयह
छबिपाई ॥ घुटुरुनचलतरेणुतनमंडितसूरदासबलि
जाई ॥ ६ ॥ रागसारंग ॥ हौंबलिजाउंछबीलेलालकी ॥ धूसर
धूरिघुटरुवनरेंगनिबोलनवचनरसालकी ॥ १ ॥ छूटकिर
हीचहूंदिसमंजुलुटरियांलटकनिलटकनिभालकी ॥ मो
तिनसोहितनासिकानायकीकंठकमलदलमालकी ॥
२ ॥ कछुइककहाथकछुमुखमाखननचितवनिनैनबिसाल
की ॥ सूरजप्रभुकेप्रेममगनभईढिगनतजतब्रजबाल

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.को॥४॥राग धनाश्री॥ लालनहौं यापरछबिऊपरवारी॥ बलिगुपाल
लागैदृष्टिनैंननिरोगबलाइतुम्हारी॥१॥ कुटिलअलकमोहन
मुखऊपरभ्रकुटीनिकटपियारी॥ मांनोंकमलदलसा
दलपंगतिउडतमधुपछबिभारी॥२॥ लोचनललितकपो
लनकाजरछबिउपजतअधिकारी॥ सुखमेंसुखअरुरु
चिउपजतहसतदेतकिलकारी॥३॥ अलपदसनअलब
लकलबोलनिबुधिनहींपरतबिचारी॥ बिगसतिज्योंति
अधरबिचिमांनोंबिधुमेंबीजउज्यारी॥४॥ सुंदरताकोपार
नपावतरूपदेखिमहतारी॥ सूरसिंधुकीबूंदभईमिलमा
तिमतिदृष्टिहमारी॥५॥राग धनाश्री॥ ललनाहौंवारीतेरेमु
खऊपर॥ प्यारेमेरीदृष्टिनलागोंमसिबिंदुकारेभ्रुवपर॥१॥
सरबसतोमैंनिनहींवारोंनान्हीदंतियनऊपर॥ अबकहौंमो
छाबरिकरिरीजैंसूरआपनेलालनखलपर॥२॥राग धनाश्री॥ अहोमेरेनान्हपियागोपालकैंगिबडेसेकाहिनहोहु
कहिमुखअमृतबचनहसिकेंधोंजननीकहौंगेमोहु॥१॥
यहलीलासारदनिजियामैंबांधिनाकबधोंकरैं॥ मोदेषत
कबधोंमेरोमोहनपगलैधरनिधरैं॥२॥ हलधरसहितफिरत
गृहआंगननिरषिनैनसुखपाउं॥ छिनुछिनुछुधितजां
निपयपकारणहसिहसिनिकटबुलाऊं॥३॥ जाकोंनिगमने
तिकहिगावैंशिवउपमानहिंपावैं॥ सूरदासजसोदासुत
केहितमनअभिलाखबढावैं॥४॥राग बिलावल॥ धनिज
सोदाबडभागिनिलीयेंगोदखिलावैं॥ तनकतनकभुजप
कराकेंठाढेहोहौनसिखावैं॥१॥ लरखरातगिरपरतहैंचलि
घुटुरुनआवैं॥ पुनिक्रमक्रमभुजटेकिकेंपगद्वैकचपला
वैं॥२॥ अपनेपायनखंभलौंमोहिदेखनधावैं॥ सूरदासज
सुमतियहबिधिसोंजुमनावैं॥३॥राग कांन्हरौ॥ हरिकोंबि
मलजसगावतगोपंगाना॥ गिरिगिरिपरतघुटरुवनरें
गतखेलतहैंदोउछगनमगनां॥१॥ मनिमयआंगननंद
रायकेबालगुपालकरतहैंरंगना॥ धूसरधूरिदुहूतनमं
डितमातजसोदालेतउछंगना॥२॥ बसुधात्रिपदकरतन
हिंआलसभयोंकठिनदेहरीउलंघना॥ सूरदासब्रजबधू
निरखतरुचिरहारहीयेंसोभितबंगना॥३॥राग कांन्हरौ॥

Brihanmandiradhishwar

विहरनाविविधिवालकसंग॥ दुगनिदुगमगपगनिडोलत
धूरिधूसरअंग॥ १॥ चलतमगपगवजतिपैंजनियांपुहुमिप
रकिलकात॥ मनोंमधुपमरालछोंनासुभगवैनसुहात॥ २
तनककटिपरकनककरधनछिनकछविछपिजात॥ मनों
कनककसोटियापरलीकसीलपटात॥ ३॥ दुतिरमक
तिसुभगश्रवणनिजलजनुगाडहन॥ मनोंवासवबल
हुपठयेजीवकविकछुकहन॥ ४॥ ललितलटछिरकां
निमुखपरदेतसोभादून॥ मनुमयंकसुयंकलीनोंसिंहका
केसून॥ ५॥ कवहूंद्वारेदौरिआवतकवहूंनंदनिकेत॥ सू
रप्रभूकरगहतिग्वारनिचाहतचुंवनलेत॥ ६॥ राग केदारो॥
चलतस्यांमघनराजतवाजतपैंजनीपायमनोहर॥ दुगमग
गातडोलतआंगनमेंनिरखिविनोदमगनमोहेंसुर॥ १॥ उ
दितमुदितअतिजननिजसोदापाछेंफिरतमरहेंअगुरीक
र॥ मनोंधेनुतणछांडिवछहितप्रेमपुलकअतिस्रवततप
योधर॥ २॥ कुंडललोलकपोलविराजतलटकनललित
लटूरीभूपर॥ सूरदासप्रभुसुंदरअवलोकनिअतिसोभासोभि
तधरनीधर॥ ३॥ राग देवगंधार॥ सिखवतचलनजसो
दामैया॥ अरवराइकरिपानिगहावतडगमगातधरनीधरपै
या॥ १॥ कवहूंकसुंदरमुखविचिनवतमनअतिउछाहहूसिले
तवलैया॥ कवहूंकुलदेवतामनावतिचिरजीवोमेरोकुंवर
कन्हैया॥ २॥ कवहूंकवलदेरिवुलावतइहिआंगनखेलेंदो
ऊभैया॥ सूरदासस्वामीकीलीलाअतिप्रतापवालकनंद
रैया॥ ३॥ राग विलावल॥ चलनपैयासिखवतगोपाल॥ धू
रधूसितनअंजनिनैननिचलतअटपटीचाल॥ १॥ दुगमगा
तदुगपरतपांनिपरभुजभ्राजतनंदलाल॥ जैसोसरसिजव
रजांनिअधोमुखदरखिततहोतमनाल॥ २॥ लरलगाइअग्र
रियाप्रवारनिसुंदरस्यांमतमाल॥ जनुपगधरउपजीविसा
रिमतविहरतवालमराल॥ ३॥ अलकतिलककअरुचारुच
खोडासुछविसोभाभूलीमाल॥ सूरदासऐसोंमुखनिरखत
जगजीजैंवहुकाल॥ ४॥ राग केदारो॥ वलिजाउवालचरित्र
मुरारी॥ पाइननूपुरचलतरुनझुननंदवजावततारी॥ १
कवहूंहरिकीपकरिअंगुरीचलतसिखवतग्वार॥ कव
Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा. हूंछुतियांलायचूंवतिविहसतअंबरडारि॥२॥कवहूंहरितन
॥२६॥ कोपिचितवतकवहूंपावतगारि॥कवहूंनंदलालपरमहराव
तएनंदहिदवनवारि॥३॥कवहूंहरखिवनाथभूखनराईलों
नउतारि॥सुरसुरमुनिसिद्धमोहेदेखियहअनुहारि॥४॥रा
गविलावल॥गहेंअंगुरियानंदसुवनकोनंदचलनसिखा
वत अरवराइगिरिपरतहेंकरिटेकउठावत॥१॥वारवा
रवकिस्यांमसोंकछुवोलनवुलावत॥दुघादूंदतुलीवनीमु
खअतिछविपावत॥२॥कवहूंकांन्हकरछांडिनंदपाछे
करिधावत॥कवहूंधरनिपरवेठिजातमनमेंकछुगावत
३॥कवहूंउलटिचलेधांमकोंघुटरुनकरिधावत सूरस्यां
ममुखदेखिहरखिमननंदवढावत॥४॥रागधनाश्री॥कां
न्हचलतपगद्वेद्वैधरनी॥जोमनमेंअभिलाखकरतहीसो
देखतनंदघरनी॥१॥रुनकुनकनूपुरधुनिवाजतयहअ
तिहेंमनहरनी॥वेठिजातपुनिउठततुरततिहिसोछाविजा
तनवरनी॥२॥व्रजजुवतीसवदेखिथकितभईसुंदरताकी
सरनी॥चिरजीवोजसोदाकोढोटाहूंनसूरदासकीनरनी॥३
रागगोरी॥भीतरतेंवाहिरपुनिआवत॥घरआंगनअति
चलतसुगामभएदेहरीमेंअटकावत॥१॥गिरिगिरिपरत
नजांनिउलंघीअतिश्रमहोतलंघावत॥हूठपेडवसुधासव
कीनीधांमअवधमभरमांवत॥२॥मनहीमनवलवीरकह
तहेंऐसेरंगवनावत॥सूरदासप्रभुअगनितमहिमाभक
नकेमनभांवत॥३॥रागधनाश्री॥चलेदेखिजसोदासुखपा
वें ठमकठमकपगधरनीरेंगतजननीदेखिदिखावें॥१॥
देहरीलोंचलिजातवहुरिफिरिफिरिइतहीकोंआवें॥गि
रिगिरिपरतवनतनहिनांघतसुरमुनिसोचकरावें॥२॥
कोटिव्रह्मांडकरतछिनभीतरहरतविलंवनलावें॥ता
कोंलियेंनंदकीरांनीनानाखेलखिलावें॥३॥तवजसुम
तिकरटेकिस्यांमकोंक्रमक्रमकरिउतरावें॥सूरदासप्रभु
देखतसुरमुनिमनवुधिवांनिनआवें॥४॥रागविलावल
सोभलकहंभयोभगवांन॥जिहिवलकमठपीठगिरिरा
ख्योंसिंधुमथनकोंनोंपरमांन॥१॥जिहिवलमीनरूपजल
थाह्योंलयोनिगमहतिअसुरपिरांन॥जिहिवलवलिवंध

Brihammandiradhishwar

नकसिपठयोंत्रैपदवसुधानापीप्रभुनिदांन ॥२॥ जिहिबलरू
पवराहह्रदसनपरराखीधरनीपह्रूपसमांन ॥ जिहिबलहिर
णकश्यपउरफारयौभगएभक्तकेकृपानिधांन ॥३॥ जिहिब
लविप्रतिलकदेंथाप्योंआपुकरीइछ्यापुटपांन ॥ जिहि
बलरावणकेसिरकाटेकियोंविभीषननृपतिनिधांन
॥४॥ जिहिबलजामवंतमणराख्यौंजिहिबलभूपविनयसु
निकांन ॥ सूरदासप्रभुप्रेमकीरेंहरिबढिनसकतप्रभुसु
रेश्रजांन ॥५॥ रागआसावरी ॥ घुटरूनचलतस्यांममनिआं
गनमातपितादोऊदेखतरी ॥ कबहूंककिलकिजाततमुखहेर
तकबहूंजननीमुखपेखतरी ॥१॥ मनिगनलटकतललित
भालपरकाजरबिंदुभुवऊपररी ॥ जोसोभानेंननिदेखतहें
सोसोभानहिंतिहुपुररी ॥२॥ कबहूंकदोरिघुटरूवनरेंगत
गिरतउठतफिरिधावतरी ॥ उततेंनंदबुलावतहें इततेंज
ननीबुलावतरी ॥३॥ दंपतिहोडकरतआपुसमेंस्यांमखिलौ
नाकीनोंरी ॥ सूरदासप्रभुब्रह्मसनातनसुतहितकरिदूहूंली
नोंरी ॥४॥ रागआसावरी ॥ आनंदसोंप्रेमउमगिजसोदागोपाल
रायखिलावेंरी ॥ प्रफुल्लधराफिलिसुकृतकीनोंमनमेंमोदब
ढावेंरी ॥१॥ सिवसनकादिब्रह्मादिकयोजतवेनहिंअंतनपा
वेंरी ॥ गोदलियेंजसोदादुलरावें तुतरेबोलबुलावेंरी ॥२॥ क
बहूंकतालबजावतगावतरागअनूपमिलावेंरी ॥ कबहूं
करपल्लवजुगह्लावतअंगनमांहिंगिरावेंरी ॥३॥ मोहेसुरन
रकिन्नरमुनिजनरविरथनांहिंचलावेंरी ॥ मोहिलईब्रजकी
बनिताजिहिसूरदासजसगावेंरी ॥४॥ रागधनाश्री ॥ हरिहरि
हसतमेरोमाधेयां ॥ देहरीचढतपरतगिरिगिरिकरपल्लवग
हतहेंमैया ॥१॥ भक्तहेतजसोदाकेंआएचरणधरतविरदस्र
रतैया ॥ जिहिजिहिबरणनिछलियोंबलिराजानघप्रवेरंगा
गाजुवहेंया ॥२॥ जिहिस्वरूपमोहेब्रह्मादिकरविससिकोटि
उगेया ॥ सूरदासप्रभुतिहिचरणनिकेबलिबलिबलिमेंगे
या ॥३॥ रागबिलावल ॥ नंदधांमखेलतहरिडोलत ॥ जसोमा
तिकरतसोईभीतरआपुनकिलकतबोलत ॥१॥ देहिउठोज
सोमतिमोहनकाहिआवहुंचरणचलाइ ॥ वेनसुनतमाता

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.॥ पहूंचांनी चलेघुरुहुरुवनिधाइ ॥२॥ लेंउचायश्चलंगहिंपो॥
॥१८॥ छौंधूरिभरीसवदेह्या ॥ सूरप्रभूजसोमनिरजरुरतिकहांभ
रीहेंदेह्या ॥३॥ ॥रागधनाश्री॥ आंगनखेलतनंदकेनंदा जदु
कुलकुमुदसुखदईजसचंदा ॥१॥ संगसंगवलमोहनसोहें
सिसुभूषणसवहुकोमनमोहें ॥२॥ तनदुतिमोरचंदज्योंझल
कें उमगिउमगिअंगअंगछविछलकें ॥३॥ कटिकिंकिनीप
गपेंजनीवाजें ॥ पंकजपांनिपोंहेचियाराजें ॥४॥ कठुलाकं
ठवघ्रनिषाकों ॥ नेंनसरोजमीनसरसीकों ॥५॥ लटकेंति
ललेतललाटलटूरी ॥ देषतरोइहूतुलियाहरी ॥६॥ मुनिम
नहरतमंजुमसिविंदा ॥ ललितवदनवालिवालगोविंदा
७॥ कुलहीचित्रविचित्र[illegible]गुली ॥ निरखिजसोमतिरोहि
नीफूली ॥८॥ गहिमनखंभदेहूडगरोलें ॥ वलवलवचनतो
तरेवोलें ॥९॥ निरखनिरुकिझांकतिप्रतिजाई ॥ देतपरमसुख
पितुअरुमाई ॥१०॥ व्रजजननिरखतहूलसांने ॥ सूरस्याम
महिमाकोजाने ॥११॥ रागधनाश्री ॥ आंगनस्यामनचावेंई
जसुमतिनंदरानी ॥ तारीदेंदेंगावेंमधुरेसुरवांनिपाइननूप
रवाजहींकटिकिंकिनीकूजे ॥१॥ नान्हीएडीअरुणताफले
विंवनपूजें ॥२॥ जसुमतिगानसुनेंश्रवननितवआपुहेंगा
वें ॥ तारीवाजतिदेषिकेंपुनिआपवजावें ॥३॥ केहरिनखउ
रपरवनेसुठिसोभाकारी ॥ मनोंस्यामघनमध्यहेंनवससि
उजियारी ॥४॥ गुहूवारेसिरकेसवनेघुघुरावारे ॥ लटकनल
टकतभालपरविधुमधिगनतारे ॥५॥ कठुलाकंठचिवुक
तरेंमुखदसनविराजें ॥ खंजनविचसुकआनिकेंमनपरोंं
दुराजें ॥६॥ जसुमतिसुतहूनवावहीछविदेखतजियतें ॥ सू
रदास प्रभुस्यामकेसुखटरतनहिटारे ॥७॥ ॥रागआसावरी॥
मैयामोहनजाचेंदईकोंघमरकोंहहरी ॥ तोसियाकिंकिनीधु
निपगनूपुरसोहिमिलेसुरदेहरी ॥१॥ कंचनमणिमुक्ताहल
किविचिवसनखछविपोहरी ॥ कहतनवनेंसुनतनहिआ
वेंउपमानाहीकोहरी ॥२॥ सूरप्रभवनकोंतिमरनसायोंवलि
गईजननीजसोहरी ॥३॥ ॥रागआसावरी॥ अद्भुतएककचितेंधों
सजनीनंदमहरिकेंआंगनरी ॥ सोमेंनिरखिअपनपोंखोयों

Brihanmandiradhishwar

गई मथनियां मांगन री ॥ १ ॥ बालद्दिसा मुख कमल बिलोक
त कछु जननी सों बोले री ॥ अगर हसत दतियां मनु दामिनि
दुरि दमकति दल ओले री ॥ २ ॥ सुंदर भाल तिलक गोरोचन
मिलि मिस बिंद काल मेंपी री ॥ मनु मकरंद अघवे रुचि कैं आ
लि सावक सोई न जाग्यौ री ॥ ३ ॥ कुंडल लोल कपोलनि झलकैं
मनु दर्पन में झाई री ॥ रही बिलोकि बिचार चारु छबि परमिति
कहूं न पाई री ॥ ४ ॥ मंजुल तारन की चपलाई चित चतुरान
न करखैं री ॥ मनों सरासन समर धरें कर मोहू चढ सर बर
षैं री ॥ ५ ॥ जलधि पषि कित जिय का गयो तिज्यो कूलन कबहूं
आयौ री ॥ नाजानौं कि हि अंग मगन मन चाहि रह्यौ नहिं आ
यौ री ॥ ६ ॥ कहां लगि कहौं बनाय बरन छबि निरखत गति
मति हारी री ॥ सूर स्याम के एक रोम पर देउं प्रान बलिहारी
री ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ आजु गई हों नंद भवन में कहा कहौं गृह
चैंन री ॥ चहूं ओर चतुरंग लछिमी कोटिक दुहियत धेनु री
॥ १ ॥ घुमि रही जित तित दधि मथनी सुनत मेघ धुनि लाजैं री
बरनों कहां सदन की सोभा बैकुंठहू तैं राजैं री ॥ २ ॥ बोलि ल
ई नववधू जांनि जहां खेलत कुंवर कन्हाई री ॥ मुख देखत
मोहनी सी लागी रूप न बरन्यो जाई री ॥ ३ ॥ गोरोचन को ति
लक निकट तहां काजर बिंद काल मैं पौरी ॥ मनों कमल को
पियें पराग नि अलि सावक सोइ न जाग्यौ री ॥ ४ ॥ नैनन अं
जन खंजन मोहें नासा लकुट कनि मोतिरी ॥ मानौं सोभ सा
प कर लीनो जांनि आपनो गोती री ॥ ५ ॥ लटकन लटकि रही
भौंह पर रंग रंग मनिगन पोयेरी ॥ मानौं गुरु ससि निशुक्र अंकें
लाल भाल पर सोए री ॥ ६ ॥ अंबुज माल स्याम उर ऊपर बघन
बहियां छबि छाई री ॥ दुतिया सरद चंद्रमा प्रगट्यो उपमा क
ही न जाई री ॥ ७ ॥ सोभा सिंधु अंग अंग प्रति बरनत नाहीं आ
री ॥ जित देखौं मन भयो तितहीं कौं भयौ मेरे कौ चोर री ॥ ८ ॥
इतनी कहैं जिती मति मेरी कौ रोके जल रासी ॥ लाल गुपा
ल बाल बरनन छबि कविकुल करिहैं हांसी ॥ ९ ॥ जो मेरे
नैनन रसना होती कहती रूप बनाई री ॥ चिरजीयो जसोम
ति को ढोटा सूरदास बलि जाई री ॥ १० ॥ राग बिलावल ॥ ब
लि गोपाल खेलौ मेरे तात बलि बलि जाउं मुखारबिंद की

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.॥ अमृतवचनबोलततुतरात ॥१॥ छंडेमोटमथनदधिमोहन
॥२८॥ उचरिवूंरतनपरतअघात ॥ मांनोंमुक्तागजपरकनपरसो
भितसुभगसांवरेगांत ॥२॥ जननीप्रतिमांगतमनमोहनदे
माखनरोटीउठिप्रात ॥ लोटतभूमिसूरसुंदरघनचारिप
दारथजाकेहाथ ॥३॥ राग आसावरी ॥ तुमजिनिमोहनगहौ
मथानी ॥ हहाविलोमनदेहुनंदसुतमांनिवचावीकीआ
नि ॥१॥ कवहूंअंदुतितपतिनहिपावतकवहूंखवावति
हैंनंदरानी ॥ कवहूंश्रीनिपेटभुवमापतिकवहूंदेहरीउलं
घनजांनी ॥२॥ सूरदासवालिबलिविनोदकेरूपरासिरच
नावहुठांनी ॥३॥ राग विलावल ॥ जवदधिमथनीनेंकअरे
आरकरतमटकीगहिमोंहनवासुकशंभुडरें ॥१॥ मंदिरक
मठसिंधुपुनिकांपतपुनिनिजमथनकरों ॥ प्रलयहोतजि
नगहेंमथानीप्रभुमरजादटरें ॥२॥ सुरअरुअसुरठाढेसब
चितवततनेंकुनधीरधरें ॥ सूरदासप्रभुमुग्धजसोदामुख
दधिविंदुकरें ॥३॥ राग विलावल ॥ नंदनूकेवारेकांन्हछांडिदे
मथनियां ॥ नेंकरहोंमांरकन्हैडमैरेप्रांनधनियां ॥१॥ अरजि
नकरोंवालिजाऊंहोतोंसरनोछतियां ॥ सुरनरजाकोंध्यांन
धरेंब्रह्मासुनिजनियां ॥२॥ ताकोंनंदरानीमुखचूंवतिलेंक
नियां ॥ वारवारहहिमातनाजसुमतिसीरनियां ॥३॥ शेषसहस
आननगुणगावतनहिवनियां ॥ सूरदासस्यांमदेखिफूली
गोपगनियां ॥४॥ राग विलावल ॥ जसुमतिदधिमथनकरि
वेंठीवरधांम ॥ अजरधांमठाढेहरिहसतनान्हीदतियनछ
बिछाजें ॥१॥ चितवतचितलेतचुराइसोभावरनीनजाइजुव
तिनकेमनहरनकोंजुवनीदलसाजें ॥२॥ जननीसोंकहत
नांचेंतुमेंदेहौंनवनीतमोहनरुनकुनकवलतपाइनू
पुरवाजें ॥३॥ गावतगुणसूरदासजवमाधवभयोविकास
नाचततैलोकनाथमाखनकेकाजें ॥४॥ राग गौरी ॥ तवहिमां
खनजसोदालांई ॥ मेंमथिकेंअवहीधरिराषोंतुमरेकाज
कुमरकन्हाई ॥१॥ मांगिलेहुयाविधिकरिमोहनमोआगेंतु
मषाऊ ॥ वाहूरवकहुकछुजिनखेहोंदीठिलगेंजिनिकांऊ
॥२॥ तनकतनककछुखाहुलाडिलेज्योंवढिआवेंदेह ॥ सुर
स्यांमअवहौहुसयानेग्रात्रुनकेमुखखेहु ॥३॥ राग आसावरी

Brihanmandiradhishwar

आजुसखीहौंप्रातसमैंदधिमथनउठीअकुलाइ॥भरिभा
जनमनिखंभनकेधरिनेतलीयौंकरजाइ॥१॥सुनतशब्दति
हिछिनसमीपमंमहरिहंसिआयेधाए॥मोहिबालविनोद
मुदितअतिनैंननिरनरिखाए॥२॥चितवतचित्तहरयौबंच
लछबिचितैरहीचितलाइ॥पुलकितमनिप्रतिबिंबदेषि
कैंसबहीअंगासुहाइ॥३॥मांखनपिंडविभागदहूंकरिमेल
तमुखमुसिकाइ॥सूरदासप्रभूतासुतकेसुखसकेनहृदै
समाइ॥४॥रागकेदारो॥मोहनननकसोंवदनननकसेप
दभुजननककरनिपरननकसोंमंपखन॥ननकसीबातें
कहतननकसेननकहीरीरूतननकसाधन॥१॥ननकक
पोलननकसीदतियांननकहिहसिदपिलेनननकमन॥
ननकहिननकसूरढिगआयोननककहूंदीजेंननकसर
न॥२॥रागकेदारो॥सखीरीनंदनंदनदेखिधूरिधूसरजटक
नरूटुलीहरिधरेंहरिभेख॥१॥नलजमालगुपालपहरेंक
हांकहौंबनाइ नीलपाटमनोंगंगागौरीबोरीलईकंठलगा
इ॥२॥नीलपाटपरोइमनिगनफनिधोखेंजाइ॥खुनखुनाक
पिलियेमोहननचतडमरूवजाइ॥३॥कहीनारवदेखिहिरदें
रहीनारिविचारि॥बालससिमनुभालतेलेंउरधरयौत्रिपुरा
रि॥४॥निरखिअंगअनंगलज्जितनंदवछाहिजांनि॥सूरहि
रदेंवसोंनिरंतरयहस्वरूपामसिवकोंध्यान॥५॥रागसारंग
हरिहरिपरांकरनमोनमो॥अहिसाइअहिअंगाविभूषण॥
अमितदानवलविवहारी॥नीलकंठवरनीलकलेवर
प्रेमपरस्परकृतभयहारी॥१॥चंद्रचूडशिखचंद्रसिरोरुह
जमुनाप्रियगंगाधारी॥सुरभिरेणुतनभस्मविभूषणवृष
वांहनवनब्रछचारी॥२॥अजअनीहअविरुद्धएकरसय
हअधिकएअवतारी॥सूरदाससमनांमरूपगुनअंतर
अनुसरहैंअनुसारी॥३॥रागधनाश्री॥बालविनोदखरेई
भावत॥मुखप्रतिबिंबपकरिवेचाहतहसिहसिहुलसिघु
टुरूवनधावत॥१॥नंदसुवनमांखनमांगतहैंग्वालिनिसें
नवतावत॥श्यामजोरिवोल्यौंचाहतहैंप्रगटवेचननहिंआ
वत॥२॥कौशिवसांरखंडकीमहिमासिसुतामांझदरावत
सूरदासस्वामीब्रजवासीनैंननकोंफलपावत॥३॥राग

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा कौ नूरौं ॥ भावत हरि कौं बाल बिनोद ॥ लें लें गोद हरखि मुखनि
१९ रखत मुदित रोहिनी जननी जसोद ॥ ॥ अंजन अंग रमो तिन
सोभित चपल रहत धुनि नूपुर मोद ॥ अतिसय चपल सक
ल सुखदायक निसदिन केलि रहत कौलि सें ओद ॥ २ ॥ पर
मसनेह बढाव तवातन रिगि रिगि कें बैठत गोद ॥ सूरदा
स प्रभु अंबुज लोचन ब्रजजन चितवत फिरें फिरि कोद ॥
३ ॥ राग देवगंधार ॥ कहन लागे मोहन मैया मैया ॥ नंद महरि
सों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया ॥ १ ॥ ऊंचे चढि चढि कहत
जसोमति लें लें नाम कन्हैया ॥ दूरि खेलन जिनि जाउ लला
मेरे मारेंगी काहू की गैया ॥ २ ॥ गोपी ग्वाल करत कौतूहल घ
र घर बजत बधैया ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस कों चरनन प
र बलि जैया ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ हरि अपने आंगन कछु गां
वत ॥ तनक तनक चरनन सों नांचत अपने मनहि रिझावत
॥ १ ॥ बांह उठाइ काजरी धोरी गेयन टेरि बुलावत ॥ कबहूं कबा
बा नंद पुकारत कबहूंक घर में आवत ॥ २ ॥ मांखन तनक ले
तक र अपने तनक बदन में नावत ॥ कबहूं चितें प्रति बिंब खं
भ में लोनी लयें खवावत ॥ ३ ॥ हरि देखत जसुमति यह लीला
हरखि आनंद बढावत ॥ सूरस्याम के बाल चरित्र नित नित दे
खत भावत ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ होंबलि जाउ मधुर सुर गां
वहु ॥ हरी देहु के आगें प्रेम प्रीति उपजावहु ॥ १ ॥ अब की
बेर लटे ने लाल लेनं दहि नाच दिखावहु ॥ कटि किंकिनी पाइन में
नूपुर बाजत अति छबि पावहु ॥ २ ॥ बाहू पसारि कोन्ह की नाई
धौरी धेनु बुलावहु ॥ कनक खचित कंकन कर आंगन आपे
जाय बजावहु ॥ ३ ॥ मन में खंब प्रतिबिंब बिलोकत नितन बं
नीन खवावहु ॥ परमानंद सूर के उर ने यह छबि अनतन जां
वहु ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ देखो रघुविसुनमें रघुजान ॥ एक अ
चंभौ मुनि री सजनी रिपु में रिपु जु समात ॥ १ ॥ रघुपर की एकौ
र पर पंकज पंकज पंकज दें पान ॥ यह अचिरज देखि पसु पा
लक फूले अंग न मात ॥ २ ॥ बारं बार बिलोकि बिलोचन जसु
मति अति मुसिकात ॥ यह ध्यांन मन आंनि स्याम कौ सूरदा
स बलि जात ॥ ३ ॥ राग सूहे बिलावल ॥ मनि मय आंगन नंद के
खेलत दोऊ भैया ॥ गोर स्यांम जोरी बनी बल कुवर कन्हैया ॥ २

Brihanmandiradhishwar

लटकनललितललाटसियामसिविंदुगोरोचन।हीनखउरस्र
तिराजइसंतनदुखमोचन॥२॥संगसंगजसुमतिरोहिनीहि
तकारनमैया।चुटकीदेदेनचावहीसुतजांनिनन्हैया॥३॥
नीलपीतपटपेंहनौदेखतजियभावै।बालविनोदस्रानं
दसोंसूरजजसगावै॥४॥रागकांन्हरौ॥दनुआंखिननेएकोंप
लजिनिहोहुनियारे।बलिवलिगईमुखारविंदकीनरसत
हूंनेंनानिकेतारे॥१॥औरोंसखाबुलायआपनेइहिंआंगन
खेलोंमेरेवारे।चितवततरहोंफनिगनिकीमनिज्योंमुंदरखा
लविनोदनुसारे॥२॥मधुमेवापकवांनमिठाईविंजनमीठे
खारेखारे।सूरस्यांमजोईजोईतुमचाहोंसोईसोईमांगिले
हुप्यारे॥३॥रागविलावल॥गोपालराइदधिमांगेंअरुरोटी।
मांखनबहुतदेहूमेरीमैयासुपकसुकोमलमोटी॥१॥आत
कालमुखिदेहूकलेऊमुखचुपरोअरुचोटी।कततुहांअपक
रतमेरोंमोहूनकहतहेंभूमिमेंलोटी॥२॥मांगोंसोदेहूम
नोहरयहवानदेंखोटी।सूरदासकौठाकुरठाढौहाथ
लकुटियाछोटी॥३॥रागसारंग॥मैयामोहिबडोंकरीलेरी
दूधदहीघृतमांखनमेवाजोमांगोंसोदेरी॥१॥कछूहहवस
राखोजिनिमेरीजोजोमोहिरुचेरी।होंहूसबलसबनिमे
जैसेंसदारहोंनिरभैरी॥२॥रंगभूमिमेंकंसपछारोंकेसी
बाहउनेरी।सूरदाससामीकीलीलामथुराराखोजेरी॥३॥
रागविलावल॥मैयाकबबाढेंगीचोटी।कितेदिवसभए
दूधपिवावततयहुअजहूंअतिछोटी॥१॥तूजुकहतिहेंबल
कीसीवेंनीह्वेंहेलांबीमोटी।पहलोंगुहतन्हातनागिनि
ज्योंफिरिहेंभूमिमेंलोटी॥२॥धूतधूतमोहिदूधपिवायो
देतीनमाखनरोटी।सूरवालरसत्रिभुवनमोहेहरिहल
धरकीजोटी॥३॥रागविलावल॥देऊभैयामागनमैयापें।
देरीमांखनरोटी।सुनिभावतियहवानसुननकीछूटेंधां
मकेकांमअगोटी॥१॥वलजुगह्योंनासिकामोतीकांन्ह
कुवरगहीदृढकरिचोटी।मानोंहंसमोरभखपावतक
विवरनीउपमाकछुछोटी॥२॥यहसुखनंददेखिआनंदि
तमगनहोतप्रेमरसलोटी।सूरदासमनमुदितजसोदा
भागबडेकरमनकीमोटी॥३॥रागविलावल॥नेंकरहों

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.॥ मांखन दैहुं तुमकों ॥ ढाढी मण्यति जसोदा आनंद लोनी नंद सु
२० तनकों ॥१॥ मैं बलि जाउं स्यांम घन सुंदर भूख लगी कछु भारी
बात कहूं की पूछत स्यांमहि फेरि करन मैं हूं तारी ॥२॥ कहत
बात कछु हरी न समझत झूठें ही भरत हुंकारी ॥ सूरदास प्रभु
के गुण तुरत हि भूलि गई महतारी ॥३॥ राग बिलावल ॥ बा
तन ही सुत लाय लियो ॥ तब लों दधि मथि जननी जसोदा मा
खन कीयो हाथ दियो ॥१॥ लैं लैं अधर परस करि जेंवत देख
त फूलत माय हियो ॥ आपुही खात प्रसंसत आपुही माख
न रोटी बहुत प्रियो ॥२॥ जो प्रभु सिव सनकादिक दुर्लभ सुत
हित जसोमति नंद कियो ॥ यह सुख निरखत सूर जन प्रभु कों
धन्य धन्य फल सुफल हियो ॥३॥ राग आसावरी ॥ जसोमति
जब ही कह्यो अन्हवावन रोय गये हरि लोटत री ॥ तेल उबटि
लौनी आगे धरि कहत नहीं तुम छूटत री ॥१॥ मैं बलि जाउ
अन्हवौ मेरे मोहन कत रोवत तव काढी ॥ पाछें धरि राख्यो छुटा
रु कें उबटन तेल समाज ॥२॥ महरि बहुत विनती करि राखत
मानत नहीं कन्हाई ॥ सूरस्याम आति ही बिलखाने सुर मुनि
अंत न पाई ॥३॥ चंद्र दिखावन राग कांन्हरो ॥ ढाढी जसोदा अ
जर आय ने हरि लियो दरि खावत ॥ रोवत कित बलि जाउ
तुम्हरी देखो धौं भरि नैन जुड़ावत ॥ चितै रहे तब आपुन
ससि तन अपने कर लै लै जु बतावत ॥ मन ही मन मैं बुद्धि
करत हरि माता सौं कहि ताहि मगावत ॥१॥ मोकों लागत कि
धो यह खात सो देखत अति सुंदर मन भावत ॥ लागी भूख चंद
मैं खैहों देहु रिस करि बिरझावत ॥३॥ जसुमति कहति कहा
मैं कीनों रोवत मोहन अति दुख पावत ॥ सूरस्याम कों जसो
मति बोधति गगन चिरैया उड़त दिखावत ॥४॥ राग कांन्हरो
किहि विधि करि कांन्ह समुझैहों ॥ मैं ही भूलि चंद दिखरायो
ताहि कहत मैं खैहों ॥१॥ अनहोनी कहूं होइ कें आरखी सुनी न बा
त ॥ यह तो आहि खिलोना सबकों खान कहत तिहि तात ॥२॥
यह देत नित लौनी मोकों छिन छिन सांझ सवारें ॥ बार बार तु
म माखन मांगत देउं कहांते प्यारे ॥३॥ देखत रहों खिलौना चं
द हि आगन करों कन्हाई ॥ सूरस्याम लीये हसति जसोदा नंद
हि कहत बुझाई ॥४॥ राग कांन्हरो ॥ बार बार जसोमति सु

Brihanmandiradhishwar

मूवोयेन आउ चंद तो हि लाल बुलावें ॥ मधु मेवा पकवांन मि
ठाई आपुन खेहैं तो हि खवावें ॥ २ ॥ हाथ ही पर तु हि लीने खे
लैं नैंक नहीं धरनी बैठावें ॥ जलवासन करि बेंजु बनावें ता
हीमें तुलन धरि आवें ॥ ३ ॥ जलपुट आनि धरनिं पर राख्यौं ग
हि आन्यों वह चंद दिखावें ॥ सूरदास प्रभू हसि मुसिकाने बा
रवार दोऊ कर नावें ॥ ३ ॥ राग कांन्हरौ ॥ लेलें मोहन चंद लें क
मल नेंन बालि जाउ सुचितहें नीकें नेंक चितै ॥ १ ॥ जा कारण
ते सुनि सुत सुंदर कीनी इतै आरें ॥ सोई सुधाकर किरन मनो
हर भांजन मांहि परें ॥ २ ॥ नभ ते निकट आनि राख्यो है जलपुट
जतन जुके ॥ अपने हाथ करि काढि मनोहर जो भावें तोरें
आंगन मंडल ते मागि पठायो पछी एक पठे ॥ सूरदास प्रभु
रूतनी बात को कत मेरो लाल रूठें ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ अर
गोरी मेरो बाल गोविंदा ॥ कर पल्लव गहि हरि दिखरावत खेलन
को मांगे चंदा ॥ १ ॥ भाजन में जल धरि जसोमति या विधि चंद
दिखावें ॥ छुवन करत हूं तन नहि पावत कोउ धरनि के संग आवें
२ ॥ मधु मेवा पकवांन मिठाई मांगि लीजे हु मेरे छोना ॥ चकई डु
लपात केल रवकन लेहु मेरे लाल खिलौना ॥ ३ ॥ संतउ वपन
असुर संघारन दूरि करन भव दंदा ॥ सूरदास बलि गई जसो
मति उपज्यो कंस निकंदा ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ जसोमति ले प
लिका पोढावति ॥ मेरो लाल अतिहि बिरुझानों यह कहि मधु
रें सुर सों गावति ॥ पोढि गई आपुन हरुवें करि अंग मोरि तव
हीं जमुहानें ॥ करसों ठोकि सुतहि दुलरावति चटपटाई बैठे
अतुरानें ॥ २ ॥ पोढौ लाल कथा एक कहिहों अति मीठी श्रवना
नि कों प्यारी ॥ यह सुनि सूर स्याम मन हरखे पोढि गए हसि दे
तहुंकारी ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ सुनि सुत एक कथा कहों प्यारी ॥
कमलनेंन मन आनंद उपज्यो चतुर सिरोमनि देत हुंकारी ॥ १ ॥
दसरथ नृपति हुतो रघुवंसी ताके प्रगट भये सुत चारी ॥ ति
न में मुख्य राम सों कहियत जनक सुता ताकी वरनारी ॥ २ ॥ ता
त वचन लगि राज तज्यो तिन अनुज घरनि लें भए वनचा
री ॥ रावन हरन सिया कों कीनों तव नंदनंदन नींद निवारी ॥
३ ॥ धावत कनक मृगा के पाछें राजीवलोचन परम उदारी ॥
चांप चांप करि उठे सूर प्रभु लछिमन देहु जननी भ्रम भारी ॥ ४ ॥

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ राग केदारौ ॥ जसोमति मन मन यह विचारति ॥ झिझकि उठी सो
॥२१॥ वत हूं पिअ वहीं तव तवति न केतापनिवारति ॥१॥ खेलत में
काहूं दीठि लगाई लैले राई लोंन उतारति ॥ सांझ हितें अति
हीं विरुझांनों चंदहि देखि करी अति आरति ॥२॥ वारवार कुल
देव मनावति दोउ कर जोरि सिरहि लें धारति ॥ सूरदास जसो
मति नंदरांनी निरषि वदन त्रै तापनिवारति ॥३॥ प्रातसमें
जगावनवे ॥ राग विलावल ॥ नाहिन जगाय सकति सुनि सु
बात सजनी ॥ अपने जांन अजहूं कान्ह मांनत है रजनी ॥१॥ जब
जब हूं निकट जात लागार हूं तैं लोभा ॥ तन की सुधि विसरि
जात निरखत मुख सोभा ॥२॥ वचननि कौं वहुत करति सोच
नि जिय ठाठी ॥ नैंनन न विचार परत देखत रुचि वाढी ॥३॥ इति
विधि वदनार विंद जसोमति जिय भावें ॥ सूरस्याम सुख की
रासि कांपें कहि आवें ॥४॥ राग विलावल ॥ जागौ व्रजराज कु
वर कमल कुसम फूले ॥ कुमुदिनि सुकुलित कुविरही भंगलता
फूले ॥१॥ तमचुर खग सोर सुनो वोलत वनराई ॥ रंभत गाऊ म
धुरनाद वछरा संग धाई ॥२॥ ससि मलीन रवि प्रकास गावति
व्रजनारी ॥ सूर श्री गोपाल उठे अंबुज कर धारी ॥३॥ राग विला
स ॥ भोर भए देखत हरि की मुख मुदित जसोमति नंद ॥ हिन
कर किरननि लिन नौं विगासत उडुपनत आनंद ॥१॥ वसन
उघारि जगावति जननी जागो मेरे आनंद कंद ॥ मनों मथित
सुर सिंधु फेंन फरि दई दिखाई चंद ॥२॥ जाकों जस ब्रह्मादिक
मुनिजन नेति नेति गावत अति छंद ॥ श्री व्रज में सूर प्रभु प्र
गटे पूरण परमानंद ॥३॥ राग विलावल ॥ जागिये गोपाल ला
ल आनंद निधि नंदलाल जसोमति कहें वारवार भोर भयों
प्यारे ॥१॥ नैंन कमलदल विसाल प्रीति वापिका मराल मद
न ललित वदन ऊपर कोटि वारडारे ॥२॥ उगत अरुन विगस
तमवैरी सशांक किरन हीन दीन दीपन मिलन छीन दुति
समूह तारे ॥३॥ मनों ज्ञान धन प्रकास वीते सब भव विलास
आस त्रास तिमर तोक तरुन तेज तारे ॥४॥ वोलत षगनिक
र सुकर मधुरद्धें प्रतीति सुनों परम प्रांन जीवन धन मेरे तुम
वारे ॥५॥ मनों वेद वंदीजन सूत वृंद मागध गन विरद वदत
जय जय जय जय जेती कैटभारे ॥६॥ वेगमति कमलावली वले प्र

Brihanmandiradhishwar

गुंज चंचरीक गुंजत अलि कोमल धुनि त्यागि कंज न्यारे ॥१
मनु वैराग प संकल पाइ सोग कूप गृह बिहाइ प्रेम मत फिरत
भत्य गुनत गुनत हारे ॥५॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अ
तिसय दयाल भागे जंजाल जाल दुख कंकट टारे ॥६॥ त्यागे
भ्रम फंद द्वंद्व निरखि कें मुखारविंद सूरदास अति आनंद
मिटे द्वंद भारे ॥७॥ राग नट ॥ प्रात समें सोवत उठि सुत कों ब
दन निहारयौ नंद ॥ रहि न सकें अतिसय अकुलाने बिरह नि
सा के द्वंद ॥१॥ स्वछ सेज में मुख निकसत न सुऐ अंबर ए तिमि
र मिटि मिंद ॥ मनु पयनिधि सुर मेथत फेनु फटि द्वई दिखाई चंद
॥२॥ धाए त्रंतु रच कोर सूर सव सुनि सुनि सरवा सुछंद ॥ रही न सु
धि सरिर मन नहि की पीयत किरन मकरंद ॥३॥ राग बिलावल
जागो जागो नंदकुमार ॥ सोवहु कहुं अब री दामा ठाढे संख स
खा वलमवार ॥१॥ रवि हूं चढ्यौ रैनि सब निघरी उघरे सकल
किवार ॥ वारि वारि जल पीये जसोदा उठि हेरे प्रान अधार ॥२
घर घर गोपी दह्यौ बिलो में कर कंकन कनकार ॥ सूरदास
गिरधर की लीला महिमा अगम अपार ॥३॥ राग बिलावल
नंद कों लाल उठत जब सोइ ॥ सोभा देखि मुखारविंद की क
हु का के मन धीरज होइ ॥१॥ मुनि मन हरन जुवती को वपुरी
रति पति जांति मान सब खोइ ॥ ईषद हास दंग गति बिलासत
मुक धरें जन पोइ ॥२॥ नागर नवल किसोर कुवर प्रभु मारग
जात लेत मन गोइ ॥ सूरदास प्रभु मोहन मूरति ब्रजवासी मो
हे सव लोइ ॥३॥ राग बिलावल ॥ प्रात भयो जागो नंदलाल
नवल नवल सुंदरि वनि आई बोलत सवै तुमें ब्रजवाल ॥१
आयो भांन मंद भयो उडपति फूले तरुनन माल दरसन कों
ठाढी ब्रजवनिता लाई गूंथि कुसुम बनमाल ॥२॥ मुख धुवा
इ सुंदर बलिहारी करहु कलेऊ मोहन लाल ॥ सूरदास प्रभु
आनंद की निधि अंबुज लोचन नेंन बिसाल ॥३॥ कलेवा भो
भोजन ॥ राग आसावरी ॥ कमल नेंन हरि करो कलेवा ॥ मांख
न रोटी सदजी मोंरधि भांति भांति के मेवा ॥१॥ खारिक दाख चि
रोंजी किसमिस उज्जल गिरी बदाम ॥ सफरी सेव सुहारी न्यो
जी अरु खरवूजा नांम ॥२॥ और मेवा सकल भांति के षटरस
के मिष्टांन ॥ सूरदास प्रभु करत कलेऊ रीझे स्याम सुजान ॥३॥

Brihanmandiradhishwar

॥सू०सा० बाललीलाखेलनलरिकानकेसंग॥ रागराम कली॥ खेलतस्यां
॥२२ मग्वालनसंग॥ सुबलहलधरअरुश्रीदामाकरतनानारंग॥१
हाथनतारीदेनभाजतसबैंकरिकरिहोड॥ बरजेहलधरस्यांम
तुमजिनचोटलागेंगोड॥२॥ तबकह्यौमेंजानतबहुतबलमो
गात॥ मेरीजोरीहैंश्रीदामाहाथमारेंजात॥३॥ कहिउठेतबहीं
श्रीदामाजाहुतारीमारि॥ आगेंहरिपाछेंश्रीदामाधरयोस्यामधरयौ
हंकारि॥४॥ जानिकेंमेंरह्योठाढोंकहांछुवततुमोहि॥ सूरस्या
मबिनतसखासोंमनहिकीनोंछोहि॥५॥ रागगौरी॥ सखाक
हतहेंस्यांमखिसाने॥ आपुहिआइबिलगभएठाडेअबतुम
कहांरिसाने॥१॥ बीचहिबोलिउठेतबहलधरयाकेमाइनबाप
हारजीतकछुनेंकनसमझतलरकनलावतपाप॥२॥ आपु
नहारिसखानसोंझगरतयहकहिदियोपठाइ॥ सूरस्यांमउठि
चलेरोइकेंजननीपूछनधाइ॥३॥ रागगौरी॥ मैयामोहिदाऊ
बहुतखिजायौ॥ मोसोंकहतमोलकोलीयोंतूजसुमतिक
बजायो॥१॥ कहाकहूंइहिरिसकेमारेंखेलनहूंनहिजात॥ पु
निपुनिकहतकौनतेरीमाताकोहैतेरोंतात॥२॥ गोरेनंदज
सोदागोरीतुमकितस्यांमसरीर॥ चुटकीदेदेग्वालहसतहें
सिखेंदेतबलबीर॥३॥ तूमोहीकोंमारनसीखीदाऊनेंकन
खीझें॥ मोहनमुखरिसकीयेबातेंजसुमतिसुनिरीझें॥४॥ सु
नोंकांन्हबलभद्रचबाईजनमहीकोंयहधूत॥ सूरस्यांममो
हिगोधनकीसोंमेंजननीतुमपूत॥५॥ रागनट॥ मोंहनमांनि
मनायोमेरों॥ हौबलिहारीनंदनंदनकेनेंकइतेंहसिहेरों॥१॥
कारोंकहिकहितोहिखिजावतबरजतखरोअनेरों॥ इन्ही
लमनितेंननसुंदरकहांकहेंबलचेरों॥२॥ न्यारोजूथहांकि
लेंअपनोंन्यारीगायनवेरो॥ मेरोसुतसिरदारसबनकोंब
हुतेंककांन्हबडेरों॥३॥ बनमेंजाइकरोंकोंतूहलयहअपनो
हैंखेरों॥ सूरदासद्वारेंगावतहेंबिमलबिमलजसतेरों॥४॥
रागगौरी॥ खेलनमेरीजायबलैया॥ तबहीमोहिदेखतलरि
कनसंगातबहिखिजवतबलभैया॥१॥ मोसोंकहततातबसुदे
वकोदेवकीतेरीमैया॥ मोललियोकछुदेंकरितिनकोंक
रिकरिजतनबढैया॥२॥ अबबाबाबाबाकहेंनंदसोंजसुमति
सोंकहेंमैया॥ ऐसेंमोंकहिसबमोहिखिजावततबउठिचल्योंखि

Brihatmandiradhishwar

मैया॥३॥ पाछें नंद सुनत भये ठाढे हूं सतत हसत तुरत मैया॥ सूर नं
द ग्वालि मां महि धिरियों तव मन हूं रखक न्हैया॥४॥ राग राम कली
खेलन चल्यों बाल गोविंद॥ सखा प्रिय द्वारें बुलावत घोष बा
ल कहूं द॥१॥ त्रिषत हैं सब दरस कारन चतुर चातिक दास॥
निरखि छबि नव वार धरि तन हरि हीं लोचन प्यास॥२॥ एक च
न सुनि सुनि कृपानिधि चले सुंदर बाल॥ ललित लघु लघु च
रन कर न अरु बाहु नैन विसाल॥३॥ अजर पद प्रतिबिंब राजा
त चलत उपमा पुंज॥ प्रति चरण मनु हेम वसुधा देत आसन
कुंज॥४॥ सूर प्रभु की निरखि सोभा रहे सुर अवलोकि॥ सर
द चंद चकोर मानों रहे थकित विलोकि॥५॥ राग धनाश्री॥ खे
लन कौं हरि दूरि गयोरी॥ संग संग धावत अरु डोलत कहूं धौं
बोहोत अबेर भईरी॥१॥ पलक ओट भावत नहि मोकों कहूं
कहै मोहि बात॥ नंद हि तात तात कहि बोलत मोहि कहत है
मात॥२॥ इतनी कहत स्याम घन आए ग्वाल सखा संग लीने
दौरि जाइ उर लाय सूर प्रभु हरखि जसोदा लीने॥३॥ राग धा
नाश्री॥ खेलन दूरि जात कित कान्ह॥ आजु सुने मैं हाऊ आयो
तुम नहि जानत नान्हे॥१॥ एक लरिका अबही भजि आयो रो
वत देख्यो ताहि॥ कान तोरि वह लेत सबन के लरिका रेखत
जाहि॥२॥ चलौ न वेगि सबारे जैयें भाजि आपने धाम॥ सूर स्या
म यह बात सुनत ही बोलि लिये बलि राम॥३॥ राग जैतश्री॥
तुम दूरि खेलन जिनि जाउ लला मेरे हूं हाऊ आए हैं॥ तब हसि
बोले कान्ह मैया कहूं किन हि पठाए हैं॥१॥ जमुना के तट धेनु
चरावत तहां सघन वन झांउ॥ पैठि पताल नाग गहि नाथ्यों
तहां न देख्यो हाऊ॥२॥ अब कडरप जि मुनि सुनि ये बानें कहत तहूं स
त बल राऊ॥ सब रसातल हिं निसि खांसन नाकी सुरति भुलाऊं
३॥ बालि बिद लेंगयो संषासुर जल में रह्यो लुकाऊं॥ मीन रूप
धरि कें तिहि मार्यौं तहां न देखे हाऊ॥४॥ छीर समुद्र मथन ज
व कीनों चौदह रतन निकाऊं॥ बासकनाग कियों जब नेती
तहां न देख्यो हाऊ॥५॥ मणि सिंधु हि सुर असुरनि के हित मंदि
र चल्यो धसाऊं॥ कमठ रूप धरि धर्यो पीठ पर तहां न देख्यो हाऊ
॥६॥ जब हिरनाकस जु अभिलाष्यो मन में अतिगारबाऊं॥ धरि
बाराह रूप तिहि मार्यो लै छिति दंतन अग्राऊं॥७॥ विकर हू

Brhamandiradhishwar

सू॰सा॰ प॰ अवतार धर्‍यौ जब सो प्रहलाद दिषाऊं ॥ धरि नरसिंह वपु असु
२३ र विदार्‍यौ तहां न देष्यौ हूंऊं ॥ ५ ॥ राम रूप धरि रामन मार्‍यौ दस
सिर बीस भुजाऊं ॥ लंका जराइ छार जब कीनी तहां न देष्यौ हा
ऊं ॥ ६ ॥ मार्‍यौ मुनि विनु अपराध हि कामधेनु लै आऊं ॥ इकी
स बार करी निछत्र छिति तहां न देष्यौ हूंऊं ॥ ७ ॥ नृपति भीम
सों जुद्ध परस्पर तहां वहु भांव वताऊं ॥ तुरत वीर द्वै टूक किये
धर ऐसे त्रिभुवन राऊं ॥ ८ ॥ मारी के मिस मदन विकार्‍यौ तब
जननी डरपाऊं ॥ मुख भीतर त्रैलोक दिषायौ तवहूं प्रतीति न
आऊं ॥ ९ ॥ भक्त हेत अवतार धरे सब असुरन मारि बहाऊं
सूरदास प्रभु की यह लीला निगम नेति नेति गाऊं ॥ ३ ॥ राग
राग रामकली ॥ जसुमति कान्ह हि यह सिषावति ॥ सुनौ स्याम तु
म वडे भये अब यह कहि चूच छुडावति ॥ १ ॥ ब्रजलरिका तुम्हे
पीवत देखत हू सत लाज न हि आवत ॥ जैहैं विगरि दांत ए अ
वै वातें कहि वहरावत ॥ २ ॥ अजहूं छांडि कह्यौ करि मेरौ ऐसी
वात न भावत ॥ सूर स्याम यह सुनि मुसिकाने अंचल मुखहि
लुकावत ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ नंद बुलावत हैं गोपाल ॥ आवहु
वेगि वलाई लेउं सुत सुंदर नैन विसाल ॥ १ ॥ परयौ सो थार ध
र्‍यौ मग जोवत सुनि हौ स्याम तमाल ॥ भात सिरात तात दुष
पावत वल हुतु रहौ लाल ॥ २ ॥ हौं वारी इन वरणन की डौ
रि दिषावहु वाल ॥ छाडि देउ तुम लाल लटपटी यह गति मंद
मराल ॥ ३ ॥ सो राजा जो पहलें पौहैं वेंसूर सुभवन उताल जो
जेहैं वलि राम अगाम नौ तौ हसि हैं सव ग्वाल ॥ ४ ॥ राग विलाव
ल ॥ जेंवत नंद कांन्ह इक ठौरे ॥ कछुक खात कछु मुख लपटा
वत वाल केलि अति भोरें ॥ १ ॥ वरा वदन मेंजव हीं डारनौं मिर
च दसन टक टोरे ॥ तीछन लगे नेंन भरि आये रि सकरि वाहि
र दौरे ॥ २ ॥ फूंकत कपोल निरेतर रोहिनी लेत लगाय अंकोरें ॥ सू
र स्याम कौं मधुर कौर दैं कीने तात निहोरें ॥ ३ ॥ राग कांन्हरो ॥ सां
झ भई घर आवहु प्यारे ॥ दौरत कहां चोट कहूं लगिहैं पुनि खेलौं
गे होत सकारे ॥ १ ॥ आपुहि जाइ वांह गहि ल्याई कंठ रहे लपटा
इ ॥ धूरि झारि तातौ जल ल्याई तेल परसि अन्हवाई ॥ २ ॥ सरस
वसन तन पोंछि स्याम कौं भीतर गई लिवाई ॥ सूर स्याम कछु
करौ वियारू पुनि राखौ पौढाई ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ कमल नैन

Brihanmandiradhishwar

हरिकरौंबियाहं॥ लुचईलपसीसघृजलेबीसोईजेयौंजो लगें
पियारी॥१॥ आछेदूधऔटिधौरीकौंलैंआईरोहिनिमहतारी
सूरदाससवरामस्यामदोऊजेंवहुजननीजाइवलिहारी॥२
रागकेदारौं॥ बलिमोंहनदोऊवरौंबियारू प्रेमसहितदोऊसु
तनजिमावतरोहिनिऔरजसोमतिमहतारी १ दोऊभैया
मिलिखातएकसंगरतनजरितकंचनकीथारी आलससों
करकौरउठावतनैंननिनींदझमकिरहीभारी २ दोऊमा
तानिरखतआलसमुखछबिपरतनमनडारतवारी बारं
बारजभातसूरप्रभुयहउपमाकबिकहेंकहारी ३॥ रागके
दारौं॥ कीजेंपांनललारेल्याईदूधजसोदमैया कनककं
टोराभरिकेंलीजेंयहपयपीजेंसुखदेंकन्हैया॥१॥ आछेंऔ
टयौंमेलिमिठाईरुचिकरिअचवतक्यौंननन्हैया॥ बहुतज
तनकरिकेंराख्योमेंतुमकारणबलभैया॥२॥ फूंकिफूंकिज
ननीपयप्यावतिआनंदउरनसमैया॥ सूरदासप्रभुपीवत
दोऊजननीलेनवलैयां॥३॥ रागकेदारौं॥ बलिमोंहनदो
ऊअलसांने कछुकछुखाइदूधलैंअचयोंमुखजभातज
ननीजियजानें १ उठोंलालकहिमुखपखरावतितुमकों
लैंपौढाऊं तुमसोवोमेंतुमसुवाऊंकछुमधुरेसुरगाऊं २
तुरतजायपौढेदोऊभैयासुनतभयोआनंद सूरदासजसो
मतिसुखपावतिपौढेबालगोविंद॥३॥ रागभैरों॥ उठोंनंदकु
मारभयोंसवारजगावतिनंदकीरांनी॥ झारीलैंजलवदन
पखारोंसुखकरिसारंगपानी॥१॥ मांखनरोटीअरुमधुमेवा
जोभावेंसोलीजेंआंनी॥ सूरस्यांमसुखनिरखिजसोदामन
हीमनसुहानी॥२॥ रागबिलावल॥ भोरभयोंमेरेलाडिलेजा
गोंकुंवरकन्हाई॥ सखाद्वारेंठाढेसबेंखेलौजदुराई॥१॥ मोकों
मुखदिषराइकेंत्रिबिधितापनसावहु॥ तुमरोंमुखचंद्रच
कोरनेंनमधुपांनकरावहु॥२॥ मुखतेंपटदूरिकरिकेंअभ
रुनसुखकारी॥ हसतउठेहरिसेजतेंसूरजबलिहारी॥३॥
बालभोग॥ रागबिलावल॥ कनककटोराप्रातहींदधिघृ
तमिठाई॥ खेलतखातगिरायदेंतदोऊझगरतभाई॥१॥ अ
रसपरसचुटियागहेंबरजतिहैंमाई॥ महाढीठमानेंनहीं
कछुलहुरबडाई॥२॥ हसिकेंबोलीरोहिनीजसोमतिमुसिकाई

Brihanmandiradhishwar

॥सू॰सा॰ जगतनाथ धरनीधरा सूरज वलिहारी ॥३॥ राग नट ॥ खेलत स्यां
॥२५॥ म अपनें रंग । नंदलाल निरखि सोभा निरखि थकित अनंग
१ चरनकी छबि निरखि डरप्यों गगन रह्यौ छिपाइ जानुकद
भाकी सबै छबि निरखि लई छडाइ २ जुगल जंघनि खंभ रं
भा नहीं सम सरतांहि ॥ कटि निरखि केंहरि लजाने रहे घन व
नचांहि ३ ॥ हृदें हरिनख अति विराजत छबि न बरनी जाइ
मनों बालक वीरधरन वचंद दई दिखाइ ॥४॥ मुक्तमाल वि
साल उरपर कछुक कहौं उपमाइ ॥ मनों तारागननि विस्त्रत नि
सिगगन रह्यौ छाइ ॥५॥ अधर अरुन अनूप नासा निरखि जि
न सुख दाइ ॥ मनो सुकफल बिंब कारन लेंन वैठ्यो आइ ॥६
कुटिल अलक बिना वपन की मनों अलि सिसु जाल ॥ सूर
प्रभु की ललित सोभा निरखि रही व्रजवाल ॥७॥ राग सोर
ठि ॥ नृत्य नंद सुधि करी स्यांमकी लांवहु बोलि कांन्ह वलि
रांम खेलत वडी वेर कहूं लागी व्रजभीतर काहूके धांम १
वारवार पछितात जसोदा वासर बीति गये जुग जांम मेरे
संग आय दोऊ वैठे उन बिनु भोजन कोनें कांम ॥२॥ जसुमति
सुनत चली अति आतुर व्रज घर घर टेरत लें नांम ॥ आजु अ
वेर भई कहुं खेलत बोलि लेउ हरिको वांम ॥३॥ ढूंढि फिरी
नहि पावत हरिको अति अकुलानी आवत धांम ॥ सूर स्यां
म को कहूं न पावति देखि वहु बालक वहु ठांम ॥४॥ राग नट
कोऊ माई बोलि लेहु गोपालहि ॥ मैं अपनें कों पंथ निहारति
हि खेलत वेर भई नंदलालहि ॥१॥ टेरति वडी वेर भई मोकों न
हि पावति घनस्यांम तमालहि ॥ सदै जेंवत सिरात नंद वैठे
ल्यावहु बोलि कांन्ह ततकालहि ॥२॥ भोजन कौं नंद संग मि
लिकें भूख लगी द्वैहे मेरे वालहि ॥ सूरस्यांम मग जोहत ज
सुमति आय गये सुनि वचन रसालहि ॥३॥ राग नट ॥ हरिको
टेरति हें नंदरानी ॥ वहुत वेर भई कहूं खेलत कहां रह्यौ अव
सारंगपांनी ॥१॥ सुनत हि टेर दोरि नव आए कव के निकसे
लाल ॥ मैं वत नहीं तुम्हारे विन नंदहि वेगि चलो गोपाल ॥२
स्यांम हि ल्याइ महरि जसोदा तुरत नहि पाइ पखारे ॥ सूरदास प्र
भु संग नंद के वैठे हें दोऊ वारे ॥३॥ राग सारंग ॥ जेंवत स्यांम नं
द की कनियां ॥ कछुक खात कछु धरनि गिरावत निरखत २५

Brihanmandiradhishwar

हूं नंद रानियां ॥२॥ नरी वरावे मन वहु भांतिन व्यंजन नावा विधि अ
गनियां ॥ डारत खात लेत अपने कर रुचि मांखन दधि दूनियां
२ मिसरी दधि मांखन मिश्रन करि मुख नावति छवि के नि
यां ॥ आपुन खाइ नंद मुख नावत सो मुख कहत न वनियां ॥३
जो रस नंद जसोदा विलसत सो नहीं तिहूं भ वनियां ॥४॥ श्रा
खि मूदन खेल ॥ राग कान्हरो ॥ वोलि लेहु हलधर भैया को ॥ मेरे
आगें खेल करों कछु नैंनन सुख दीजे मैया को ॥१॥ मैं मूंदों ह
रि आंखि तुम्हारी वालक रहे लुकाइ ॥ हरखि स्याम सव सखा
वुलाए खेलन आनि विसुराई ॥२॥ हलधर कह्यो आंखि को मूं
दें हरि कह्यो जननी जसोदा ॥ सूरस्याम लिये जननी खिला
वति हरख सहित मन मोदा ॥३॥ राग केदारो ॥ हरि अपनी तव
आंखि मुदाई ॥ सखा सहित वलिराम छिपाने जहां तहां गए
भगाई ॥१॥ कान लागि तव कह्यो जसोदा वा घर में वलिराम
वलदेव कों आवन दीजे श्रीदामा सों काम ॥२॥ दौरि दौरि वा
लक सव आवत छुवत महरि को गात ॥ सव आयर देंसु
वल श्रीदामा हारे अव के तात ॥३॥ वहुरि वार हरि सुवल ही धा
राग ह्यो श्रीदामा जाइ ॥ दै दै सौंहें नंद वावा की जननी पें लें आ
इ ॥४॥ हंसि हंसि तारी देत सखा सव भये श्रीदामा चोर ॥ सूरदा
स हंसि कहति जसोदा जीत्यो है सुत मोर ॥५॥ राग केदारो ॥
चलौ लाल कछु करौ वियारू ॥ रुचि नाहीं काहू पर मेरी तू क
हि वियो कहूं ॥१॥ वेसन मेलि सरस मेरो सों अति कोमल
पूरी है भारी ॥ जेंवहु स्याम मोहि सुख दीजे ता तीं लगति तुमें
अति प्यारी ॥२॥ नितु वासूरन आव अथानो और करों दनवा
छवि न्यारी ॥ वारवार यों कहति जसोदा कहां ल्यावों रोहिनि
महतारी ॥३॥ जननी सुनत तुरत लें आई तनक तनक धरि कं
चन थारी ॥ सूरस्याम कछु कछु लें आयो चल अचवन अरु
वदन पखारी ॥४॥ राग केदारो ॥ पोढिये लाल में हों विछा
ई ॥ अति उजल दें सेज तुम्हारी सोवत अति सुखदाई ॥१॥ खेल
त तुम निस अधिक गई सुत नैंनन नींद जभाई ॥ वदन जभां
त अंग अंग ऐंडावत जननी पलोटति पाई ॥२॥ मधुरे सुर गावत
केदारो सुनत स्याम चित लाई ॥ सूरदास प्रभु नंद सुवन को
नींद गई तव आई ॥३॥ चौगान खेलन ॥ राग सारंग ॥ खेलन

Brihanmandiradhishwar

सू. सा.
२५

जाहुग्वालतोहिटेरत यहमुनिकांन्हभयोंअतिआतुरढारें
ननाफिरिफिरितवहेरत १ वारवारहरिमातहिपूछतिक
ह्योंचोगानकहांहैं दधिमथनीकेपाछेंहैंवहलेमेंधरयों
तहांहैं २ लेंचोगानचलेअपनेकरप्रभुआएतबवाहर
सूरस्यामपूछतितवग्वालनिखेलनकीकहांनाहर ३
रागनट ॥ खेलतवनेघोषनिकास ॥ सुनोंस्यामचतुरसिरो
मनिइहांहैंघरपास ॥ १ ॥ कांन्हहलधरवीरदोऊअतिभुजाहे
ऊजोर ॥ सुवलश्रीदामासुदामावेभएएकओर ॥ २ ॥ औरस
खाबुलायलीनेगोपबालकवृंद ॥ चलेव्रजकीखोरिखे
लतअतिउमगिनंदनंद ॥ ३ ॥ वटाधरनिडारिदानोंलेचले
ढाकाइ ॥ आपआपनीघातनिरखतखेलजम्योंजमाइ ॥ ४ ॥
सखाजीतेजबस्यांमजांनीतबकरीकछुपेल ॥ सूरदासक
हतसुदामाकोंनऐसोखेल ॥ ५ ॥ रागबिलावल ॥ खेलनमें
कोकाकोंगुसैयां हरिहारेजीतेसीदामाबरबसहीकरत
रुसैयां ॥ १ ॥ जांतिपांतिहमतेवडनाहीनाहमवसततुम्हा
रीछैयां ॥ अतिअधिकारजनावतयातेंअधिकतुमारेंगै
यां ॥ २ ॥ रोसकरेंतासोंकोखेलेरहेबैठिजहांतहांगवैयां
सूरदासप्रभूखेल्योंचाहतदाउदेहकरिनंदर्दुहैया ॥ ३ ॥ रा
गआसावरी ॥ आवहुकांन्हसांझकीविरियां ॥ गाइनमांझभ
एहोहारेकहंतिजननीयहवडीकुवरियां ॥ १ ॥ लरिकापन
तुमनेंकनछाडतसोइरहोंसुघारीसेजरियां ॥ आएहरिय
हवातसुनतहीधायलएजसुमतिमहतरियां ॥ २ ॥ लेंपोढी
आंगनमेंसुतकोंछिटकिरहीआछीउजरियां ॥ सूरस्याम
कछुकहतकहतहीवसकरिलीयेआतिनींदरियां ॥ ३ ॥
रागकान्हरो ॥ आंगनमेंहरिसोइगयेरी ॥ दोऊजननीमिलि
केंहरुवेंकरिसेजसहिततबभवनलयेरी ॥ १ ॥ नेकनहींघ
रमेंकहुवेंठतखेलनकेअतिरंगारंगेरी ॥ यहिविधिस्याम
कहूनाहिंसोवतवहुतनींदकेवसभएरी ॥ २ ॥ कहततरोहि
नीसोवनदेंयहुखेलततेरेनहारिगएरी ॥ सूरदासप्रभुकों
मुखनिरखतहरखतकहिजियनेहनएरी ॥ ३ ॥ रागधनाश्री
महपानितेपाउंआयो ॥ व्रजघरघरपूछतनंदरावरपुत्रभयो
मुनिकेंउठिधायो ॥ १ ॥ पोंहेंच्योआयनंदकेमंदिरजसुमति

Brihanmandiradhishwar

द्रिकिआनंद्र बढायौं ॥ पाउधोइ भीतर बैठायौं भोजन कौं निज
भवन लिपायौं ॥ २ ॥ जो भावैं सो भोजन कीजें बिप्र मन हि श्र
ति हरष बढायौं ॥ धेनु दुहाइ दूध लैं आई पांडे रुचि करि खीरि
चरायौं ॥ ३ ॥ घृत मिष्टान्न खीरि मिश्रित करि परसि कृष्ण हि
त ध्यान लगायौं ॥ नैंन उघारि बिप्र जो देखें खात कन्हैयाहि दे
खन पायौं ॥ ४ ॥ देखौं आइ जसोदा सुत कौं सद पाक इन आं
नि जुठायौं ॥ महरि बिनय करि दोउ कर जोरैं घृत मधु पय फि
रि बहुत मगायौं ॥ ५ ॥ सूरस्याम कित करत अचगरी बारबार
ब्रह्मानैं खिजायौं ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ पांडे भोग लगावन पावत
करि करि पाक जबैं अरपत है तबहीं तबहीं छुवै आवत ॥ १ ॥ इछ्या क
रिकैं ब्राह्मण न्यौतौं ताहि गोपाल खिजावत ॥ वह अपने ठा
कुर हि जिवावत तु ऐसैं उठि धावत ॥ २ ॥ जननी दोष देत तकि
त मोकौं बिधि बिधना करि धावत ॥ नैंन मूंदि करि कर जो
रिकैं मो हू देंबुलावत ॥ ३ ॥ यह अंतर तन की है तब भक्त सौं माध
व जू जय भावत ॥ सूरदास बलि बलि बिलास पर जन्म जन्म
जस गावत ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ सुफल जन्म हरि आजु भा
यौं ॥ धनि गोकुल धनि नंद जसोदा जाकैं हरि अवतार लि
यौं ॥ १ ॥ प्रगट भयौ अब पुन्य सुकृत फल दीनबंधु मोहि द
रस दियौं ॥ बारबार नंद कैं आंगन डोलत द्विज आनंद भयौ
॥ २ ॥ मैं अपराध कियौ बिन जानें को जानैं किहिं भांति कियौ
सूरदास प्रभु भक्त हेत बस जसुमति गृह अवतार कियौ
३ ॥ राग धनाश्री ॥ अहो नाथ जेजे सरण आए ते भए पावन
महा पतित कुल तारन एक नाम अघ जारन दारन दुख
बिसारण ॥ १ ॥ मो ते कहै अनाथ दरसन तैं भयौ सनाथ दे
खत नैंन जुडावन ॥ भक्त हेत देह धरन भूमि कौ भार हरन
जन्म जन्म जन कौ मुक्तावन ॥ २ ॥ असरन सरन दीनबंधु
जसुमति सुख कारण देह धरि आवन ॥ हित की चित की
मानत सब की चित की जानत सूरदास प्रभु मन भावन
३ ॥ राग कांन्हरौ ॥ मया करियें कृपाल प्रतिपाल संसार उद
धि जंजाल तैं पारौं पार काहू के ब्रह्मा काहू के गणेस काहू
के महेस प्रभु मेरैं तौं तुम हि आधार १ दीनदयाल कृपाक
रि मो कौं यह कहिकैं लोटत बार बार सूरस्याम अंतरजा

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा. मो स्वामी स्वामी हैं जगत के कहां कहौं करौं निरवार ॥ २ ॥ भौरा
॥२६॥ वकई खेलन ॥ राग विलावल ॥ हूं मैया भौरा चकडोरी जाइ ले
हु आरे पर राख्यौ कालि मोल ले राखे कोरी ॥ १ ॥ लें आए हसि
स्याम तुरत ही देखि रहे रंग डोरी । मैया विना और को लावे
वार वार हरि करत निहोरी ॥ २ ॥ बोलि लिए सव सखा सा
थ के खेलन कों हून द्र की पोरी । तैसेई हरि तैसे व्रजवाल
क कर भौरा चकडोरी ॥ ३ ॥ देखत हीं जसोदा सुख विलसत
वार वार मुख मोरी ॥ सूरदास प्रभु हसि हसि खेलत व्रज
जन डारत तृन तोरी ॥ ४ ॥ राग कान्हरौ ॥ मेरे हियें लागो म
न मोहन लें गयरी मन चोरि । अव ही इहि मारग है निकसी ॥
छवि निरखत तृन तोरि ॥ १ ॥ मोर मुकट श्रवण निमानि कुंड
ल उर वनमाला पीत पिछोरी ॥ दसन चमकि अधरनि अरु
नाई देखत मन में परी ठगोरी ॥ २ ॥ व्रजलरिकन संग खेलत
डोलत हाथ लियें पकरति चकडोरी ॥ सूरस्याम चितवत गए
मो तन मगन भई री तन मन छोरी ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ कहत कौ
न जननी समुझाई ॥ जहां नडारे रहति खिलौना राधाजि
नि लें जाय चुराई ॥ १ ॥ सांझ सवारें आवन लागी चित रहे मुर
लीतन आई ॥ इनमें मेरो प्रान वसत है तेरे भाये नेंक न माई
॥ २ ॥ राखि छिपाइ ... कहि मेरो वलदाऊ कों जिनि पतिया
इ ॥ सूरदास यह कहति जसोदा कोलें हैं मोहि लगें वलाइ
॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ मेरे लाल को प्रेम खिलौना ऐसो को जो
ल है री । नेंक सुनत जो पैहें ता को सो के सें व्रज रहेंरी ॥ १ ॥ सां
झ सवारें आवन लागी ॥ आवतु है लें जराधा तनपाछे पछितें
हैंरी ॥ जिन रहै खिंनु कहां करेंगी सो कैसें प्रगटें हैंरी ॥ २ ॥ अब जहूं
लखि उठा इरी मैया मागें तें कहां दें हैंरी ॥ सूरदास तव कह
ति जसोदा वहु हरि लाल विरूझें हैंरी ॥ ४ ॥ राग नट ॥ सेंतनि मह
पुरि खिलौना हरि कों ॥ जानत टेक आपने सुत की रोवनि हू पु
निल पिके री ॥ १ ॥ धरि चौगान वेंन मुरली धरि अरु भौरा चक
डोरी ॥ प्रेम सहित लें लें धरि राखति ए सव मेरे कोरी ॥ २ ॥ अ
वाए सुनत रुचि उपजत अति हि हरि की वतिया भोरी ॥ सूर
स्याम सों कहति जसोमति दूध पियो वलतोरी ॥ ३ ॥ दूध पी
वन समय ॥ राग आसावरी ॥ आजु सवारें धेनु दुही है वहु सू

Brihanmandiradhishwar

मोहि भावैरी॥ सुनि मैया पैंवी हौं मोहि अधिक रुचि आवैरी
॥१॥ औरधेनु कौं दूध न पियहौं जो करि कोटि पिवावैरी॥ तुमतें
और कौंन सुनि वारोंवार वार मनावैरी॥२॥ जननी कहति
दूध धौरी कौ पुनिपुनि सोंह करावैरी॥ सूरस्यांम कौं पयधौ
री कौ मानाहि तसोंलावैरी॥३॥ राग गौरी॥ आछौ दूध पियो
मेरे तात॥ ताती लगत वदन नहि परसत फूकि देत हैं जसो
दा मात॥१॥ तुम पीवो मैं नैंन न देखौं मेरे कुंवर कन्हाई॥ व
हुत जतन करिकें राष्यौ यह तुम्ह कारन वलभाई॥२॥ दूध्या
अकेली धौरी कौ यह तिन कौं अति हित कारी॥ सूरस्याम प
य पीवन लाग्यौ अति ताती दियो ढारी॥३॥ राग विहागरो॥ पय
पीवत देखत वलिरांम॥ ताती लागत डारि तुम दीनों दावान
ल अचवत नाहि नांम॥१॥ कवहूं रहत मौन धरि जल मैं कवहूं
फिरि तव धावत रांम॥ कवहूं अघासुर वदन समाने कवहूं
अध्यारे जानत धांम॥२॥ षटरस सहस सपि का विलसत
वृंदावन रस रास वनाइ॥ कवहूं कर तो सुमति त्रैपद कवहूं
देहरी उलंघि न जाइ॥३॥ यह जो निरिख वतार धरत ब्रह्म सुरनर
मुनिजन भेद न पाई॥ राजाछौरि वरिते लाए तिहूं भवन में
वरत वडाई॥४॥ जुगजुग आज अवतार लेत हरि अखिलब्र
ह्मांड के नाथ॥ एतौ पी एवाल यहु सुख यह लीला क
हूं तजत न साथ॥५॥ एई कांन्ह यह वृंदावन यह जमुना यह
कुंज विहार॥ यह विचार करत वृंदावन एई है जन के प्रति
पार॥६॥ एई है श्रीपति भुवनायक एई है करता संसार॥ रोम
रोम प्रति अंड कोटि विमुख वृवति जसुमति कहि वार॥७॥
इनहीं कंस कई वेर संघार्यौ व्रह्म सधर्यौ कस्यो अवतार॥ मा
खन खाइ चुराय घरनि तें वहुत वार भये नंदकुमार॥८॥ आ
दि अंत कोउ नाहि जांनत है करता करता सव संसार॥ सूरदा
स प्रभु वाल अवस्था तरुन वृद्ध कौं करौं निरवार॥९॥ माख
न चोरी वर्णनं॥ राग गौरी॥ मांगि लेहु जो भावें प्यारे॥ वहुत भां
ति मेवा सव मेरें षटरस के प्रकार हैं प्यारे॥१॥ सवें जोरि राष
ति हित तुम्हरे मैं जांनत तुम वांनि॥ तुरत मथ्यो मांखन दधि
आछौ षाउ देहु सो आंनि॥२॥ मांखन दधि लागत है प्यारो।
और न भावें मोहि॥ सूर जननि तव मांखन दीनों खात हसत

Brihanmandiradhishwar

॥सू०सा०॥ मुखजोइ॥३॥ राग गौरी॥ मैयारी मोहि मांखन भावैं॥ जो मेवा पक
॥२७॥ वांन कहति तू मोहि नहीं रुचि आवैं॥१॥ ब्रजजुवती एक पाछैं
ठाढी सुनत स्यांम की वात॥ मन मैं कहति कबहूं मेरे घर देखौं
मांखन खात॥२॥ बैठे जाइ मथनिया कैं ढिग मैं तब रहौं छपानी॥
सूरदास प्रभू अंतरजांमी ग्वालिनि मन की जांनी॥३॥ राग गौरी॥
गए स्यांम तब ग्वालनि के घर देख्यौं जाइ द्वार नहीं कोऊ इत उत।
चितैं चलत तब भीतर॥१॥ हरि आवत गोपी सब जांनी आपुन
रही छिपाय॥ सूनैं भवन मथानी कै ढिग आवैं ठिग एहूं रगाइ॥२॥
मांखन भरी कमोरी देखत लै लै लागे षांन॥ चितै रहे मनि षंभ
छांह तन तासों करत सयांन॥३॥ प्रथम आज मैं चोरी आयौ भ
लौ वन्यौ है संग॥ आपु खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहत
न का रंग॥४॥ जो चाहौं सो देहु कमोरी अति मीठौं कित डारत॥
तुमै देषि मैं अति सुख पायौ तुम जिय कहुं बिचारत॥५॥ सुनि
सुनि वात स्यांम के मुख की उमगि हसी ब्रजनारी॥ सूरदास प्र
भुनि रखि ग्वालिनि मुख तब भजि चले मुरारी॥६॥ राग गौरी॥ फूली
फिरति ग्वालिनि मन मैं री॥ पूछति सखी परस्पर वातैं पायौ परयौ
कछू कहूं तैं री॥१॥ पुलकित रोम रोम गदगद मुख वांनी कहत न आ
वैं॥ ऐसो कहा आहि सो सखि री मो कौं क्यौं न सुनावैं॥२॥ तब
न्यारौं जिय एक कहत तुम एकैं रूप॥ सूरदास कहि ग्वालि
सखी मो देख्यौ रूप अनूप॥३॥ राग विलावल॥ देषि सखी मनि षं
भ निकट कुंज रहौं गोरस की चोरी॥ निज प्रतिबिंब निहारि कहत
तहां सि प्रगट करौं जिन चोरी॥१॥ अर्द्ध विभाग आजु तें हम तुम
भली वनी है जोरी॥ मांखन खांत कहूं डारत नहीं छांडि देहुं मति
भोरी॥२॥ बांटि लेहु सवैं चाहूं नहीं यह है वात हैं थोरी॥ मीठौ अपर
महरि जो लागै तो भरि देहुं कमोरी॥३॥ सुनि प्रभु वचन धीर
न रह्यौ तब हसि हसी मुख मोरी॥ सूरदास प्रभु सकुचि चले है
सघन कुंज की चोरी॥४॥ राग विलावल॥ प्रथम करी हरि मांख
न चोरी॥ ग्वालिनि मन इछा पूरन करि आपु भजे हरि ब्रज की खो
री॥१॥ मन मैं यह विचार करत प्रभु ब्रज घर घर सव गाऊं॥ गो
कुल जन्म लियौ सुख कारन सब कै मांखन खाऊं॥२॥ बा
ल रूप जसोमति मोहि जानैं गोपी मिली सुख भोग॥ सूरदा
स प्रभु कहत प्रेम सों ए मेरे ब्रज लोग॥३॥ राग रामकली॥ क

Brihanmandiradhishwar

रत हरि ग्वालन संग विचार ॥ चोरी मांखन खाउ सबें मिलि क
रहु ग्वाल बिहार ॥ १ ॥ यह सुनत सब सखा हरखे भली करी क
न्हाई ॥ हंसि परस्पर देत तारी सोंह करि नंदराइ ॥ २ ॥ कहां तुम
यह बुद्धि उपाई स्याम चतुर सुजांन ॥ सूर प्रभु मिलि ग्वाल बा
लक करत हैं अनुमांन ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ सखा सहित गये मांख
न चोरी ॥ देखें स्याम गवाछ पंथ व्है गोपी एक मथति दधि
भोरी ॥ १ ॥ हेरि मथानी धरी मांट ते मांखन हो उतरात ॥ आपुन
गई कमोरी मांगन हरि पाई इहां घांत ॥ २ ॥ पैठे सखन सहित
घर सूने मांखन दधि सब षाए ॥ छोछी छांडि मटकि यां दधि
की हंसि सब बाहिर आए ॥ ३ ॥ आय गई कर लियें कमोरी घ
र ते निकसे ग्वाल ॥ मांखन दधि कर मुख लपटानो देखि रही
नंदलाल ॥ ४ ॥ कहं आजु ब्रज बालक लें संग मांखन मुख ल
पटानो ॥ खेलत ते उठि भाज्यो सखा इहं इहं घर आइ छिपायो
॥ ५ ॥ भुज गहि पकरि लियो इक बालक फेर ब्रज की खोरी
सूरदास ठगि रही ग्वालिनी मन हरि लियो अजोरी ॥ ६ ॥ राग
बिलावल ॥ ब्रज घर घर प्रगटी यह बात ॥ दधि मांखन चोरी
करि लें हरि ग्वाल सखा संग खात ॥ १ ॥ ब्रज वनिता यह सुनि
मन हरखित सदन हमारे आवें ॥ मांखन खात अचानक पा
एं भुज भरि उर हि छुवावें ॥ २ ॥ मन ही मन अभिलाष करत
सब हृदें करत यह ध्यांन ॥ सूरदास प्रभु कों घर ते लें देहों
मांखन खांन ॥ ३ ॥ राग कांन्हरो ॥ चली ब्रज घर घरनि यह बात
नंद सुत संग सखा लीनें चोरी मांखन खांत ॥ १ ॥ कोउ कहे मेरे भ
वन भीतर अबहीं पैठे धाइ ॥ कोउ कहें मोहि देखि द्वारें उतहि
गये पराइ ॥ २ ॥ कोउ कहति किहि भांति हरि कों देखो अपने धां
म ॥ हेरि मांखन देउं आछो खाइ जेतो स्याम ॥ ३ ॥ कोउ कहति में
देखि पाऊं भरि धरों अंकवारि ॥ कोउ कहति में बांधि राखों को
सकें निरवारि ॥ ४ ॥ सूर प्रभु के मिलन कारन करत बुद्धि बि
चारि ॥ जोरि विधि कों मनावति पुरुष नंद कुमार ॥ ५ ॥ राग गौ
री ॥ ग्वालिनि घर गये सांझ की अंधेरी ॥ मंदिर में गए सम्माइ स्यां
म तन लख्यो न जाइ देह रूप कहो को सकें निवेरि ॥ २ ॥ दीपक
ह्रां न कह्यो भुज चारि प्रगट धरयो देखन भई चकृत ग्वारि
सूतउन को हरि ॥ स्याम हृदय अति विलास मांखन दधि बंद

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.॥ जालमनमोह्यौनंदलालबालह्वैकेफेरि॥२॥जुवतिप्रीतिभई
॥२८॥ वेहालभुजभरिदेअंकमाल सूरदासप्रभुकृपालडार्यौ
तनफेरी॥३॥रागगौरी॥ देखिफिरेहरिग्वालिद्वारें तबा
कबुद्धिरचीअपनेमनभीतरगईताकिपिछवारें॥१॥सूने
भवनकहूंकोऊनाहींमनुवाहीकोराज भांडेधरेउघारेन
मूंदतदधिमांखनकेकाज॥२॥रैनिजमायधर्यौहैगोरसप
ह्यौस्यामकेहाथ॥लैंलैंषातअकेलोआपुनसखानहींको
ऊसाथ॥३॥आहटसुनिजुवतीघरआईदेख्यौनंदकुवार
सूरस्यामममंदिरअधियारेनिरखतवारंवार॥४॥रागगौरी॥
अधियारेघरस्यामरहेदुपि अबहींमैंदेख्यौनंदनंदनच
रितभयौसोचितिमनहींछुपि॥१॥पुनिपुनिचकृतहोतअ
पनेजियकैसीहैंयहवात॥मटकीकेढिगवैठिरहेहैंहरिक
हैंआपनीघात॥२॥सकलजीवजलथलकेस्वामीचेंटीर
ईउपाइ॥सूरस्यामतबदेखिग्वालिनभुजपकरीदोऊआइ
॥३॥रागकेदारौ॥ कांन्हकहांवाहनदौलत॥पूछेतेतुमवद
नदुरावतसूधेनाहिनवोलत॥१॥पाएआंनिअकेलेघर
मैंदधिभाजनमेंहाथ॥अवतुमकाकेनाऊंबूटोगेनाहिन
कोऊसाथ॥२॥मैंजान्यौयहगेहहमारोइहिंधोखेंइहां
आयौ॥चोटीमांहिपर्यौगोरसकीताकारनकरनायौ॥३॥
एसबवचनकहेमनमोहनग्वालिनिमनमुसिकानी॥सूर
दासप्रभुचतुरसिरोमनिजोंहुंजाहहमजांनी॥४॥रागगौ
री॥आपगएहरुवेसूनेघर॥सखासबैवाहरहीआयेदेख्यौ
दधिमांखनहरिभीतर॥१॥तुरतमथ्यौदधिमांखनपायोलैं
लैंषातधरतअधरनपर॥सैनोदेसवसखाबुलाएतिनें
देतभरिभरिअपनेकर॥२॥छरकिरहीदधिबूंदहरदेमेंइत
उतचितवतकरिमनमेंडर॥उठतवैठिलैंलखनसखनकों
पुनिलैंषातदेतग्वालनिवर॥३॥अंतरभईग्वालियहदेख
तमगनभईअतिउरआनंदभर॥सूरस्यामसुखनिरखिथ
कितभईकहतनवनैंरहीमनदैहर॥४॥रागसारंग॥ग्वा
रनिजोदेखेघरआइ॥मांखनखाइचुरायस्यामसबआपु
नरहेछिपाइ॥१॥ठाढीरहीमथानीकेढिगरीतीपरीकमोरी॥
अबहींगईआयइहिंपाइनलैंगयौकोकरिचोरी॥२॥भीतर

Brihanmandiradhishwar

गईतहांहरिपायोस्यामपरेगहिपाइ सूरदासप्रभुग्वालिनिअ
गेआपुननामसुनाइ ॥ ३ ॥ रागनट ॥ देखिग्वालिजमुनाजात
आपुनघरगयेपूछतिकोन्हेंकहिबात ॥ १ ॥ जाइदेखेंभवन
भीतरग्वालबालकदोउ ॥ भीरदेषतअतिडरानेदुहूंनदीनों
रोइ ॥ २ ॥ ग्वालकेकांधेचढेनवनीतलेउउतारि ॥ दहीमांख
नखातसबमिलिदूधदीनोंढारि ॥ ३ ॥ वछलेंसबछोरिदीने
गाएबनसमुदाइ । छिरकिलरकनिमहीसोंभारग्वालदए
चलाइ ॥ ४ ॥ देखिआवतसखीघरकुंग्वालगयेसबदोरि औ
निदेख्योस्यामघरमेंभएठाढेपोरि ५ प्रेमअंतररिसभरयो
मुखजुवतीपूछनबात चितैमुखतनसुधिविसारीकियो
दुरनघात ६ अनिहरिसबसभईग्वालिनिदेहरिगृहविसा
रि ॥ सूरप्रभुभुजगहेंल्याईमहरिसोंअनुसारि ॥ ७ ॥ रागधना
श्री ॥ चोरीकरतकान्हधरपाए ॥ निसवासरमोहिबौहोतस
तायोअबहरिहाथहिआए ॥ १ ॥ मांखनदधिमेरोसबषायो
बहुतअचगरीकीनी मैंबहुतजतनकीयेअपनेसेंपैंनरि
खाईदीनी ॥ २ ॥ अबतोघातपाएहोलालनतुमपैंलेंहूंमगा
ई ॥ तेरीसोंमेंनेकनखायोसखागयेसबखाइ ॥ ३ ॥ मुखतन
चितैविहसिहरिदीनोंरिसगईतबबुझाइ ॥ लीयोस्यामउ
रलायग्वालिनीसूरदासबलिजाइ ॥ ४ ॥ रागरामकली ॥ मां
खनचोररीमेंपायो ॥ बहुतदिवसमेंकोरेलामोरेहाथन
आयो ॥ १ ॥ तबमेंकह्योजानिजोपाइकोनचोरहेआयो ॥ नि
तप्रतिरीतिदेखिकम्मोरीतबमोहिलगतछुभायो ॥ २ ॥ नव
नीतकीकरोंचामठीधूंघटमेंडरपायो मेरेलालकोंमारिस
केंकोतोहिनिकाहिहूलसायो ३ जबकरसोंकरगह्योकहीपें
नाहिंमांखनखायो हसतउघरिगईदतियासुंदरीसूरस्याम
उरलायो ॥ ४ ॥ रागदेवगांधार ॥ मधुरावेचनजेहोंदहियो ॥ दधि
मांखनकेहैमासअछूतेसोपतिहोंतुहिसहियो ॥ १ ॥ औरको
उयाब्रजमेंनाहीआवतनेंरकोलहियो । एसबवचनसुने
नंदनंदनवहुराहूमेंगहियो ॥ सूरछूरलोगगईग्वालिनिकु
टिपहोसोरेवहियो ॥ २ ॥ रागमारंग ॥ जानिपाएहोहरिनी
कें ॥ चोरिचोरिदधिमांखनमेरोनितप्रतिगीधाहिछावें ॥ १ ॥
होष्ठीकेसेंकोभवनहासव्रजभामिनिनूपरमूरिअचानक

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ हूंवे ॥ अवकैसेंजैयतवलि अपनेभाजनरहीदूधमेरोंपावें
२९ २॥ सूरदासप्रभुभलेपरेफंद देहुनजांनिभावतेजीके ॥ भरि
केंओकछिरकरेंनेंननिगिरधरभामिवलेदेकांवें ॥ ३ ॥ रा
गसारंग ॥ गोपालहिमांखनखांनदें ॥ सुनिरीसखीमोंनक्षरि
रहियेंवदनदहीलपटांनदें ॥ १ ॥ यानेंनाइचौगुनोंलेहोंमा
जसुमतिलोंजांनदें ॥ गहिवहियांहोलेंकरिजेहोंनेंननतप
नवुझांनदें ॥ २ ॥ तूंजाननतहरिकछूनजांनतसुनतमनोहरकां
नदें सूरदासस्वामीकेप्रभुकोंराखोंतनमनप्रांनदें ३ ॥ राग
देवगंधार ॥ जोतुमसुनोंजसोदागोरी ॥ नंदसुवनमेरेमंदिरमें
आजुकरनगएचोरी ॥ १ ॥ रहेछिपाइतनकमिरचकर्के भईसु
कलमतिभोरी ॥ होंभईजायअचानकठाढोकह्योंमंदिरमें
कोरी २ मेंगहिवांहकोतूहलकीनोंतववगहिचरनननिहोरी
लागेनेंननलेंभरिभरिजलतवमेंकांनिभेरोरी ३ मोहि
भयोंमांखनपछितावेंरीतेदेखिकमोरी सूरदासप्रभुदे
तनिसादिनहरिकोंसवकरनसमोरी ४ ॥ रागदेवगंधार ॥ जसो
दाकहालोंकीजेकांनि ॥ दिनप्रतिकेसेंसहीजातहेंदूधदही
कीहांनि ॥ १ ॥ अपनेयावालककीकरनीजोतुमदेखोआंनि
गोरसखायखवावेंलरिकनिभाजनभाजनिभांनि ॥ २ ॥ मेंअ
पनेमंदिरकेकोनेंराख्योंमांखनछांनि ॥ सोईजायतुम्हारेंदे
टावहूलायोंपहचांनि ॥ ३ ॥ पूछेंबातनमानतवकोहूंयहकस
लकरिजांनि ॥ सूरदासप्रभुउतरदीनोंचेंटीकांटतिपांनि
४ ॥ रागसारंग ॥ जसोदातेरेकान्हमेरोंमाखनखायों ॥ दुपहरिदि
वसदेखिघरसूनोंढूंढतआपुहिआयों ॥ १ ॥ खोलिकिवारपें
ठिमंदिरमेंदूधदहीसवसषांनखवायों ॥ उखलचढिछीकें
कोलीनोंअनभायोंभूमेंढरकायों ॥ २ ॥ दिनप्रतिहांनिहोतगो
रसकीयहढोटाकोनेंरंगलायों ॥ सूरस्यांमहटकिकिनरा
खोंतेंहीपूतअनोखोजायों ॥ ३ ॥ रागविलावल ॥ महरिहोंमां
निहमारीवात ढूंढिढांढिगोरससवघरकोहरयोंतुमपेंतात
१ ॥ कपटभरीवोलतिआईहेंढीठग्वालिनीप्रात ॥ वाखनतनही
दूधधोरीकोंतेरोदधिकोंखात ॥ २ ॥ औरकहततछीकेकोंली
नोंग्वारकांधदेंलात ॥ ऐसोमेरोंनाहिनेंअचगरोंकहांवना
वतवात ॥ ३ ॥ कहांकहेंसकुचतअतिजियमेंकहेंरिसकगां

Brihanmandiradhishwar

न हैगुनबडेसूरस्वामीकेघरलरिकाइँजात ॥ ४ ॥ राग बिलाव
ल ॥ अबयहहूठौंबोलैंलोग ॥ पाँचबरसअरुकछुकदिननकौं
कबभयोचोरीजोग ॥ १ ॥ दिनप्रतिदोषलगावतिआवतिसुह
फाटैंजुगवारि ॥ अनदोषनकौंदोषलगावतिगोधीदैदैगारि ॥
२ ॥ जोनपत्याइसंगबलिजसुमतिदेखौनैनपसारि ॥ सूरदा
सप्रभुनेंकनहूटकततयहसबलेहुविचारि ॥ ३ ॥ राग बिलावल
जसोमतिधौंदेखिआँनिआगेंह्वैलैंपहुँचानिबहियांगहि
ल्याईकांन्हआनकोकितेरो ॥ अबलौमैंकरीकानिसहीदूध
दहीहानिअजहूँजियजांनिमांनिकांन्हहूंअनेरो ॥ १ ॥ देषकौ
जोधरौंवारिवाकेभुजव्यालचारिहाहाहारीहौं ॥ धरनिकरनि
दिनदिनउजयेरोदेखियतनभवनमांझजैसोतननैंसीसांझ
छलसोंकछुकरतफिरतमहरिकोजठेरो ॥ २ ॥ गोरसतनछी
टरहीसोभानहिजातकहीमांनोंजलजमुखविंबउडगन
रयोफेरो ॥ उराहनेदिनदेहुकाहिकहौतोंझारिमाइनाहीव्र
जबासमांसऐसीविधिमेरो ॥ ३ ॥ गोकुलईसरनेंबिहारजसुमति
काहेकुमारभूलीभ्रमरूपकहूँबानिकोऊहेरो ॥ मनमनबि
हसतसुपाललभतमालदृष्टमालजानेंकोसूरदासचरितनकौ
नूकेरो ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ जसोदातूजुकहतहीमोसों ॥ दिनप्र
तिदेनउराहनोंआवतकहूँतिहारेबोसों ॥ होजुउराहनों
सतषकरनकौंगोविंदहिगहिल्याई ॥ देषनचलीजसोदासुत
मुखह्वैगईसुनतपराई ॥ १ ॥ नैननेंनहरुयामतिनाहींदेखिवदन
पहुँचानि ॥ देखौंसखीकहूंतिडोलतिहैयाकेंन्पासोकांन ॥ ३
तैनोनामस्यामभेरेकोसूधोकरिकैंपायो ॥ सूरदासस्वामीन
टनागरदेखिविखिरकतेआयो ॥ ४ ॥ राग गोरी ॥ कांन्हकोंग्वारि
निदोषलगावतिजोर ॥ नेंकदूधमाखनकेकारनकेसेंग
योंवनेरीऔर ॥ १ ॥ तूलैधनजोवनमदमातीनिलजभईआ
वतिउठिभोर ॥ लालकुंवरमेरोंकछूनजानेंतूधनिनरुणकि
शोर ॥ २ ॥ कापरनेंनचढ्योंडोलतियाव्रजमेंतिनुकासों
तोर ॥ सूरदासजसोदाविलखांनीयहबालकजीवनधन
मोर ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ अपनोगामलेहुनंदरांनी ॥ बडेबाप
कीबेटीसुनियतपूतहिभलीपढावतवांनी ॥ १ ॥ सखाभीर
लेंपैंठनघरमेंआपखाइतोंसहियें ॥ मैंजबचलीसामुहैंपक

सू.सा. ननतबकेगुणकहांकहियें २ भाजिगए हरि देखत कितहूंमें
३० धूपौढी आइ होंरहीं वेंनी गहि पाछें बांधी पाटी लाइ ३ सु
नि मैया याके गुण ऐसे इन मोहि लियो बुलाइ रिषि में परीस
हत की चेंटी मो पें सवें कढाइ ४ टहल करत याके घर की
में यह पति संग मिलि सोई सूर वचन सुनि हसी जसोदा ग्वा
रिहि मुख गोइ ५ ॥ राग देवगंधार ॥ कांन्ह बसजति क्यों न नंदरां
नी एक गाउ कों वास कहा लोक करैं नंद की कांनी १ ॥ तुम्हु
कहत तही मेरौं कन्हैया गंगा को सो पांनी ॥ बाहर तरुण किशो
र वसें हरि वार घार वउरांनी ॥ २ ॥ वचन विचित्र कमल दल लो
चन कहत सरस सरस वांनी ॥ अचरज महरि तुम्हारे आगें अ
वहि जीभ तुतरानी ॥ ३ ॥ कहां मेरों कांन्ह कहां तुम ग्वारि निय ह
विपरीति न जांनी ॥ आवत सूर उराहनें मिस है षिकुंवर सुसि
कानी ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ कबकी कवन गयौ मेरो वेन चोरी ॥ जा
नें कहां करा छन तुम्हारे कमलनैंन मेरो नंनकसोरी ॥ १ ॥ दें दें ह
गा बुलाय भवन में भुज भरि भेटन [illegible] कटोरी ॥ उरन खचि न्ह
दिखावत डोलन कांन्ह बनुर [illegible] तुम भोरी ॥ २ ॥ आति दिन उरा
हनें के मिस चितवत जैसें [illegible] चकोरी ॥ सूरस नेह स्याम मन
अटक्यो अंतर प्रीति जाति नहिं तोरी ॥ ३ ॥ राग देवगंधार ॥ क
हां कहि जांनत कांन्ह [illegible] वारी ॥ कांन्ह खापिनि हाथ न चावत जी
भ करें किनि ष[illegible] ॥ १ ॥ कब तेरे [illegible] गोरस खायों कब तेरी मह
कियां फोरी ॥ अधुरी भरि कें कछु न चापत घरमें भरी कमोरी
॥ २ ॥ इतनी सुनत घोष ब्रजनारी रहसि चली मुख मोरी ॥ सूर
दास जसुमति कों नंदन जो कछु करें सो थोरी ॥ ३ ॥ राग ध
नाश्री ॥ कांन्ह बराय्ये हों कितजात ॥ घर सुरभी लावी धौरी कों
मांखन मांगिन खांत ॥ १ ॥ नित प्रति दिन उराहनें के मिस उठि
आवत हैं प्रात ॥ विनु समुझें अपराध लगावति विकट बा
ना बनत बात ॥ २ ॥ रानी संक नित आवति सन मुख सुनि सु
नि नंद रिसात ॥ मो सों कपन कहत तेरें घर ढोटा नहुं न अ
घात ॥ ३ ॥ करि मनुहारि उठाय अंक भरि सुत कों वरजें ति
मात ॥ सूरदास प्रभु नित प्रति सुनि सुनि दुख पावत है नात
॥ ४ ॥ राग विलावल ॥ किन हों हरि का हू कें जात ॥ एसब ढोट गर
व गोरस के मुख सभारि बोलन नाहिं वात ॥ १ ॥ जोई जोई सबे सोई

Brihanmandiradhishwar

सोई तुम मोपैं मागि लेहु कित न तात ॥ ज्यों ज्यौं वचन सुनत मुख
अमृत सुख उपजत अति गात ॥२॥ कौन प्रकृति परी इहु बारि
नि उराहने के मिस आवत प्रात ॥ सूर स्याम कछु रोष लगाय
ति घर हू कौ माखन नाहि खात ॥३॥ माटी खान समय वर्णन
राग केदारो ॥ बाल गोपाल पियारे उगलौ माटी ॥ बार बार अ
नरुचि उपजावत महरि हाथ लियें सांटी ॥१॥ महतारी सौं
मानत नाहि कपट चतुरतौं ठाठी ॥ बदन उघारि दिखाइ
आपने नाटक की परपाटी ॥२॥ बड़ी बार भई लोचन उघारे
भरम जमनिका काटी ॥ सूरदास महरि चकित भई कहत
न मीठी खाटी ॥३॥ राग बिलावल ॥ खेलत स्याम पौरि के बाह
र ब्रज लरिका संग सोहत जोरी ॥ बैठे आइ बालक अज्ञान
सब सब हुन की मति थोरी ॥१॥ गांवत हांक किरत किलकारी
हरि देखत नंदरांनी ॥ अति पुलकित गदगद मुख बांनी मन
मन महरि सुहानी ॥२॥ माटी लें मुख मेलि दई हरि तब ही
सो रानी जानी ॥ माटी लिये दौरि भुज पकरी स्याम लगरियो
ठानी ॥३॥ लरिकन कों तुम सब बरजिन कुठवत मोसौं कहहु क
हेंगे ॥ मैया में माटी नाहि खाई मुख देखें पतियागे ॥४॥ बदन
उघारि दिखायो त्रिभुवन घन बन नदी सुमेर ॥ नभ रवि सस
सि मुख भीतर ही सब सागर धरनी फेर ॥५॥ यह देखत जन
नी मन व्याकुल बालक मुख कहां आहि ॥ नैन उघारि बदन
हरि मूंद्यौ माता मन अवगाहि ॥६॥ झूठे लोग लगावत मोकौं
माटी मोहि न सुहावें ॥ सूरदास तब कहत जसोदा ब्रज लो
गन यह भावें ॥७॥ राग रामकली ॥ मो देखत जसुमति तेरे बा
लक अब ही माटी खाई ॥ यह सुनि के रिस करि उठि धाई हाथ
पकरि लें आई ॥१॥ एक कर सों भुज गहि करि ठाढ़ी इक कर
लीनी माटी ॥ मारनि हौं तोहि अब ही कन्हैया वेगि न काढ़ें
माटी ॥२॥ ब्रज लरिका सब तेरे आगें झूठी करत न बनाइ ॥ मे
रे कहें नाहि तु मानति दिखराऊं मुख वाइ ॥३॥ अखिल ब्रह्मांड
खंड की महिमा दिखराऊं मुख मांहि ॥ सिंधु सुमेर नदी वन
पर्वत चकृत भई मन मांहि ॥४॥ कर तें सांटि गिरत नहिं जा
नी भुजा छांड़ि अकुलानी ॥ सूर कहें जसुमति मुख मूंदौ ब
लि गई सारंगपांनी ॥५॥ राग सोरठि ॥ नंद महर कहें जसोदा सों

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ नी मांटी के मिस वदन दिखायो तिहूं लोक रजधानी १ स्वर्ग प
३१ ताल नदी वन पर्वत वदन मांहि रहे आनी नदी सुमेर देखि व
कृत भई या की अकथ कहांनी २ चितै रहे तब नंद जुवती
मुख मन में करत वनानी सूरदास तब कहत जसोदा गर्ग
कही यह वांनी ॥३॥ राग सोरठि ॥ कहत नंद जसोमति सों सुनि
बौरी न जानियें कहां तें देखौं मेरे कान्ह लगावत टेरी १
पांच बरस कों बालक कन्है या अब रजनेरी घात ॥ बिनही का
ज साठि लें धावत ता पाछें बिललात ॥२॥ कुसल रहें बलि
राम स्याम दोउ खेलत खात अन्हात ॥ सूर स्याम कों कहां ल
गावति बालक कोंमल गात ॥३॥ राग बिलावल ॥ देखौ री ज
सुमति बौरानी ॥ घर घर हाथ दिखावति डोलत गोद लियें गो
पाल बिनानी ॥१॥ जानत नांहि जगत गुरु माधव इंहि आए द
नसानी ॥ जाकों नाम सक्ति पुनि ताकी ताकौं मंत्र देत पढि पा
नी ॥२॥ अखिल ब्रह्मांड उदर गत जाके जाकी जोति जलथल
हि समानी ॥ सूर सकल सांची मोहिं लागति जो कछु कही गर्ग
मुख वांनी ॥३॥ राग जैजैवंती ॥ खेलन जाउ मैया ग्वालिनी खि
जाइकें ॥ एक मेरो मुख चूमि उ बन बुलाइकें ॥ काछनी उना
रि लेत देत न हूं नचाइ कें ॥१॥ आसो हू चापि लेत गारी लाखी बिनो
इ कें ॥ देत मेरे हू वाकों गारी दीनी आयो हूं पराइ कें ॥२॥ भलीकी
नी मेरे लाल बलि जाउं कोटि मार छगन मगन मेरे छाती सों
लगाइ कें ॥३॥ मैया जू सों कहें बात सूर प्रभू तो मान रानी ज
सुमुसिकान वदन दुराइ कें ॥४॥ राग रामकली ॥ मैया मेरी कों
मारि चोरि लई हौं जु जात बन गाय चरावन सब मिलि मोहि
खिजाई ॥१॥ एक कहत है कान्ह तेरी का मारि जमुना जात बही
एक कहत मैं देखी अब ही बछिया खाय गई ॥२॥ एक कहत
मर्कट ने लीनी अजया भाजि गई ॥ सूर सुनत मुसिकाइ जसो
दा दाऊ सों रिस ई ॥३॥ राग सारंग ॥ मैया दाऊ बडो लबार ॥ मो
हि कहैं तू काहू कपट ढोटा तोहि सिर दार ॥१॥ ताकौं संग लि
यें बहू अपजस सब की दासी होय ॥ हौं बानी सुनि अति मकु
चाऊ तिनांहि द्या नहिं कोय ॥२॥ मैं तव पीठि फेरि के ढांढों तव
दाऊ रिस पायो ॥ तुम सें आय कही सब झूठी मोहन माटी
खायो ॥३॥ नंद ढक की पाछि कपि टेरी मो मूझो कपि पाई ॥ रिनरि

नप्रतिमोकोंप्रतित्रासितलकुटलियेकरधाई॥४॥सुनिहोरीके
प्रियवचनजसोदालीनोंहृदयलगाई॥अवककबहूंनहिंकां
हिहोंमोंहनतेरीलगोंबलाई॥५॥नंदमहरिघरयंहसुखनित
प्रतिकहांलगिवरनसुनाऊं॥सूरदासप्रभुकेगुणगावतनें
कुनहीपायोंअगाऊं॥६॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कं
धेप्रथमोध्यायः॥१॥जमुलार्जुनउद्धारन॥रागसोरठि॥न
सुमतिकरखेरजननकरखे॥गावतगोविंदचरित्रमनोहर॥ये
मपुलकिचितवारखे॥१॥उपननतखीरनीरविनुव्याकुलतबहीं
सुतहिछुरायो॥भाजनफोरिदहीसबढारौंमांखनभुवलें
पटायो॥२॥लेंकरिदांवरिजसोदारोरीबंधनकृष्णवनायो
द्वेद्वेअंगुलहीनजेवरीतातेंप्रभुनपायो॥३॥नारदश्रापभये
जमलार्जुनतिहिहितआपबंधायो॥सूरदासबलिजायज
सोदासांचेविरदहिबुलायो॥४॥रागविलावल॥ग्वालिउराहनों
भोरहीलाई॥जसोमतिकहांतेरोकुमरकन्हाई॥१॥भलेकों
मसुतहिपठाए॥वारहीतेंमूडचढाए॥२॥मांखनमथिभरिध
रीकमोरी॥अवहीसोंहरिलेंगयोचोरी॥३॥यहसुननैनसुम
निसिमानी॥कहांगयोंकहिहारगपांनी॥४॥खेलननैंऔंबक
हरिआए॥जननीवांहपकरिबैठाए॥५॥मुखदेखनतनवज
सुमतिजवजांन्यों॥मनिखनंबदनकहांलपटांनों॥६॥फिरिदे
खेतोंमखणिनपाये॥मातासुखचितवतनहिंआछे॥७॥चोरी
केसबभावबनाए॥मातासरियाहेंकलगाये॥८॥मांखनखा
तजातपरघरकों॥बांधोंतोंहिनेंकनहिंधरकों॥९॥बांह्यांदें
दृढनिफिरिडोरी॥बांधोंतोंभूसकेंकोछोरी॥१०॥बांधिपचीदां
वरिनहिपूरी॥वारवारखेंचनिरिसजूरी॥११॥घरघरतेंजेव
रीलेंआई॥मिसहीमिसकपिदेषनधाई॥१२॥कृतकतभईदे
खतठिगठाढी॥मानोंचित्रनलिखिलिखिकाढी॥१३॥जसो
मतिजोरजोरिजुबांधें॥अंगुलद्वैजेवरीधरिसांधें॥१४॥जब
जान्योंजननीअकुलानी॥आपुवधाएसारंगपांनी॥१५॥भक्त
हेतदांवरीवधाए॥जमुलार्जुनकीसुधिआए॥१६॥मातांहित
जननयसुखकारी॥जांनिवधाएश्रीवनवारी॥१७॥मुखजभाषि
भुवनारिखरायो॥चकृतकरितुरतहिविसरायो॥१८॥बांधि
स्यांमवाहिरलेंआई॥गोरसघरघरखातबुराई॥१९॥ऊषल

Brihanmandiradhishwar

स.सा. सोंगाहिबांधे कन्हाई ॥ नितहि उराहनों सह्यौ न जाई ॥ २० ॥ एक घर
३२. जात एक फिरि आवें ॥ रेंनि दिना तुमोहि न भावें ॥ २१ ॥ मांखन र
षि तेरे घर नांही ॥ धांम भरयो चोरी कमि षाई ॥ २२ ॥ नवलष धेनु तु
म्हारे घर मेरे ॥ केते गुवाल रहत नग घेरें ॥ २३ ॥ मषपति नंद घर सहू
स मषांनी ॥ ताके सुत चोरी कीं वांनी ॥ २४ ॥ मोसों कहत न आंकि
कनारी ॥ वा जात न नहि लाज निमारी ॥ २५ ॥ नंद महरि को कारतन
न्हाई ॥ बंध्यो देषें भुज ऊषल लाई ॥ २६ ॥ तुमरे गुण सबनी केंजा
नें ॥ नितब रजो कबहूं नहि मानें ॥ २७ ॥ केउ छुयो जिनि दृष्टि क
न्हाई ॥ बंध्यो देषे भुज ऊषल लाई ॥ २८ ॥ भवन कांम कों गई नंद
रानी ॥ आंमान छांडि स्यांम विनांनी ॥ २९ ॥ उराहने दें न गवारि जे
आई ॥ तिनें न सो दृगरि यों भुराई ॥ ३० ॥ चली सबें मिलि सो चतिम
न में ॥ स्यांम हि बांध्यो एक पलक में ॥ ३१ ॥ हसत चात ई कक हूं
कि नाही ॥ ऊषल सों बांधे सुत तांही ॥ ३२ ॥ दोरीर्घ नेंन चपल
आति ॥ बदन सुधा रस मीन करत गति ॥ ३३ ॥ कहा कहों वा छवि
की मांई ॥ कवी पार आहि करत लसाई ॥ ३४ ॥ कांन्ह बदन आतिहि
कुमिलानों ॥ मांनों कमल हेम रस सांनों ॥ ३५ ॥ यह सुनि ओ स्रु
वनी सब आई ॥ जसुमति बांधे क तांहि कन्हाई ॥ ३६ ॥ भली बुद्धि ते
रि कछु उपजी ॥ ज्यों ज्यों [illegible] भई त्यों त्यों निपुजी ॥ ३७ ॥ छोरहु स्यांम
कारहु मन लाहो ॥ [illegible] भई तुम काहो ॥ ३८ ॥ देष्यो स्यांम श्रो
रनं द रानी ॥ [illegible] र छो मन सारंग पानी ॥ वा हू बाधि सुत हि
बेछारो ॥ मषनि रही मांषन नो हि प्यारो ॥ ४० ॥ छांडि देउ यह जा
य मषानी ॥ सो हरि बावा वांति छो रो आंनी ॥ ४१ ॥ हांसी कारन सबें
तुम आई ॥ अब छोरो नहि कुवर कन्हाई ॥ ४२ ॥ तुमही मिलि सब
सवारवढायो ॥ उराहने दे दे मूंड पिरायो ॥ ४३ ॥ सबहि न गोध
न सों हरि वाई ॥ चितें रहे मुख कुंवर कन्हाई ॥ ४४ ॥ कब तुम कों
मैं बोलि बुलाई ॥ कि हि कारन तुम धाई आई ॥ ४५ ॥ यह सुनि
बहुरि चली विरफाई ॥ कहां करों वालि जाउ कन्हाई ॥ ४६ ॥ मूरख
कों कौतुक कहां सिखावें ॥ याकी मति कछु कहत न आवें ॥ ४७ ॥
नारि गई फिरि भवन आतुरी ॥ नंद घरनि अब वढई चातुरी ॥ ४८ ॥
ओछी बुद्धि जसोदा कीनी ॥ याकी जाति अबहीं हम चीनी ॥ ४९ ॥
यह कहि तिअपने घर आई ॥ मानें नहीं कितो समुझाई ॥ ५० ॥ म
षपति जसोदा दह्यो मषानी ॥ नवहि कान्ह ओसी मनि ठानी ॥ ५१ ॥

Brihanmandiradhishwar

भक्तहेत हरि अंतरजामी ॥ सुतकुवेर के दोऊ नामी ॥ ५२ ॥ हरि
अवतार कियो इहि कारन ॥ इनको दुख अबकरों निवारन
५३ ॥ जो जिहि ढंग हि ढंग सब लाये ॥ जमलार्जुन पें प्रभु आये
५४ ॥ दुहु बीच ऊखल लें अटक्यौं ॥ आगें निकसि नेंक गहि
पटक्यौं ॥ ५५ ॥ अररराइ दोऊ व्रछ गिरे धर ॥ अति आघात भ
यो ब्रजभीतर ॥ ५६ ॥ भये चकृत ब्रज के सब वासी ॥ दुहि अंतर
दोऊ कुवर प्रकासी ॥ ५७ ॥ संख चक्र कर सारंगधारी ॥ भक्तहेत
प्रगटे बनवारी ॥ ५८ ॥ देखि दरस मन हरख बढ्यौं ॥ तुमहीं वि
ना प्रभु कोंन सहाय्यों ॥ ५९ ॥ धनि ब्रज कृष्ण जहां वपु धारी ॥
धनि जसुमति जहां ब्रह्म अवतारी ॥ ६० ॥ धन्य नंद धनि धनि गो
पाल ॥ धन्य धन्य गोकुल के बाल ॥ ६१ ॥ धन्य गाइ धनि द्रुम ब
न चारी ॥ धन्य जमुना हरि करत विहारी ॥ ६२ ॥ धनि माखन चो
रत जदुराई ॥ धन्य सुजन ऊखल ढिग लाई ॥ ६३ ॥ धन्य स्याम भुज
कृष्ण वधाई ॥ धन्य उराहनों प्रातहि लाई ॥ ६४ ॥ गदगद वचन
कंठ मुख भारी ॥ मरन राखि लें गर्भ प्रहारी ॥ ६५ ॥ वार वार चरन
परें धाई ॥ कृपा करी भक्तन सुखदाई ॥ ६६ ॥ साधु साधु कहि श्री
मुख वांनी ॥ विस्राम भए हरि भांति बखानी ॥ ६७ ॥ जमलार्जुन
तारि पठाए ॥ नंद द्वार दोउ व्रछ गिराए ॥ ६८ ॥ निकसि जसो
दा आंगन आई ॥ दुहुं व्रछ नि विच बच्यौ कन्हाई ॥ ६९ ॥ दौरि प
रे व्रज के नरनारी ॥ नंद द्वार कछु होत गुहारी ॥ ७० ॥ देखें आ
नि वृछ दोऊ तर ॥ एगुन जसुमति आहि तुसारे ॥ ७१ ॥ तुरत
छोरि ऊखल ते लाये ॥ देषत जननी नेंन भराए ॥ ७२ ॥ व्रज रे
बको ऊ टूंटी माई ॥ जहां तहां विधि होत सहाई ॥ ७३ ॥ प्रथम
पूतना मारन आई ॥ पयपीवन लै तहीं नसाई ॥ ७४ ॥ तृणाव
र्त लें गयो उडाई ॥ आपुन गिर्यो सिलापर आई ॥ ७५ ॥ कागा
सुर आवत नहि जांन्यो ॥ नेंन माहृत जिय लेय पराने ॥ ७६ ॥ स
कटासुर पलना ढिग आयो ॥ को जाने किहि ताहि गिरायो ॥ ७७
खेलत में केसी इनि मार्यौ ॥ ग्रीव तोरि वहु धरनि पछार्यौ
७८ ॥ वाछन के संग गये उचारन ॥ तहां वकासुर लाग्यो मारन
७९ ॥ कौन कोंन करव रहें रारे ॥ जसुमति वांधि अजर लें डोरे
८० ॥ बहुतें उखल्यौ आजु कन्हाई ॥ ऊपर व्रछ गिरे फहराई ॥
८१ ॥ कहां कहेंन कहु तिबनि आवे ॥ तुरत आइ हरि कोंन व

सू.सा. चावैं ॥ ८२ ॥ सषहा पेलष करत मन भाई ॥ पुन्यनंदके वचे कन्हाई
३३ ॥ ८३ ॥ मुष चुंवति लेलें उरलायें ॥ जुवतिन विकिये आप मन भाए
॥ ८४ ॥ जननी लैं सुतकं ठलगावति ॥ वोपी की वानें समुझावति
॥ ८५ ॥ मेरी महरि सिकरत लालसों ॥ वुध वांधेमें दूसन ष्याल
सों ॥ ८६ ॥ मैं वांधे तुम करत अचगरी ॥ उराहनें कों ठाढी रहीस
गरी ॥ ८७ ॥ वारवार तन देषत माई ॥ गिरते वृक्ष कहूं चोट न
आई ॥ ८८ ॥ कहूंन स्यांम में अति हि डरानों ॥ ऊषल तर में हि ष्यो
छिपानों ॥ ८९ ॥ वोतसुता हि पूछति नंदरानी ॥ कांन्ह कहीस
षडरि वें वांनी ॥ ९० ॥ हरि के चरित्र कहां कोऊ जांनें ॥ जसोमति
अति वालक करि मांनें ॥ ९१ ॥ अषिल व्रह्मांड जीव के दाता
मांषन कों वांधति है माता ॥ ९२ ॥ गुन अपार अविगत अवि
नासी ॥ सो प्रभु घर घर घोष विलासी ॥ ९३ ॥ ऊषल वांध्यौ है
त भक्तके ॥ राई माता राई पिता जगत के ॥ ९४ ॥ जमुलार्जुन मो
षकराए ॥ पुत्र हेत जसोदा घर आये ॥ ९५ ॥ ऐसे हरि जनकों
सुषकारी ॥ परघट रूप चतुर्भुज धारी ॥ ९६ ॥ जो जिहि भाव भ
जे हरि तैसें ॥ प्रेम वस्य दृष्टन मों जैसें ॥ ९७ ॥ सूरदास यह ली
ला गावें ॥ कहत सुनत सव के मन भावें ॥ ९८ ॥ जो हरि चरित्र
ध्यांन उर राष्यों ॥ आनंद सहित दुरित दुष नाष्यों ॥ ९९ ॥ रा. सो
रठि ॥ जसोमति कहति करि रजो कर सें ॥ सुनहि तक्रोध देषि
माताके मन हरि मनहरि हरषे ॥ १ ॥ उफनत षीर जननी अ
ति व्याकुल इहि विधि भुजा छुडायो ॥ भाजन फोरि दही सव
षायौ माषन भुव लपटायो ॥ २ ॥ लें आई जेवरी अव वांधों
गर्व जांनि नवध्यायों ॥ अयुरी दें घट हे इसव नसो पुनि
पुनि औरमगायो ॥ ३ ॥ नारद श्राप भये जमलार्जुन इनकों
अव जु उधारों ॥ सूरदास प्रभु कहत भक्त हित जन्म जन्म
तन धारौं ॥ ४ ॥ राग सोरठि ॥ जाहु चली अपने अपने घर ॥ तु
म सव हि मिलि ढीठ करायो अव आई वंधन छोरन पर ॥ १ ॥
मोहि अपने वावा की सों कांन्ह हि अव न पत्याऊं ॥ भवन
जाहु अपने अपने सव लागति हैं मैं पाऊं ॥ २ ॥ मोकों जिनि
वरजौं कोऊ जुवती देषौं हरि के ष्याल ॥ सूर स्यांम कों कह
ति जसोदा वडे नंदके लाल ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ वांधों आजु कौं
न तोहि छोरैं ॥ वहुत लंगरियों कीनी मोसों भुज गहि रजऊ ष

Brihanmandiradhishwar

लसोंजोरें ॥१॥ जननीअतिरिसजांनिवधाएचितेंवदनजल
लोचनटोरें ॥ यहसुनिसवव्रजजुवतीआईकहतकांन्हअ
वकौंनहिछोरें ॥२॥ ऊखलसोंगहिवांधिजसोदामारनकोंसां
टीकरतोरें ॥ सांटिदेखिग्वालिनपछितांनीविकलभईजिहि
तिहिमुखमोरें ॥३॥ सुनोंमहरिऐसीनवूझियेसुतवांधतिमां
खनदधिथोरें ॥ सूरस्यांमकोंवहुतसतायोंचूकपरीहमतें
यहभोरें ॥४॥ रागनट ॥ जसोदातेरोमुखहरिजोवें ॥ कमलनें
नहरिससिकनरोवें ॥१॥ जोनेरोंसुतखरोअचगरोंतऊकूखि
कोंजायों ॥ कहाभयोंजोघरकेढोटाचोरीमाखनखायों ॥२
तुरतरोंहनीरदयोंजमायोंचाखिनपूजनपायों ॥ ताघरदेख
पितरकाहेकेजांघरकांन्हरआयों ॥३॥ ताकोंनामलेतदु
खदूरैंकैसेंवंदसवकाटे ॥ सोईप्रभुजेवरीवांधोंजननी
सांटिलेंडाटे ॥४॥ सूरदासप्रभुभक्तहेततनेदेहधारिकेंआयों
दुखितजांनिदोऊसुतकुवेरकेऊखलआपुवधायों ॥५
रागधनाश्री ॥ जसोदातेरोंकठिनहियोंरीमाई ॥ सुंदरस्यांम
कमलदललोचनवांधेऊखलआई ॥१॥ जोमूरतिजलथ
लमेंव्यापकनिगमनषोजतपाई ॥ सोमूरतितेंअपनेआं
गनचुकटीदेंजुनचाई ॥२॥ जोमूरतिदेवनकोंदुर्लभशिव
श्रुधिविसराई ॥ पाहीतेंतूगर्वकरतिहैंघरवेठेंनिधिआई
३॥ औरनिकोंसुतनिवतदेख्यौंदौरिलेतउरलाई ॥ यहतोंहै
घरहीकोंढोटासोवयोंनिठुराई ॥४॥ सिवुकसिचूकसज
नदेऊलोचनचितवतकुवरकन्हाई ॥ कहाकरूंवलिछोरि
देतहोंमोकूसोंहहरिवाई ॥५॥ सुरपालकअसुरनउरसालक
त्रिभुवनजाकेंराई ॥ सूरदासवलिवलिचरननकीहिता
सोंकहांवसाई ॥६॥ रागसोरठि ॥ जसोदावडीकृपनिहैंमाई
दूधदहीवहुविधिकोंदीनोंसुतसोंधरतिदुराई ॥१॥ बाल
कतेरेवहुतनदेखेएकेंकुवरकन्हाई ॥ सोऊतोंघरघरहेंडो
लतमांखनखांतचुराई ॥२॥ वृद्धवेंसपूरेपुण्यनतेमहरिम
हानिधिपाई ॥ ताहूकेखेवेकेकारणकहांकरेंचतुराई ॥३
सुनिसुनिवचनचतुरनागरिकेनंदनारिमुसिकाई ॥ सूर
दासप्रभुकेदेखनकोंयहविधिसवनवारिनीआई ॥४॥ राग
सोरठि ॥ जसोदाऐसोंनवूझियेंकांम ॥ कमलनेंनकेवछरु

Brihanmandiradhishwar

सू.सा. रिवन हूं बांधे ऊखल दांम ॥ ४ ॥ पुत्र हू ते प्रीतम कोउ नाही कु
३४ लदीपक मनि धांम ॥ देखत बदन कमल कुमिलानो तू निर
मोही बांम ॥ ५ ॥ हरि परिवार उगरि तन मन धन अरु गोरस अरु
ग्रांम ॥ तू अपने मंदिर में बैठी हरि आंगन में घांम ॥ ६ ॥ यह तो
आदि जगत को पोषक पतित पावन जाको नांम ॥ सूरदास
प्रभु भक्तन के बस यह बांनी घनस्यांम ॥ ७ ॥ राग मलार ॥ जब
ते बांधे ऊखल दांम कमलनैंन बाहर हूं न दये ॥ तब ते बैठि हूं धाम
१ हूं निरदई दया तोहि नाही लागति है अति घांम ॥ देखि बु
धा रे मुख कुमिलाने अति कोमल तन स्यांम ॥ २ ॥ छूटि देखि
धो कितीवार भई बीते है द्वै जांम ॥ तोहि दया अजहू नहि आव
त गोरी जसोदा बांम ॥ ३ ॥ तेरे त्रास निकट नाहि आवत बोलि
सकत नाहि रांम ॥ सूर भक्त बस आपु बधायो सुत कुबेर के
कांम ॥ ४ ॥ राग नट ॥ कहैं तो मांखन ल्यावें घरते जाकार
न तुम छांडत नाही लकुट न डारत कहत ॥ १ ॥ देखि जसोदा बद
न कमल को सोभा बटी जु तेरे हित ॥ ज्यों जलरुह ससि र
स्मि पाय कें फूलत नाहिं सरद ॥ २ ॥ सुनि जसोमति ऊखल बां
धति हरि गिरा न निकसी आरते ॥ सूरदास प्रभु त्रास पर हरों
आसु बुवन उर परते ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ कहन लगी जसोमति
तब बात ॥ ढोटा मेरो तुम ही बधायो नेकहि मांखन खात ॥ १ ॥
अब मोहि मांखन देत मगाई मेरे घर कछु नाहि ॥ उरहने कहि
कहि सांझ सबारें तुम ही बधायो ताहि ॥ २ ॥ रिस ही में मोको ग
हि दीनो अब लागी पछितानि ॥ सूरदास अब कहति जसोद
बूझो सब को ज्ञान ॥ ३ ॥ राग नट ॥ कहां भयो जो घर के लरिका
चोरी मांखन खायो ॥ अहो जसोदा कित त्रासति है यह कूखि
को जायो ॥ १ ॥ बालक अजो अजानन जानें केतक दही लुटा
यो ॥ तेरो कहा गयो गोरस को गोकुल अंत न पायो ॥ २ ॥ लेलें
लकुट त्रास दिखावति आंगन पास बधायो ॥ रुदन कर
त दोऊ नैंन रचे हैं मनो कमल कन छायो ॥ ३ ॥ पोंछि रहे धरनी
पर तिरछे नैन ललित बदन सुरभायो ॥ सूरदास प्रभु रसिक सि
रोमनि हंसि कर कंठ लगायो ॥ ४ ॥ राग कल्यान ॥ कुबज जल
लोचन भरि भरि लेत ॥ सुंदर बदन बिलोकि जसोदा कित रिस
करत अचेत ॥ १ ॥ छोरि उदर ते दुसह दांवरी डारि कठिन कर बेत

Brihanmandiradhishwar

काहेधोंतोहिकरिवोश्रावैसिसुपरतामसएन॥२॥मुख
माखनअरुश्रासूकेकननिरखिनैनछविरैन॥ मनुस
सिस्रवतसुधाकोंअंवुजउडगनअवलिसमेत॥३॥नाजा
नोंयहकोंनपुन्यतेभएव्रजललनानिकेत॥ तनमनध
नन्योछावरिकीजेंसवैसूरकेहेत॥४॥१॥राग केदारो॥ हरिके
वदनननधोंचाहि॥ तनककरधिकाएणजसोमतिझोंकुरा
हिसाइ॥१॥लकुटकेंडरडरतेंऐसेंसजलसोभतडोल॥ नि
लनीपजदलमनोंश्रालिश्रासकनकृतलोल॥२॥वालवा
सनिनजानिजैसेंप्रानपंकजकोस॥ नमितमुखइमिअध
रसोहेंसकुचमेंकछुरोस॥३॥कितककगोरसहांनिजाकोंक
रतिहेंअपमान॥ सूरऐसेवदनऊपरवारियेतनप्रान॥४॥
२॥राग विलावल॥ मुखछविदेखिहोंनंदघरनि॥ सरदनिसिकों
अंसअगनितइंदुआभाहरनि॥१॥ ललितश्रीगोपाललो
चनलोलश्रासूढरन॥ मनोंवारिजविलखिविभ्रमपरेप
रवसपरन॥२॥कनककमनिमयमकराकृतकुंडलजोतिजगमग
करन॥ मित्रमोचनमनोंश्राएतरलगतिदोउतरनि॥३॥
कुटिलकुंडलमधुपमिलिमनुकियोंचाहतलरन॥ वदन
कांतिविलोकिसोभासकलसूरनिरवरनि॥४॥३॥राग सारंग॥
हलधरमोंकहिग्वालिसुनायो॥ प्रातहीतेरोलघुभैयाजसुम
तिऊखलवांधिलगायो॥१॥काहूकेलरिकहिहरिमार्योभो
रहिश्रांनितुमेंगुहरायो॥ तवहींतेवांधेहरिवैठेसोहमतुमकों
श्रांनिजनायो॥२॥ हमवरजीवरज्योंनहिंमांनततसुनतहि
लश्रातुरहेंधायो॥ सूरस्यामवेठेऊखललगिमातनडरनि
श्रतिहींतरसायो॥३॥२॥राग सारंग॥ यहसुनिकेंहलधरतहांश्रा
यो॥ देखिस्यांमऊखलसोंवांधेतवहीदोउलोचनभरिश्राए
॥१॥मैंवरज्योंकेवेरकन्हैयाभलीकरीजवहांपववधाए॥ श्रज
हूंछांडोगेलगराईदोउकरजोरिजननिपेंश्राए॥२॥स्यांमहि
छोरिमोहिवरवांधोनिकसततसगुनभलेनहिंपाये॥ मेरों
प्रांनजीवनधनकान्हातिनकेभुजमोहिवंधाहिवाये॥३॥
मातासोंकहांकरोंढिठाईशोषरूपकहिनामसुनाये॥ सूर
दासतवकहतिजसोदादोऊभैयातुमएकमनपाये॥४॥
३॥राग सारंग॥ सुनोवातमेरीवलिरांम॥ करननेंहुमोहिइन॥

Brihanmandiradhishwar

कीपूजाचोरीप्रगटतनांम॥१॥तुमहीकहौंकमीकाहूंकीनव
निधिमेरेधांम॥मेंवरजतिसुतजाहुकहूंजिनिकह्यौहरिनिस
वासरजांम॥२॥तुमहिमोहिंअप्राधलगायोमाखनप्यारे
स्यांम॥सुनिमैयातोहिंछांडिकहोंकिहिराखेंमेरौनांम॥३॥तेरी
सौंउराहनोलैंआवतिझूठौव्रजकौवांम॥सूरस्यामअतिही
अकुलानेकबकेबांधेदांम॥४॥१॥सारंग॥कहांकरौंहरिब
हुतखिजाई॥सहिनसकीरिसहीभरिगईमेंवहुतेटोकनहा
ई॥मेरौकह्यौनेंकनहिमांनतकरतआपुनीटेक॥भोरहोत
उराहनेलैंआवतव्रजकेवधूअनेक॥२॥कालडरतजाकेड
रभारीसुरनरअसुरजितेक॥सूरस्यामत्रिभुवनकौकर्त्ताभा
तकहततजिनिएक॥३॥१॥रामकली॥जसोदांऊखलवांधे
स्यांम मनमोहनवाहिरहींछांडेआपगईगृहकांम॥१॥देह्यौं
मथतिमुखनेंहूंकरतिगारीदेंदेनांम॥घरघरडोलतमांख
नचोरतखटरसमेरेधांम॥२॥वृजकेलरिकनिमारिभज
तहैंजाहुतुमहिंवलिरांम॥सूरस्यामऊखलसौंवांधेनिरख
तव्रजकीवांम॥३॥१॥सो॥निरखिस्यांमहलधरमुसिक्यां
ने कौवांधेकोछोरेंइनकौयहमहिमायेईयेजांनें॥१॥उतप
तिप्रलयकरतहैंयाईशेषसहसमुखसुजसवखांनें॥जम
लार्जुनतोरितारनकारनकरनसवेंमनमांनें॥२॥असु
रसंघारनभक्तनतारनपावनपतितकहांवतवांनें॥सूर
दासप्रभुभावभक्तकेअतिहितजसुमतिहाथविकांनें॥३॥
१॥सोरठि॥काहेकौंएतोंहरित्रास्यौ॥सुनिरीमैयामेरैभैया
केतकगोरसनास्यौ॥१॥जवरजमोकरगाढौवांध्यौछिरछि
हमारीमारी॥सूनेघरवाव्वानंदनांहीऐसेंकरिहरिडाटी॥२॥
औरनकछुदेखेंस्यामहिंताकौकरौंनिपात॥जोईजोईकरें
सोईसोईसांचीकहांकहैंतोहिमात॥३॥गाढेवदनवातसव
हलधरमांखनप्यारोंतोहि॥जनप्यारोजाकौमोहिगारौछो
रतकाहेनजोहि॥४॥काकौंव्रजमांखनदधिकाकैंकौंवांधे
जकरिवलांई॥सुनतसूरहलधरकीवांनीजननीसैंनवता
ई॥५॥१॥गौरी॥जसोदाकांन्हतेदधिप्यारौ॥डारिदेहुकरि
मथितमथानीतरसतनंदकुलारौ॥१॥दूधदहींमांखनलैंवा
रौंजाहिकरततुगारौ॥कुम्हिलानौमुखचंददेखिछविकाहे

Brihanmandiradhishwar

ननेंकनिहारों ॥२॥ ब्रह्मसनकशिवध्यानननपावतसोह्व जसोयन
चारों ॥ सूरस्याम पर वलि वलि जैयें जीवन प्रान हमारो ॥३॥ रा
ग गुजरी ॥ जसुमति कान्ह यह सीख दई ॥ सुतहि बांधि तू मथनि
मथानी ऐसी निठुर भई ॥१॥ हरें बोलि जुवतिन को लीनों तुमस
व नहुन नई ॥ लरकहि त्रास दिखावत रहियो कि नसु रझाय गई
॥२॥ मेरे प्रानन जीवन धन माधौं बांधौ वैर भई ॥ सूरस्याम को त्रा
स दिखावति तुम कहा कहत नई ॥३॥ राग विलावल ॥ दयों वि
लोवत हें नंदरांनी ॥ हरि लीला चितननें विसरानी घृत लालच
मन आनी ॥१॥ सोम्हि नारि सवके मन मोहन चलि घुटरुन ठि
ग आए ॥ न सोमति गोद लियें सुख पायो दूध अगिन उफनाए
॥२॥ धरि हरि भूमि धाय के गई तहां रूध रह्यौं न कोई ॥ हरि रिस
कीं दधि भाजन फोर्यो भाजि धसे घर सोई ॥३॥ मांखन लें स
व तुरत लुटायों वन चर पेट अघायो ॥ आपन मो रादे षिरहि (?)
कों मन में अति रस पायो ॥४॥ लकुटी लें हरि के ढिग आछि पिकें
जाय पकरि नवलीन्हों ॥ छिवकी लें दांमरु रनाकियो तव लकु
ट डारि कर दीन्हें ॥५॥ पुनि छुडाय भज्यो हरि तव ही दौरि हरि केपा (?)
छें वेणी छुरि गई श्रम पायो तुसम गिरन पद आछें ॥६॥ मांनि
हारि गयो तव मोहन लें नेती वांधन मन कीनों ॥ अगुली दोय
घटन वहु जोरन हारि नवलीनों ॥७॥ भक्तवछल वंधन में आ
ये यह जस प्रगट दिखायो ॥ ज्ञान जोग करि वहुतन जोरे ध्यान
हियें नहि आयो ॥८॥ भक्तनवस यह विरद वढायो ऐसें दीनद
याल ॥ सूरदास हरि के गुण सुमिरत सुख पायो येहि काल ॥९॥ ए
इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कंधे नवमध्यायः ॥९॥ राग गो
री ॥ हरि चितए जमलार्जुन तन अव ही आइ इनें उद्धारों सई
हें मेरे निज जन ॥१॥ इनके हेत भुजा जु वधाई अव विलंव नहि
लाऊं ॥ परस करों तन तरू हि गिराऊ मुनिवर श्राप मिटाऊं ॥२
इहि सकुमार वहुत दुख पायो सुवकुवेर के नारो ॥ सूरदास प्र
भु कहत मनमें मन कर वंधन निरवारो ॥३॥ राग धनाश्री ॥ तव ही
स्यांम एक वुद्धि उपाई ॥ जुवती गई घरनि सव अपनें गेह काज
जननी अरवाई ॥१॥ आपगए जमलार्जुन तारन परसत पात
उठे झहराई ॥ दएगिराइ धरनि दोऊ तरू सुत कुवेर के प्रगटे
आई ॥२॥ हेदुक (?) कर जोरि करत दोऊ अस्तुति चारि भुजा धरि प्रग

Brihanmandiradhishwar

सू.सा. हरिखाई॥ सूरसुधनि व्रजजन्म लियो हरि धरनी कों आंपरान
३६ साई॥१॥राग धनाश्री॥ यहजांनि गोपाल वधायो॥ आपरग्धदेसु
नकुवेरके आंनि भए तरू जुगल सुहाए॥ याजरूदनलोचन
जलधारन ऊखल दांम सहित चलि आए॥ खेंचि ताहि जम
लार्जुन तारे करि स्तुति गोविंद रिझाए॥ तुम विन कोंन दीन
खलतारें निर्गुण सगुन रूप धरि आए॥ सूरदास स्यांमगुन
गांवत हरखवंत निजपुरी सिधाए॥२॥राग कांन्हरो॥ धन्यध
न्यरिषि आप हमारे॥ आदि अनादि निगम नहि जांनत ते हरि
प्रगटे देह व्रजधारे॥ धन्य नंद धनि मात जसोदा धनि आंगा
न खेलत दोउ वारे॥ धन्य स्यांम धनि दांम वधाए धनि ऊख
ल धनि मांखन प्यारे॥ दीनवंधु करुणानिधि हो प्रभु राखिले
हु मम सरण तुम्हारे॥३॥राग विलावल॥ धनि गोकुल जहां गो
विंद आए॥ धनि धनि नंद धन्य निसवासर धनि जसुमति जि
न गोद खिलाए॥४॥ धनि धनि वाल केलि जमुनातट धनि व
न सुरभी वृंद चराए॥ धनि यह समौ धन्य व्रजवासी धनि ध
नि वेनु मधुर सुर गाए॥२॥ धन्य धरा ऊखल तर गोविंद हमहूं
धनि जिन भुजा वधाए॥ धनि धनि नरखान उराहनों धनि धनि
मांखन जो मोहन खाए॥३॥राग रामकली॥ तरुन दोऊ धरनि
गिरे फहराई॥ जरसहित अरर अराइ के आघात शब्द सुनाई
॥ भये चकृत नंद नारी व्रज के सकुचि रहे डराइ॥ कोऊ तो आंका
स देखत कोऊ रहे सिर नाइ॥२॥ घरी कलों सव गये जकसे र
हे गति विसराइ॥ निरखि जसोमति अजर देखें नहीं वधे कन्हा
इ॥३॥ व्रष दोऊ धरगिरे देखे महरि करी पुकार॥ अवहि औ
गुन छाड़ि आई छप्यो नरू की डार॥४॥ में अभागिनि वांधिआ
खि नंद प्रांन अधार॥ सोर सुनि नंद द्वार आए विकल गोपी
ग्वार॥५॥ देखि तरु मन अतिडराने हैं वडे विस्तार॥ दहुन तर
विच स्यांम वेठे रहे कुषल भार॥६॥ भुजा छोरि उठाय लीनों चो
ट जिनि कहूं लागि॥ कवहूं वांधति कवहूं मारति महरि वडी
अभागि॥७॥ नेंन जल भरि धार जसुमति सुत हि कंठ लगाइ
जले रस निजि न तुमें वांध्यौ लगे मोहि वलाइ॥८॥ नंदसुनि
हूं कहां करि हैं देखि तरु दोउ आइ॥ मेंमरों तुम कुसल सों पु
नि रहों दोऊ भाइ॥९॥ आय जो घर नंद देखत रु गिरे दोऊ वार

Brihanmandiradhishwar

बांधि राखति सुत हि मोहे न महरि हि गारि ॥ २ ॥ नातकहि नव
स्यांम धाम महरि लए अंकवारि ॥ कैसें उवरे ह्वतन रते सुर
गण बलिहारि ॥ ३ ॥ राग जैतश्री ॥ मोहन हैं तुम ऊपर वारी ॥ कं
ठ लगाय कियो मुख चुंवन सुंदर स्यांम मुरारी ॥ १ ॥ काहे दाम रू
ऊखल बांधे कैसी महरि नारी ॥ अति हि उतंग बयारि न लागी
टूटे वौ द्रुम भारी ॥ २ ॥ वारंवार विचारि जसोदा यह लीला अव
तारी ॥ सूरदास स्वामी की महिमा कैसें जात विचारी ॥ ३ ॥ राग सा
रंग ॥ अव घर काहू के जिन जांहु ॥ तुमरे आजु कमी काहे की ॥
कित तुम अनत हि षाहु ॥ १ ॥ वरजे वारी जिन तुम बांधे कुमर
कन्हाई ॥ सूरदास प्रभु षात फिरो जिन मांषन तुम ही धांम ॥ २ ॥
राग सारंग ॥ व्रज जुवती स्यांम हि उरलावति ॥ वारंवार निर
खि कोमल तन कर जोरति विधि को जु मनावति ॥ १ ॥ कैसें व
चे अगाम तरु के तर मुख चूंवति यह कहि समुझावति ॥ उराह
ने लै आवन जिहि कारण सो सुख को फल पूरन पावति
२ ॥ सुनो महरि इन कौं तुम बांध्यो भुज सों मोहि वंधन चिन्ह दिखा
वति ॥ सूरदास प्रभु अति रति नागरि गोपी हरषि हृदै लपटा
वति ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ भूखौ भयो आजु मेरे वारौ ॥ भोर हि ग्वारि
उराहनो लाई उन यह कियो पसारो ॥ १ ॥ पहलें रोहिनी सों कहि
राख्यों तुरत करो जेवनारि ॥ ग्वाल ग्वाल सब वोलि लए मिलि
वैठे नंद कुमार ॥ २ ॥ भोजन वेगि ल्यावो कछु माई भूष लगी मो
हि भारी ॥ आजु सवारें कछु न खायो सुनत हसी महरि नारी ॥ ३ ॥
रोहिनी चितै रही जसुमति तन सिर धुनि धुनि पछितानी ॥ प
रसौं वेगि वेर कति लावति भूखौ सारंग पानी ॥ ४ ॥ वहु विंजन
वहु भांति रसोई षटरस के परकार ॥ सूर स्यांम हलधर दोऊ भै
या औरस खा सव ग्वार ॥ ५ ॥ राग कान्हरो ॥ मोहि कहति जुवती
सव चोर ॥ खेलत कहूं रहों मैं वाहिर चितै रहति सव मेरी ओ
र ॥ १ ॥ वोलि लेति भीतर घर सुख चुंवत भरि लेति अकोर ॥ मा
खन हेरि देत अपने कर कहि कें विधि करनति होर ॥ २ ॥ जहां
मुख देखति तहां इरे रति मैं नहि जात हहाई तोर ॥ सूरस्याम
हसि कंठ लगायो वे तरुनी कहां वालक मोर ॥ ३ ॥ राग कान्ह
रो ॥ जसुमति कहत कान्ह सों मेरे आंगन ही तुम खेलो ॥ वो
लि ले हु सव सखा संग के मेरो कह्यो कहूं जिनि पेलो ॥ १ ॥ व्रज

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ वनितासवचोरकहतितुहिलाजनसकुचिजातमुखमेरो
३२ आजुमोहिवालिरांमकरतहैंरुहोंनाउधरनिहैंतेरो ॥२॥ ज
वमोहिरिसलांगातितवत्रासनिवांधतिमारनजैसेंचेरो
सूरहसनगवारिनिरेंतपीचोरनाउतुमकेसेंउफेरो ॥३॥ रा
ग भै तश्री ॥ निगमसाररेषोंगोकुलहरि ॥ जाकोंदरसदेव
नकोंदुर्लभसोवांध्योंजसोदाऊखलधरि ॥१॥ वुटकीदैदै
ग्वारिनिचावतिनांचतकांन्हवहुलीलाकर ॥ जाउरभ्रमतपव
नरविससिजलसोंकरेटहलकुटियाकेडर ॥२॥ छीरसिंधु
सेंनसंततिहरिमागतदूधपतुषनिरेंभर ॥ सूरदासप्रभु
गुणकेगाहकयहरसगायअनेकगएतरि ॥४॥ रागसोरठि
जाकोंब्रह्माअंतनपावें ॥ तासोंनंदकीनारिजसोदाघरकी
टहलकरावें ॥१॥ सेषसनकनारदगणेसमुनिजाकेगुणनि
तगावें ॥ निसवासरषोजतपचिहारेमनसाध्यांननआवें
॥२॥ धनिधनिगोकुलधनिवनितातासोंनिरषतस्यांमवधावें
सूरदासप्रभुप्रेमहिकेवससंततहरिरसदिषावें ॥३॥ रागम
लार ॥ तेराईस्वरूपनिगमनेतिनेतिगावें ॥ भक्तकेवस
स्यांमसुंदरदेहधरेंआवें ॥१॥ जोगीजनध्यांनधरेंसुपनेहूं
नाहिपावें ॥ नंदघरिवांधिवांधिकापिनज्योंनचावें ॥२॥ गो
पीजनप्रेमआतुरतिनकोंसुखदीनों ॥ अपनेअपनेसुख
विलासकांन्हचीन्हों ॥३॥ सुरनिसमनिसवपुरानकहत
मुनिविचारी ॥ सूरदासप्रेमकथासवहीतेंन्यारी ॥४॥ रागसा
रंग ॥ सुतकुवेरकेहैंमदअंध ॥ सिवअनुचरकैलासनिकट
हीसंगवहुनारिकरतसुखमंध ॥१॥ मदपीयेंसवनगनतहां
हेंनारदतहांचलिआए ॥ तियालजीपटलियेंतुरंतहियें
दोऊसुधिविसराए ॥२॥ मतिनासकधनकहिनारदमुनि
धनसमऔरनकोई ॥ धनतेंनिरैजीवहमारेंइंद्रीविक
लयाहितेंहोई ॥३॥ धनविनुदेहछीनह्वैजवहीइंद्रीवलन
हिपावें ॥ तवसवमेंयहप्रीतिकरेंरुचिहरिकेपरमनला
वें ॥४॥ तातेदोऊतुमहोयवृक्षह्वैहरिकरुनाकरिसोई ॥ करेंउद्धा
रज्ञाननतवपेंहोपुनिमदहोइनकोई ॥५॥ तिनपरकृपाकरन
मनमोंहननिकटतहांचलिआए ॥ ऊखलवांधिउपारिहरितव
हीवृछहितुरतगिराए ॥६॥ दोऊपुरुषअपनिकीनाईप्रगटहे

यसिरनायो॥करिअस्तुतिबहुभांतिप्रीतिसोंबहुप्रकारगुन
गायो॥७॥मुनिनारदप्रतिकृपाकरीमोहिप्रभुकेदरसनपायो
हरिफुखरेखिगयोनिजलोककहिनंदरैरिनबंधआयो॥८॥ने
नीछोरिलियोंहरिकनियांप्रभुरोहिकीनो॥जसुमतिअति
मनमांहिडरानीदोन्यवहुतविधिदीनो॥९॥तवलरिकनपरु
वातकहीसवहरिदेफलछुगिराये॥पामेंतेंदेप्रगटव्हेवि
नतीकरतसिधाए॥१०॥सुनतवचनकिनहूंनहिमान्योव्र
जवासीसववाल॥सूरदासहरिकीयहलीलामोपेंकहीन
जात॥११॥इतिश्रीभागवतेदसमस्कंधेएकादसाध्यायः॥११॥रागसा
रंग॥महरिमहरिकेमनयहआई॥गोकुलहोतउपद्रवनित
प्रतिवसियेंवृंदावनअववजाई॥१॥सवगोपनमिलिसक
टासाजेसवहिनकेमनमेंयहभाई॥सूरजमुनतटडेरारि
नेपांचवरषकोकुंवरकन्हाई॥२॥रागविलावल॥जागोहोतु
मनंदकुमार॥होंवलिजाउंमुखारविंदकीगोसुतमेलेखि
रिकसभार॥१॥वेरहिवेरजगावतमाताअंवुजनेंनभयोंभि
नसार॥अवलोकहोंसोएमनमोहनओरवारतुमउठनस
वार॥२॥दधिमथिकेमांखनवहुदीनोंसकलग्वालठाढेद
रवार॥उठिकेंमोहनवदनदिखावहुसूरदासकेप्रानअधा
र॥३॥रागविलावल॥जागोलालग्वालतोहिटेरत॥कवहूंपी
तांवरडारिवदनपरकवहूंउघारिवदनतनहेरत॥१॥सोव
तमेंजागतमनमोहनवातसुनतसुवकीअववेसेरत॥वार
वारजगावतमातालोचनखोलिपलकपुनिफेरत॥२॥पु
निकहिउठीजसोदामैयाउठोंकान्हरविकिरनउजेरत॥सू
रस्यांमहसिचितेंमातमुखपटकरलेंपुनिपुनिमुखफेरत
३॥रागविलावल॥जननीजगावतिउठोकन्हाई॥प्रगटोत
रनकिरनजगछाई॥१॥आवहुचंदवदनदिखराई॥वार
वारजननीवलिजाई॥२॥सखाद्वारसवतुमेंवुलावत॥तुम
कारनहमधाएआवत॥३॥सूरस्यांमउठिदरसनदीनों॥
मातादेखिमुदितमनकीनों॥४॥रागरामकली॥दउडूक
हिस्यांमपुकार्यों॥नीलांवरकरिऐचिलियोंहरिमनवार
रतेचंदउजार्यों॥१॥हसतदेखवाहरआयेमातालेजलवद
नपखार्यों॥दतवनिलेहुकरीमुखवारीनेंननकोंआलस

सू. सा. तुविसाह्यौं ॥ २ ॥ मांखनखाउदूहूं करदीनों तुरतमथ्यौं मीठौ
३९ अतिभायौं ॥ सूरदास प्रभु बात परस्पर माता अंतर है तवि
चाह्यौ ॥ ३ ॥ वधासुरवध ॥ राग देवगंधार ॥ वछरा चारण चले
गोपाल सुवलसुदामा अरु श्रीदामा संगलिये सवग्वाल ॥ १
वछरनकों वनमांझ छांडि सव खेलत खेल अनूप ॥ दनु
ज एक तहां आनि पोहोंच्यौं धरें वत्सकौं रूप ॥ २ ॥ हरि हलध
र दिसचितेंकह्यौं तुम जानत हौं इहि वीर ॥ कहौं आहि दांनव
इहि मार्यौं धार्यौं वत्स सरीर ॥ ३ ॥ तव हरि सींग गहीं इक क
रसों इक कर सों गह्यौं पाइ ॥ थोरकही वेलसों छिनभीतर
दीनों ताहि गिराइ ॥ ४ ॥ गिरत धरनि यह प्रान निकसि गए
फिरि नहीं आयौं स्वास ॥ सूरस्याम ग्वारन संग मिलिकें ला
गे करन विलास ॥ ५ ॥ श्री वृंदावनकी लीला वकासुरव
ध ॥ राग सारंग ॥ वनवन फिरत चारत धेनु स्याम हलधर सं
ग संगा वहु गोप बालक सेंन ॥ १ ॥ त्रिषित भए जब जांनि मोंह
न सघन टेरत वेंनु ॥ वोलि ल्याए सुरभी गन सव चले जमु
न जलदेंनु ॥ २ ॥ सुनत हीं सव धाइ कें ल्याए गाय करि इकठेन
हरि दें ग्वाल वालक चले जमुनतट गोंन ॥ ३ ॥ वकासुर रचि
रूप माया रह्यौ छलि करि आय ॥ चोंचि एक भूमि ही लगाइ
इक आकास समाय ॥ ४ ॥ आगें वालक जात हे तें पाछें आ
ए धाय ॥ स्याम सौं वे कहन लागे एक वडौ वलाइ ॥ ५ ॥ तिन
हीं आवत सुभी लीनें ग्वाल गोसुत संग ॥ कवहूं नहि इहि
भांति देख्यौं आजु कौ सौ रंग ॥ ६ ॥ मन हीं मन तव कृस्न भाख्यौ
यह वकासुर अंग ॥ चोंचि चीरि विदारि डारौं पलक में करौं
भंग ॥ ७ ॥ निडर चले गोपाल आगें वकासुर के पास ॥ सखा
मिलि सव कहन लागे तुम न जियकी आस ॥ ८ ॥ अजहूं ना
हिं दुरात मोहन वचौ के गी गास ॥ तव कह्यौ हरि चल्यौ सव
मिलि मारि करें विनास ॥ ९ ॥ चलें सव मिलि जाय देख्यौं आ
मत न विकरार ॥ इत धरनि उत व्योम के विच गुहा के आका
र ॥ १० ॥ पेंठि वदन विदारि डार्‍यौं अति भए विस्तार ॥ मरत अ
सुर चिंगार मारी माह्यौं नंदकुमार ॥ ११ ॥ सुनत धुनि सव ग्वा
ल दर पें अवन उवरे स्याम ॥ हमें वरजत गए पोंदे ख्यों कीयौं
कैसें कांम ॥ १२ ॥ देखि वालनि विकल जानत वकहि उठि वलि

Brihanmandiradhishwar

रांम॥ बकासुरनबिदारिगह्यौं अबबहिआवतस्यांम॥१३॥ सखा
सबहरिटेरिलीनेसबैंआवहुधाय॥ चोंचिफारिबकाबिदार्यौं
तुमहूंकरोंसहाइ॥१४॥ निकसिआएगोपबालकदेखिहरिसु
खपाइ॥ सूरप्रभुकेचरितअगनितनिगमनगाइ॥१५॥ रा[ग] सा
रंग॥ ब्रजमेंकोउपज्योयहभैया॥ संगसखासबकहतपरस्प
रइनकेगुनअगमैया॥१॥ जबतेंब्रजअवतारधर्योइहिकोंन
हिघातकरैया॥ कितीकबातयहबकाबिदार्यौंधनिजसुम
तिजिनिजैया॥२॥ त्रणावर्तपूतनासंघारेतबअतिरहेनन्हैं
या॥ सूरदासप्रभुकीयहलीलाहमकितजियपछितैया॥३॥
रा[ग] धना[श्री]॥ बकहिबिदारिचलेब्रजकोंहरि॥ सखासंगआ
नंदकरतसबअंगअंगबनधातचित्रकरि॥१॥ बनमालापहि
रावतस्यांमहिवारवारअंकवारिभरतधरि॥ कंसनिपात
करोगेतुमहीहमजानीयहबातसहीपरि॥२॥ पुनिपुनिकहत
तधन्यनंदजसोमतिजिहिंइहिकेजननीसुधन्यघरि॥ कहत
तयहसबजातसूरप्रभुभक्तअंगप्रतिपालीबनठरि॥३॥ रा[ग] कां
न्हरौ॥ ब्रजबालकसबजायतबहीमहरिमहरिकेपायप
रें॥ अबसोंपूतजन्योजगतुमहीधन्यकूखिजहंस्यामधरें॥१॥
गायलिवायगयेव्रंदावनचरतनचलीजमुनातटहेरें॥ असु
रएकखगरूपधरिबैठ्योबैठ्योतीरवायमुखघेरें॥२॥ चौंचिए
कभूमेंकरिराख्योएकरह्योहोगगनलगाइ॥ हमबरजेंपह
लेंहरिधायौंबदनचीरिपलमांहिगिराइ॥३॥ सुनतनंदज
सुमतिचक्रतचितसुनतचक्रतभयेकुलनरनारि॥ सूरदास
प्रभुमनहरिलीनोंतबजननीभरिलएअंकवारि॥४॥ रा[ग]
सारंग॥ येहिबिधिब्रंदाबनहरिक्रीडत॥ सखनसहितबल
देवबिबिधिरंगपंचबानमनपीडत॥१॥ लैकेबछआयह
रिगृहमेंबहुबिधिभोजनकीनों॥ नंदघरएठाठेमनमोंहन
ब्रजजनमनहरिलीनों॥२॥ तहांफललेंमालिनतहांआई
जंबूबेररसाला॥ ताहिलेनतहंतहंहरिकरलायौंधानकछुत
नकाला॥३॥ कछुमगगिर्यौंकछुकनेहिदीनोंदुलारतन
भरिदीनों॥ सुंदरफललीनोंदोऊकरमनमेंआंनंदकीनों॥
४॥ खानखवावतदाऊग्वालनगुठिलीसखनचलावत
फिरिभाजनकूंबैंदेंमोंहनब्रजजनचितचुरावत॥५॥ रा

सू॰सा॰ रू जननी आयति हि ओसर सांझ भई मेरे प्यारे ॥ खेलन में कहु
३९ वात सुन तन हि यो व्रज के उजियारे ॥ ६ ॥ भूखे मुख सूखे मोहन
कों तऊ न ग्रह में आवें ॥ कहां कहूं के से लें जाऊं अतिहि हठ नेवि
रुझावें ॥ ७ ॥ औट्यो दूध धर्यो धोरी कों लाल जाऊं वलिहारी ॥
हे हलधर तुम चतुर कहावत ल्यावहु सुत नहि हूं कारी ॥ ८ ॥ सुनि मा
ता की मधुरी वांनी चले कुवर दोऊ संग ॥ अंग री गहें रोहिनी
वलक कों जसुत हि उछंग ॥ ९ ॥ येहि विधि निज मंदिर में लाई व
हु भोजन करवाई ॥ दूध प्याय दोऊ सुतन प्रेम सों निरमल जल
ल अचवाइ ॥ १० ॥ पुनि उज्वल पय फेन सम महि तहां दोऊ सुत पौ
ढाइ ॥ विविधि मनोरथ करत जननि देखि सूरदास वलि जाई
॥ ११ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंधे एकादशो ध्यायः
॥ ११ ॥ अथ अघासुर वध ॥ राग धनाश्री ॥ जसोमति लेत वलाइ
भोर भयो कुंवर कन्हाई ॥ संग सखा सब वलीदाउ ठाडे वलि
भाई ॥ १ ॥ सुंदर वदन निरखि वाय हरों नें नक नाप ॥ नेन कमल
मुख धोय के करों कलेऊ आय ॥ २ ॥ सुतन हों लाडिले स
व व्रज जीवन प्रांन ॥ वार वार मंदिर कहें ताकों स्याम सुजांन
३ ॥ माखन रोटी लेहु सरस दधि रांनि जमायो ॥ षटरस पय मि
ष्टांन सोई जेवो रुचि पायो ॥ ४ ॥ मो पें लीजें मांगि कें जोई जोई
भावें तोहि ॥ संग सखा वलिरांम के रुचि उपजावहु मोहि ॥ ५
तव हसि वि तयो स्याम सेन नेवदन उघारयो ॥ मानो पय दधि
मथत तहां भयो चंद उजियारयो ॥ ६ ॥ सखा सुनत देखन चले मा
नो नेंन चकोर ॥ जुगल कमल भमर ज्यों इंदुपर वेठि रहे मन भोर
७ ॥ तव उठि आए कांन्ह मात उठि वदन पखारयो ॥ वोलि उठे
वलिराम स्याम कित उठो सवारें ॥ ८ ॥ देख जू हसि कहि मि
लेवां हग ही वें ठाइ ॥ मांखन रोटी सघर है जें वत रुचि उ
पजाइ ॥ ९ ॥ जल अचयो मुख धोय उठे वलि मोहन भाई ॥
गाय लई सब घेरि चले वन कुवर कन्हाई ॥ १० ॥ टेर सुनत व
लिराम की वालक आए धाइ ॥ लें आए सब जोरि कें घर तें
वछरा गाय ॥ ११ ॥ सखिन कांन्ह सों कह्यो आजु वृंदावन जे
यें ॥ जमुना तट तृन वहुत सुरभि गान तहां चरैयें ॥ १२ ॥ ग्वाल
गाय सव लें गये वृंदावन समुहाइ ॥ अतिहि सघन वन रे
षि कें हरषि उठे सव गाइ ॥ १३ ॥ कोउ कोऊ हेरी देत पर स्पर स्यां

Brihanmandiradhishwar

मसिखावत॥ कोऊ टेरत कोऊ हांकि सुरभी गन जोरि चलाव
त॥१३॥ अंतरजामी कह्यौ जिय मैं कह्यौ वन टेर॥ कांन्ह कहत
अब के गये पुनि धोंली जो फेर॥१४॥ कोऊ मुरली कोऊ सब
कोऊ शृंगार को टेरै॥ कृस्न कीयौ मन ध्यांन असुर एक वसैंयौ
आयो॥१५॥ बालक वछरु निरखि हौं एक वेर लें जाऊं॥ क
छुक जनाऊ आपुन पों अचल रहौं तिहिं ठाऊं॥१६॥ असुर रु
ल हिंस घार धरनि कों भार उतारों॥ कपट रूप रचि रह्यौ दनु
जयद्रु तुरत पछारौ॥१७॥ गिरि समान धरि अगम तन वैठ्यो
वदन पसारि॥ सुख भीतर वन घन नदी मह्या छवि सुनिहा
रि॥१८॥ पैठि गए सुख ग्वाल धेनु वछा सब लीने॥ देखि मह्या
वनभूमि हरे अन्न कृत कीने॥१९॥ कहन लगे सब आपु में
सुरभी चरें अघाइ॥ मानों पर्वत कंदरा मुख सब गए समाइ
२०॥ सब मुख गये समाय असुर तब चोप सको हौं॥ अंध
कार इमि भयो मनो निसि वार रजो हैं॥२१॥ प्रति हो उठे
अकुलाय कें बालक वछ सब गाय॥ त्राहि त्राहि करि कें
उठे परे कहां हम आय॥२२॥ धीर धीर जकही कांन्ह असुर
यह हूं कें रनाहीं॥ अनजानत सब परे अघासुर के मुख मां
हीं॥२३॥ जियत पागो यह सुन नह्यौ अब को सक के निवारि
तातें रूनो वपु धरहौं असुर नसको सवारि॥२४॥ प्रान्त्र क
स्यौं आघात असौ सुर टेरि पुकार्यौ॥ रह्यौ अधर स्फुरवा
पि बुद्धि बल सुरन सवाह्यौं॥२५॥ व्रसद्वार सों फोरि कें नि
कसे गोकुल राइ॥ बाहिर आय बहुनि कसिकें मेंकाम लीयों
सहाय॥२६॥ वालक वछरा धेनु सबें मन में सुसिकाने अं
धकार मिटि गयो जहां तहां अनुराने॥२७॥ आए बाहिर निक
सिकें सब मन किये हुलास॥ हम अग्यान कि तउ रन हूं कां
न्ह सहाई पास॥२८॥ धन्य कांन्ह धनि नंद धन्य जसुमति मह
तारी॥ धन्य लियो अवतार कूखि सो धनि जिहिं धारी॥२९॥
गिरि समान तन अति अगम पन्नगा को अनुहारि॥ हमरे
खनाछिन एक में माख्यौं दनुज प्रचारि॥३०॥ हरि हसि बोले
बेन सखा जो तुम न हि होते॥ तुम सब की यों सहाइ भयो त
व का रजमो तें॥३१॥ हम हूं तुम मिलि वेंठि कें भोजन करों
बनाइ वंसीवट भोजन बहुत जसुमति दियों पठाइ ३२

Brihanmandiradhishwar

स्.सा. ग्वालवहुतनसुखपायकेंा॥टिमुखकरतप्रसंसा॥ कहीवंहुमजो
५० भएपूतराकोंएवंसा॥३३॥वढिविमानसुरदेखहीगगनरहेंभ
रिछाइ॥जयजयधुनिसवकहततहेंपहूपहूरखवरखाइ॥३४॥
ब्रह्मासुनियहवानअमरघरघरानकुहांनी॥गोकुललीनों
जन्मकोंनमेंपहूनहिंजांनी॥३५॥देख्यौंघरघरखोजलेंसोच
पह्यौंमनमांहि॥सूरस्यामसवलेंचलेवंसीवटकीछांह॥३६॥
रा॥गसारंगा॥हरिवनमेंक्रीडतवहुभांति॥विविधिरंगाकुसुम
निकीमालाधरतआपुनेगात॥१॥वहुरंगधातनचित्रतनमं
डितसोभितसांवलअंग॥तैसेंहीवलरेवसिगारेसखाकरत
वहुरंग॥२॥वंसीश्रंगपत्रवहुवाजेसखाकूकदेंवोलें॥कां
चनकेमनियागुंजामणिउरऊपरअतिलोलें॥३॥वेनखेतषी
केसवचोरनहूंसतखिझावतभारी॥देखितपकरतअरुझ्क
झोरतएकरेततहांगारी॥४॥कवहूंभृंगनकीवांनीकहिभव
रनकेसंगधावत॥कहूंहंसनिकीचालिमनोहरकवहूंकोकि
लकुहुकावत॥५॥कहूंध्यानवगनाईकरिमुनिकीगति
हिलजावत॥कवहूंमगछायासकरनकोंव्रजभूमिहिंप्रति
धावत॥६॥कहूंमोरनसंगनृत्यकरतअतिकवहूंजमुनज
लनरही॥विविधिछीकसगाश्रृंगाकीछिटकेंपुनिश्रंगमत
हींकरहीं॥७॥कहूंपरस्परनिजछायागहिमेंडुकचालदिखावें
कवहूंकूपढिकशब्दकरावेंयहविधिसखनहसावें॥८॥क
हूंवनचरकोंअतिखिजायकेंद्रुमचढिडारहिलावें॥महासुख
तव्रजकेलरिकनकोंओहरिखेलखिलावें॥९॥तहांअघासु
रआयपह्योनिहिवेंसुखभीनरधाई॥माह्योंतुरतछुडायसव
नकोंसुरकुसमनिझरलाई॥१०॥ब्रह्मासुनिअचरजमनकीनों
व्रजमेंआयोंधाई॥सूरदासप्रभुकीलीलालखिमनहुठगो
रीखाई॥११॥इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदसमस्कंधेदसमोध्या
यः॥१२॥अथवछचरनलीला॥रागसारंगा॥हरसभएनंदलाल
वेंठितरुछांहकी॥वंसीवटअतिसुखदपूरद्रुमपासवहूहें
सखालिएतहांगाएधेनुवनचरतकहूंहें॥१॥अतिआनंदप्र
लकितभएगावतहेंहरिगाथा॥वेठिगएसुखपायकेंग्वाल
वालइकसाथ॥२॥अहीरलीयेंमधुछाकलीयेंवृंदावनआ
ये॥विंजनसरसप्रकारजसोदाहरएपठाए॥३॥स्यांमकह्योंव

Brihanmandiradhishwar

नचलनतहेंमातासोंसमुझाइ॥ उतेंतेंवेग्राईसवेंदेखतहीसुख
पाइ॥४॥हरिहसिबोलेवेंनप्रेमजननीपोहैचायो॥कांन्हरेखि
मधुछाककुपुलकिअंगअंगवढायो॥५॥नीवेंपोहेचेंग्राइतुमभ
लोवन्योसंजोग॥वारवारकहेंसखनसोंप्राज्ञुकरेंसुखभोग
६॥वनभोजनविधिकरतकमलकेपातमगाए॥नौरपातप
लासमरससरेंनावहुलाए॥७॥भांतिभांतिभोजनधरेंदधि
लोनीमिष्टान॥वनफललएमगायकेंरुचिकपिलागोषान
८॥वनभोजनहरिकरतसंगमिलिसुवलसुदामा॥स्यांमसु
वरपरसेनमहारिसुतश्रीसीदामा॥९॥कांन्हसवनमिलिषा
तहेंलेलेंकौरछिडाय॥औरनदेतवुलायढिगआपलेतसु
खनाय॥१०॥व्रह्मादेखिविचारिमहिकोंपुनईचलाई॥मोहिप
ठयोजिहिसोंपिनाहिकहांकहिहोंजाइ॥११॥देखोंधोंयहकों
नहेंवालवछहरिलेउ॥व्रह्मलोककलेंनाउगोरहिविधिकेंपे
हखदेहुं॥१२॥अंतरजांमीनाथतुरतविधिमनकीजांनी॥
वालकदेदेंपठेंवछवनकहांहिरानी॥१३॥जहांतहांवनहू
ढिकेंफिरिप्राएहरिपास॥सखाधनिवेंठारिकेंप्रासुनग
येसुदास॥१४॥हरिलएवालकवछव्रह्मलोकहिपहुचाये॥
फिरिग्रावेंजोकांन्हकहुंफुनाहिपाए॥१५॥प्रभुतवहीजांनि
रहेलेंगयोव्रह्मचुराइ॥नोजिहिठगातिहिरूपकोंवालकव
छवनाइ॥१६॥मायाकीनेग्रौरव्रह्मरुद्रनालउपायो॥ग्रपनों
करतिहिजांनिकीयोंताकोंमनभायो॥१७॥उद्धारनमायनछ
मीमनहरिकीनोंज्ञान॥ग्रनजांनेंविधियहकरेंनएरचेभग
वांन॥१८॥वहुवुद्धिवहुग्रलकनिवहुपोहसतनसवके॥वहे
भाववहुभाववधेनुवछरामिलिरवके॥१९॥स्यांमकह्योंसव
सषनसोंगोधनल्यांवहुघेरि॥संध्याकोंग्रागमभयोंव्रज
तनहीकोंफेरि॥२०॥सुनतग्वाललेंधेंनुवलेव्रजव्रंदावनते
कांन्हहिवालकजांनिडरेसवग्वारेमनमें॥२१॥मध्यकियोलें
स्यांमकोंसखाभएचहुपांस॥वछधेनुग्रागेंकियेग्रावत
करतविलास॥२२॥वाजतवेंनविषानसवेंग्रपनेमनभाव
त मुरलीधुनिगोरंभचलतपगधूरिउडावत॥२३॥मोरमुक
टसिरसोहियेंवनमालापटपीत॥गोरजमुखपरसेंहियेंमनों
चंदघनसीत॥२४॥देखिहरखिव्रजनारिस्यांमपरतनमन

Brihammandiradhishwar

॥सू॰सा॰ वारन॥ इक टक रूप निहारी रहे मैं रति चित अरति ॥२५॥ कहां क
॥५२ हैं छवि आजुकी मुख मंडित नख वुर धूरि ॥ मांनों पूरन चंद्रमा कहूं रह्यों
भरि पूरि ॥२६॥ गोकुल पहुंचे आइ गाय वालक अपने घर ॥ गोप सु
त अरु नर नारि मिले अति हेत लाय गर ॥२७॥ प्रेम सहित तबे वल
तहं जेउ पजाये आज ॥ जसुमति मिलि सुत सों कहत रैन करत
तिहि काज ॥२८॥ मैं घर आंवन कह्यों सखा संग कोउ न आवें ॥ दे
खत वन अति अगम मग उरों वहु मोहि डरपावें ॥२९॥ वार वार सु
त लाय कें लें वलाय पछिताय ॥ कालहि तें वेई सवें ल्यावेंगा
य चराइ ॥३०॥ यह सुनि कें हरि हसे कांन्ह मेरी जाय वलैया ॥ भूष
लगी मोहि वहु तहीं दें कछु मैया ॥३१॥ मांखन दीनों आनि कें य
ह तव लों तुम षाहु ॥ तातों जल हैं घांम कों तनक तेल मों न्हाउ
॥३२॥ तव जसुमति गहि वांह तुरत लीने अन्हवाए ॥ रोहिनी करि
जेंवनारि स्यांम वलि रांम वुलाए ॥३३॥ जेंवत अति रुचि पावई
परसत माता हेत ॥ जेंउठे अचवन लियो हरि कर वीरा देत ॥ अ
स्यांम उनींदे जांनि मात रचि सेज विछाई ॥ तापर पोंढे लाल म
नहि मन हरख वढाई ॥३५॥ अपनी रुचि विधि गर्व हत नन करतन
लागी वार ॥ सूरदास प्रभु के चरित पावत कोउ न पार ॥३६॥ इति
य रिन ॥ राग कल्यान ॥ नंदमहरी के भावते जागौं मेरे प्यारे ॥ प्रात भ
यो उठि देखिये रवि किरन उज्यारे ॥१॥ ग्वाल वाल सव टेरहीं गै
या वन चारण ॥ लाल उठो मुख धोइ लें लगे वदन उघारन ॥२
मुख तें पट न्यारों कियो माता कर अपने ॥ देखि वदन चकृत भ
ई सहरक काहि सुपने ॥३॥ कहां कहैं वाह रूप की को वरनि सुनावें
सूर स्यांम के गुण अपार नंदसुवन कहावें ॥४॥ राग विलावल
उठे नंदलाल सुनत जननी की वांनी ॥ आलस सहित भरे नेंन सो
भा की खांनी ॥१॥ गोपी थकित भई चितवत सव ठाढी ॥ नेंन कर
चकोर चंदन वदन प्रीति वाढी ॥२॥ माता जल झारी लें कमल
मुख पखाह्यौं ॥ नेंन नीर परस करत आलस हि विसाह्यौं ॥३
सखा द्वार ठाढे सवें टेरत हैं वनकों ॥ जमुना तट चलौ कांन्ह
चारण गोधन कों ॥४॥ सखा सहित जेंवहु मैं भोजन कीनों
सूर स्यांम हलधर संग सखा वोलि लीनों ॥५॥ राग विलावल
दोऊ भैया जेंवत मा आगें ॥ पुनि पुनि दधि आजु जमायो वलदा
ऊ तुम लेहु ॥ देखों दधि कों स्वाद आपु लें ता पाछें मोहि देहु ॥२॥ व

२ जेंवत के पाछें जल पियो ८ प्रात समै उठि

लिमोंहूनदेऊजेंवनरुचिसोंसुखलूटतनंदरानी॥सूरस्यामअव
कहतअघानोंअचवनमांगतपानी॥३॥रागरामकली॥टेरतहैं
सवग्वालकन्हैयांआवहुवेरभई॥आवहुवेगिविलंवजिनि
लांवहुगैयादूरिगई॥१॥यहसुनिकेंदोऊउठिधाएकछुअचयो
कछुनांहि॥कितीकदूरिसुरभीतुमछांडीवनतोंपहुंचीजाइ॥२
ग्वालकह्यौकछुपोंहोंचीढूंढेंहूंकछुमिलिहैंमगमांहि॥सूरदास
वलिमोंहनभैयागैयनपूछतजांहि॥३॥रागविलावल॥वनप
हूंचतसुरभीलईजाय॥जैहोंकहांसखासवटेरतहलधरसंग
कन्हाई॥१॥जेंवनवेरभईकछुहमकोंतुमअतिकरीचढाई॥अ
वहमजैहैंदूरिचरावनतुमसंगवुलाई॥२॥यहसुनिग्वालधा
यसवआएस्यांमहिअंकलगाई॥सखाकहतयहनंदसुवनतु
महोंसवकेसुखदाई॥३॥आजचलोंवृंदावनजैयेंगैयांचरेंअ
घाई॥सूरदासप्रभुसुनिहरखितभएघरतेंछाकमगाई॥४॥रा
गविलावल॥चलेसववृंदावनसमुहाई॥नंदसुवनसवग्वाल
नटेरतल्यावहुगाइफिराई॥१॥अतिआतुरह्वैफिरेसखासव
जहांतहांआएधाई॥पूछतग्वालवातकिहिकारणवोलेकु
वरकन्हाई॥२॥सुरभीवृंदावनकोंहांकोऔरनलेहुवलाइ
सूरस्यांमयहकहीसवनसोंआपचलेअतुराई॥३॥रागसारं
ग॥गैयनघेरिसखासवल्याए॥देखेकान्हजानवृंदावनता
तेंमनअतिहरखाए॥१॥आसुसमेंसवकरनकुलाहला
धोरीधूमरिधेनुवुलाए॥सुरभीहांकिदेतसवजहांतहांटेरि
टेरिहेरीसुरगाए॥२॥पोंहोंचेआयविपनवृंदावनदेखतद्रुम
दुखसवनगवाए॥सूरस्यांमगएअघामारिसवनाहिंनते
दिनअवआए॥३॥रागसारंग॥चरावतवृंदावनहरिधेनु॥ग्वा
लसखासवसंगलगावतखेलतहैंकरिचैंन॥१॥कोऊगावत
कोऊमुरलीवजावतकोऊविषानकोऊसुषवेंन॥कोऊनिर्त
तकोऊकहतनालदेंजोव्रजवालकसेंन॥२॥त्रिविधिपवन
जहांवहतनिसिदिनतरसुभगकुंजघनएन॥सूरस्यांमनिजधाम
विसारतआवतयहसुखचैंन॥३॥रागसारंग॥वृंदावनमोकों
अतिभावत॥सुनोंसखातुमसुवलश्रीदांमाव्रजतेंवनगोचा
रनआवत॥१॥कांमधेनुसुरतरुसुखजहांलोंरमासहितवैकुं
ठभुलावत॥यहवृंदावनजमुनातटहैंएसुरभीसुखरचाव

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा.॥ त॥२॥पुनिपुनिकहतस्यांमश्रीमुखसोंतुममेरेमनअतिहिसुहा
॥८२॥ वतसूरदाससुनिग्वालचकृतभएहरिनिजअगम्यदिखावत
३॥रागबिलावल॥ग्वालसखाकरजोरिकहतहोहमेंस्यांमतुम
जिनिबिसरावहु॥जहांतहांतुमदेहधरतहींतहांतहांजिनि
चरणछुडावहु॥१॥ब्रजतेंतुमेंकहूंनहिटारोंयहहैपाइमेंहूंब्र
जआवत॥यहसुखनहींकहूंभुवनचतुर्दसइहिब्रजयहअव
तारावत॥२॥औरगोपजेवहुरिचलेघरतिनसोंब्रजकहिछा
कमगावत॥सूरदासप्रभुगुपतबातसबग्वालनिसोंकहि
कहिसुखपावत॥३॥रागबिलावल॥कन्हैयाहेरीदेसुभगसां
वरेगातकीमैंसोभाकहतलजाऊं॥मोरपंखसिरमुकटकेमु
खमटकनिकीबलिजांउं॥१॥कुंडललोलकपोलननझांईबि
हसनिचितैचुरावें॥दसननरमकमोतिनकीलरकीसोभाक
हतनआवें॥२॥अपरदपरदमकुसमबनमालाद्रुगनखरेबि
राजें॥चित्रबाहुपोहेंचियापोहेंचीलहाथमुरलिकाछाजें
३॥कटिपटपीतमेखलामुखरितपाइननूपुरसोहें॥आसपा
ससबग्वारमंडलीदेखतत्रिभुवनमोहें॥४॥सबमिलिआनं
दप्रेमवढावतगावतगुनगोपाल॥यहसुखदेखतस्यांम
संगकोंसूरदाससबग्वाल॥५॥रागगौरी॥सोहेंहरिकांधेंकां
मरियांकाछकछिनेनागेपाइनगाइनकीटहलकरतहें॥त्रि
भुवनपतिईसानपतिनारिनरपतिपछितुपतिरविससि
जिहडरतहें॥१॥शिवविरंचिध्यानधरतभक्तत्रिविधितापह
रतनिहिहितवपुधरतहें॥सूरदासप्रभुकेगुणनिगमनेति
नेतिगावततेईवनवनविहरत॥२॥रागगौडी॥कांन्हकांधें
कामरिलकुटलीयेंकरघेरेंहें॥लेलिवाइगऊनबुलाईजहां
तहांवनवनहेरेंहें॥१॥वृंदावनमेंगायचरावतधौरीधूमरि
टेरेंहें॥सूरदासप्रभुसकललोकपतिपीतांबरकरफेरेंहें
२॥रागनट॥छाकलेंनजेग्वालपठाए॥तिनसोंपूछतिमहरि
जसोदाछांडिकन्हाईतुमकितआए॥१॥हमेंपठायदियोनंद
नंदनभूखेअतिअकुलाए॥धेंनुचरावतहैंबृंदावनहमइहि
कारनआए॥२॥यहकहिग्वालगयेअपनेघरबनकीबातसु
नाए॥सूरस्यांमबलिरांमअजहूंअधजेवतउठिधाए॥३॥रा
गसारंग॥औरग्वालधरिआयेगोपीनाथहिवेरभई॥अतिहीवेर

Brihanmandiradhishwar

भईलालनकोंअजहूंनछाकगई॥५॥तबहीतेभोजनकरिराखौं
उत्तमदूधजमाइ॥नाजानोंहरिकेंबनचारनेअतिहिअबेरल
गाइ॥२॥राजकरौंवेधेंनुतुस्वामीनंदरिहिकहतसुनाइ॥तबकेभू
खेसूरबलमोहनकहतजसोदामाइ॥३॥रागसारंग॥जोप्रति
छांकप्रेमसोंमैया॥ग्वालनिबोलिलईअबजेंवतउठिहैरे
दोउभैया॥१॥तबहीतेजेंवनकोंबनमेंचाहतदियोंपठाइ॥भू
खेभयेआजुदोउभैयाबनमेंछाकमगाइ॥२॥सदमांखनसा
जोंदधिमीठोंमधुमेवापकवांन॥सूरस्यामकोंछाकपठावति
कहतग्वारिसोंजांन॥३॥रागसारंग॥घरहीकीएकग्वारि
बुलाई॥छांकसांमग्रीसबेंजोरिकेंबाकेकरदेंतुरतपठाइ॥१॥
प्रेमसहितलेचलीछाकबहकहेंभूखेहेंदोउभाई॥क
ह्योंनाहिंबृंदावनजेंतूजांनतिसबहीप्रकृतिकनई॥२॥तुर
तजायबृंदाबनपोंहचीग्वालबालकोऊनलनाई॥सूरस्या
मकोंटेरनिडोलतिकितहोंलालछाकलेआई॥३॥रागटो
डी॥आजुकोनेंबनगाइचरावनगयेहेकुंवरबेर॥बैठेकहां
सोधिलेहुकिहिंबिधिग्वारिकरतफेरबसेर॥१॥बृंदावनआदि
सकलबनढूंढोंजहांगाइनकीटेर॥सूरदासप्रभुकेंसेंदृरि
हेंदिनकरओटसुमेर॥२॥रागसारंग॥छांकलियेंसिरस्याम
बुलावत॥ग्वारिनिफिरतिढूंढतिहरिकोंकितहूंभेरनपाव
त॥१॥टेरसुनतकाहूकीश्रवननितिहितुरतउठिधावत॥पां
वतनहिंस्यामबलिरांमहिव्याकुलह्वैंपछितावत॥२॥बृं
दावनफिरिफिरिटेरतहेंबोलिउठेनहांग्वाल॥सूरस्यामब
लिरामइहांहेंछाकलेहुकिनिबाल॥३॥रागसारंग॥हरिकों
टेरतिफिरतिगुवारि॥आनिलेहुतुमछांकआपनीबालक
बनबनवारि॥१॥आजुकलेऊकरतबन्योंनहिंगेयनसंगउ
ठिधाए॥तुमकारनबनछाकजसोदामेरेहाथपठाए॥२॥य
हवांनीजबसुनीकन्हैयादोरिगाएनतिहिकाज॥सूरस्यामक
ह्योंनीकेंआईभूखबहुतहीआज॥३॥रागसारंग॥बहुतफि
रीतुमकाजकन्हाई॥टेरिटेरिहोंभईबावरीदोऊभैयातुमर
हेलुकाई॥१॥जेसबग्वालगयेब्रजघरकोंतिनसोंकहिंतुम
छाकमगाई॥लोनीदधिमिष्टानजोरिकेंजसुमतिमोहिपठा
ई॥२॥ऐसीभूखमांहितुमआईनेरीकिहिंबिधिकरोंबडाई॥सू

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ रस्यांमसब सखन पुकारत आवत कौंन छाक अब आई ॥३
५३ रा॥ सारंग॥ आई छाक बुलाए स्यांम ॥ यह सुनि सखा सबै जुरि
आए सुबल सुदांमा अरु श्रीदांम ॥१॥ कमलपत्र दौना पलास
के सब मिलि भोजन रुचि करि षात ॥ ऐसी भूख मांझ यह भोज
न रुचि करि करि सब खात ॥२॥ ऐसी भूख मांझ यह भोजन पठ
यो मात जसोद ॥ सूरस्यांम आपुन ही जेंवत ग्वालिन कर ते खात
॥३॥ रा॥ सारंग॥ बिहर्यो लाल आव हु आई छाक ॥ भई अबार गाइ
बहुरि उलटी बहुरै हूं छाक ॥१॥ अर्जुन भोज सुबल श्रीदांमा मधुमंग
ल एक ताक ॥ मिलि बैठे सब जेंवन लागे बहुत बन्यों किहिं पाक
॥२॥ अपनी पत्रावलि सब देखत जहां तहां बैठे उपराक ॥ सूरदा
स प्रभु खात ग्वाल संग ब्रह्मलोक जिहिं धाक ॥३॥ रा॥ सारंग॥ स
खन संग हरि जेंवत छाक ॥ प्रेम सहित मैया दै पठई सबै बनाइ
एक ताक ॥१॥ सुबल सुदांमा श्रीदामा संग सब मिलि भोजन रु
चि करि खात ॥ ग्वालनि कर तें छाक छिनावत मुख लै मेलि
सराहत जात ॥२॥ जो सुख कांन्ह करत वृंदावन सो सुख नहीं
लोक हूं सात ॥ सूरस्यांम भगतन बस ऐसें ब्रह्म कहावत है नंद
तात ॥३॥ रा॥ सारंग॥ ग्वालनि करते कौर छुडावत ॥ झूठौं लेत
सबन के मुख कौ अपने मुख मैं नावत ॥१॥ षटरस के पकवान
धरे सब तामें नहीं रुचि पावत ॥ हा हा करि करि मागि लेत हैं क
हत मोहिं अति भावत ॥२॥ यह महिमा ऐई पुनि जानें जातें आप ब
धावत ॥ सूरस्यांम सुपने दरसत मुनि जन ध्यान लगावत ॥३॥
रा॥ सारंग॥ ब्रजबासी पटतर कोई नाहीं ॥ ब्रह्म सनक ध्यान न
हिं पावत झूठौं लें लें खाहीं ॥१॥ धन्य नंद धनि जननी जसोदा
धन्य जहां अवतार कन्हाई ॥ धन्य धन्य वृंदावन के तरु जहां
फिरत त्रिभुवन के राई ॥२॥ हलधर संग छाक जेंवत हैं मीठो
लगत सराहत जाइ ॥ सूरदास प्रभु विश्वंभर सो ग्वालबाल
के कौर अघाई ॥३॥ रा॥ सारंग॥ ग्वालमंडली मैं मोहन बैठे ॥ ब
ट की छाया दुपहर की बिरियां संग लीने ॥१॥ एक पिवत दूध
एक बांटत फल बेपा एक रुगमिलेत आप आप अमन कीने
॥२॥ सूरदास प्रभु कौं सुख निरखत सुरी झिरी झि सुमन बरख
त रस लीने ॥ जेंवत अरु गावत कांन्ह सारंग की तान ग्वाल स
खनि मध्य छाक लेन कर छीने ॥३॥ रा॥ सारंग॥ सीतल छांह स्यां

Brihanmandiradhishwar

मवेठे जांनि भोजन की बिरियां ॥ वाम भुजा सखा अंस दीने लीने
दछिन कर द्रुम डरियां ॥१॥ चलिये जू गाइन घेरों टेरो जू वलि रांम
सों कर तिवौलि लेहु आपनी अंवरियां ॥ सूरदास प्रभु वेठे कर
मन गैयां को छ दूध की ह्रौ वरियां ॥२॥ राग सारंग ॥ जेंवत छांक
गाय विसराई ॥ सखा सुदामा कहनि सवन सों छाक कहि मेंतु मार
ह्रे भुलाई ॥१॥ धेनु नहीं कहूं देखत नैरें भोजन हीं में सांझ लगाई
सुरभी कांज जहां तहां धाए आपुन हां उठि चले कन्हाई ॥२॥ ला
ए ग्वाल घेरि गो सुत देषि स्यांम मन हरख बढाई ॥ सूरदास
प्रभु कहन चलों घर वन में आजु अवार कन्हाई ॥३॥ राग गौरी ॥
व्रज हीं चलों आई अव सांझ ॥ सुरभी सवें लेहु आगें करि रेनि भ
ई पुनि वन हीं मांझ ॥१॥ गैयां हांकि चलाई व्रज कों ओरस्वार सव
लाए पुकारि ॥ भली कही यह वात कन्हाई अनहित सघन अफव
न हैं उजारि ॥२॥ निकसि गए सव वन तें वाहिर आनंद भए सव ग्वा
ल ॥ सूरदास प्रभु मुरली वजावत व्रज आवत नटवर गोपाल ॥३॥
राग कल्यान ॥ सुंदर गाऊ सखा सव सुंदर सुंदर भेष धरयो गोपाल
सुंदर पंथ सुंदर गति आवन सुंदर मुरली शब्द रसाल ॥१॥ सुंदर
लोक सकल व्रज सुंदर सुंदर नारि महरि के वाल ॥ सुंदर वदन
विलोकत सुंदर सुंदर हलधर रूप रसाल ॥२॥ सुंदर गोप गा
इ अति सुंदर गुण सव करत विचार ॥ सूर स्यांम संग सव सुंदर ए
सुंदर भक्त हेत अवतार ॥३॥ राग कल्यान ॥ देखि सखी वन तें जु व
ने व्रज आवत हैं नंदनंदन ॥ सिखि सिखंड सीस मुख मुरली व
न्यों तिलक उर चंदन ॥१॥ कुटिल अलक मुख चंचल लोचन नि
रखत अति आनंदन ॥ कमल मध्य मनु द्वै खग खंजन वधे आ
य उडि फंदन ॥२॥ अरुन अधर छवि दसन विराजत जब गावत
सुमंदन ॥ मुक्ता मनों नीलमणि मय पुट धरे वुरकि कबु वंदन
३॥ गोप भेख गोकुल गो चारत हें प्रभु असुर निकंदन ॥ सूरदास
प्रभु सुजस वखानत नेति नेति श्रुति छंदन ॥४॥ राग गौरी ॥ मे
रे नेंन निरषि सुख पावत ॥ संध्या समें गोप गो सुत संग वनि व
नि तें व्रज आवत ॥१॥ गुंजा उर वनमाल मुकट सिर वेंनु साल व
त ॥ कोटि किरनि रवि मुख परकासत उडपति कोटि लजावत
॥२॥ चंदन खोरि कांछनी कांछें देखत हीं मन भावत ॥ सूर स्याम
नागरि नारिनि वासर विरहन सावत ॥३॥ राग केदारो ॥ सोभा

Brihanmandiradhishwar

सू॰सा॰ काहू न कहूँ नहिं आवैं ॥ अचवत अति आदर लोचन पुट मन न
५५ तृप्त कों पावैं ॥ १ ॥ सजल मेघ घन स्याम सुभग वपु तड़ित सुभग
वनमाल ॥ शिखि शिखंड वनधातु विराजत सुमन सुगंध प्रवाल
॥ २ ॥ कछुक कुटिल कमनीय सघन अति गोरज मंडित केस ॥ सो
भित मनु अंबुज पराग रस रंजित मधुप सुदेस ॥ ३ ॥ कुंडल किरन
कपोल लोल छवि नैंन कमल दल मीन ॥ प्रति प्रति अंग अनंग
कोटि छवि सुनि सखि परम प्रवीन ॥ ४ ॥ अधर मधुर मुसिकानि
मनोहर करत मदन मन हीन ॥ सूरदास जहां दृष्टि परत हैं हो
त तहीं लवलीन ॥ ५ ॥ राग बिलावल ॥ सोभा मेरे स्याम हीं पैं सोहैं
या बालक पटतर देवे कों कहां कहूं कवि टोहैं ॥ १ ॥ बलि बलि आ
ऊ छबीले मुख पर या उपमा कों को है ॥ देखत अंग थकित हैं
सखी री कोटि मदन छवि मोहें ॥ २ ॥ ससि मानन गारि रह्यौ विधि आ
नन वाके नैंन न जोहैं ॥ सूरदास बलि बलि मूरति सा मुनि जन म
न हीं पोहैं ॥ ३ ॥ राग नट ॥ विधि मन ही मन सोच परह्यौ ॥ गोकुल की
रचना सब देखत अति जिय मांझ डर्यौ ॥ १ ॥ मैं विरंचि विरच्यौ जग
मेरौं यह कहि गर्व बढ़ायो ॥ [illegible] ग्वाल बाल कहीं कौनें
ठाढ़ रचायो ॥ २ ॥ वृंदावन तरु सघन वृच्छ तरु मों हू न सबै बुलाए
सखा संग मिलि करि भोजन विधि मन अति भर्म उपाए ॥ ३ ॥ धें
नु रहीं वन भूलि कहूँ बालक भ्रमत न पाए ॥ पानें स्याम अति
ही आतुर ढूंढ़त कहूं ढूंढि धाए ॥ ४ ॥ बालक बच्छ हरे चतुरानन
ब्रह्म लोक पोहौंचाए ॥ सूरदास प्रभु गर्भ बिना मन नव कृत पे
रि बनाए ॥ ५ ॥ राग कल्यान ॥ मैं तौं जे हरे हैं तेतो सोवत परे हैं एक रहैं
कौनें आनि तृप्र गुरी रेन दें रह्यौ ॥ पूरण पुराण आनि कीयौ च
तुरानन सोई प्रभु पूरण इहां ढूंढ़ि रह्यौ ॥ १ ॥ इतै दै खिधावें इतें आ
वें आवरज पावें सूर सुलोक व जलोक एक भै रह्यौ ॥ विवसह्वे
हारि मानी आपु आयौ भगवानी देखि गोप मंडली लोक मंडली
चितै रह्यौ ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ ब्रह्मा बालक बच्छ हरे ॥ आदि अंत प्र
भु अंतरजामी मनसा तें जु करे ॥ १ ॥ सोई रूप वह बाल बत्स सुत
गोकुल जाइ भरे ॥ एक बरस मानि ससयौ सर हैं संग का हू न जांनि प
रे ॥ २ ॥ त्रास भयें अपराध आप लखि अस्तुति करन खरे ॥ सूरदास
स्वामी मनमोहन ता तें मन न धरे ॥ ३ ॥ राग नट ॥ तब हरि हरयौं
विधि कों गर्भ ॥ बच्छ बालक लें गयो सब तुरत कीने सबे ॥ १ ॥ ब

Brihanmandiradhishwar

सलोकहु राय आयो चरित देखन आय ॥ बछ बालक देखि कें
मन करत बिधि ताप ॥ २ ॥ तब गयो बिधि लोक अपने दृष्टि क
रि फिरि आइ । जानि जिय अवतार पूरन रह्यो पाइन धाइ ॥ ३ ॥ ब
हुत में अपराध कीने छमा कीजे नाथ ॥ जानि में यह न ही की
नी जोरि कें रह्यो हाथ ॥ ४ ॥ बछ बालक आनि मन सुख सरन
सरन सुकारि ॥ सूर प्रभु के चरण गहि गहि कह्यो राखि मुरारि
५ ॥ रा ग धना श्री ॥ ब्रज ज्यो ह्यारानि रखि कें नैनन ब्रह्मा को भ्रमि
मान गयो ॥ गोपी ग्वाल फिरत संग चारत ह्वै हूं कोउ न भयो ॥ १
बिंजन बहु भगुरी पर राखन आदन बिधि हि दियो ॥ आपुन
खात खवावत औरन कौन बिनोद रयो ॥ २ ॥ सखा संग पयपां
न करावत अपने हाथ लयो ॥ शंकर ध्यान धरत जु गावीते
यह रस तऊ न रयो ॥ ३ ॥ अहो भाग अहो भाग नंद सुत तन पको
पुन्य लयो ॥ लीला सुभग सूर के प्रभु की ब्रज में गाय जियो ॥ ४ ॥ ध
रा ग सा रंग ॥ धनि यह वृंदावन की रेनु ॥ नंद के सोर चराई गैया
मुखहि बजायो बेनु ॥ १ ॥ मदनमोहन को ध्यान धरें जो अति सु
खपावत चैन ॥ बलत कहां मन और पुरी में जहां कछु लेन
न देन ॥ २ ॥ इहां रहें जहां पावन निसदिन ब्रजबासीनु रेनु ॥ सूर
दास इहां के सरवर नहीं कल्पवृक्ष सुरधेनु ॥ ३ ॥ रा ग सा रंग
ऐसें बसियें ब्रज की बीथनि ॥ ग्वारन की पनवारी चुनि चुनि उ
दर भरीजें सीथनि ॥ १ ॥ पैंडे के सब वृक्ष बिराजत छाया परम पु
नीतन ॥ कुंज कुंज प्रति लोटि लोटि अति रज लागे रंग रीतनि
२ ॥ निसदिन निरखि जसोदानंदन अरु जमुना जल पीतनि ॥
परसत होत सूर तन पावन दरसन करत अतीतनि ॥ ३ ॥ रा ग
नट ॥ धनि धनि ये ब्रजबासी मोर ॥ वे खेलत वे नित करत संग
देख कूकन रस जोर ॥ १ ॥ धनि गुंजावलि कें स्यांम के राजत
अनूपम भांति ॥ धनि गिरि गिरि की धातनि रंग चित्र करत न
न कांति ॥ २ ॥ धनि द्रुम वेली पत्र पुष्प फल स्यांम करत जे हि भो
ग ॥ सूरदास धनि या ब्रज की धर ब्रह्म सनातन जोग ॥ ३ ॥ रा ग
गी ॥ धनि धनि यह जमुना सुखकारी ॥ नंदलाल जहां वि
हरत निसदिन संग सखा मनुहारी ॥ १ ॥ तन के ताप दरस तें
नासे अति सुंदर सुखरूप ॥ सूरदास प्रभु की पटरांनी राजत
कृष्ण स्वरूप ॥ २ ॥ रा ग सा रंग ॥ श्री यमुना जी अपनो रस न दी

Brihanmandiradhishwar

॥सू.सा॥ जें ॥ आसकरों गिरधरनलालकी इतनी कृपा मोहि कीजें ॥ १ ॥
॥५५ हौं चेरी महारानी तेरी चरणकमल राखि लीजें ॥ विलंब करों
जिनि बोलि लेहु मोहि दरस परस वारि पीजें ॥ २ ॥ करों निवास
गुरु अंतर मेरे श्रवण सुजस सुनि लीजें ॥ प्रानपिया की खरी पि
यारी पांनिप कमिअ वलीजें ॥ ३ ॥ हूं अबूज मूढ मति मेरी अन
तन ही चित भीजें ॥ सूरदास मोहि इहै आस है निरखि निरखि
मुख लीजें ॥ ४ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे त्रयोद
शोध्यायः ॥ ३ ॥ अथ ब्रह्मस्तुति वर्णनं ॥ राग सारंग ॥ ब्रजकी ली
ला देखि विज्ञान विधि कों भयो भारी ॥ त्रिभुवन नायक स्याम अ
पने सुकुल पग धारी ॥ १ ॥ खेलत ग्वारन संग रंग आनंद मुरारी
सोहत संग ब्रजबाल गोवर्द्धनधारी ॥ २ ॥ घर घरतें छांकें चली
मानसरोवर तीर ॥ नारायण भोजन करें ग्वारनि संग अहीर
॥ ३ ॥ विंजन सकल मगाइ आप कर मेलहु राखे ॥ खाटे मीठे खा
ट सकल मुख अपने चाखे ॥ ४ ॥ पहलें सब कौं खवाय कें पाछें आ
पुन खात ॥ भोजन के उपहास परकरति सखन सों बात ॥ ५ ॥ दे
खि सकल गंध्रव औरसुर पुर के वासी ॥ आपुस में सब कहें य
ह न होवें अविनासी ॥ ६ ॥ सबहिन के अचरज भयो कहो ब्रह्मा
सों जाय ॥ अविनासी जाको कहें ग्वारिन के संग खाइ ॥ ७ ॥ यह सु
नि ब्रह्मा चल्यों तुरत वृंदावन आयो ॥ देखि सरोवर सजल क
मल मध्य सुहायो ॥ ८ ॥ परम सुभग जमुना वहे तातट त्रिविधि
समीर ॥ पोहप लता द्रुम देखि कें चकित भये मति धीर ॥ ९ ॥ अति
रमनीक कदम की छांह तहां अति परम सुहाइ ॥ राजत मोहन
मध्य परसों बालक पहराइ ॥ १० ॥ मगन भये सब परस्पर भोज
न करत उताल ॥ आवहु गोसुत फेरिकें हरि पठये द्वै ग्वाल ॥ ११
वन उपवन सब ढूंढि ग्वाल हरि पें फिरि आये ॥ वछरा भये अ
दीठ कहूं हेरत नहि पाये ॥ १२ ॥ सकल सभा बैठे रहो हौं हेरों गो जाइ
वछ हरन प्रभु जानि कें उठे धाइ अकुलाइ ॥ १३ ॥ जब गो विरग
ये दृगि ग्वार कों तहां विधाता ॥ लेहें सकल मगाइ ह्वां यग गो जो नि
जनाथा ॥ १४ ॥ ब्रह्मलोक विधि लें गयो गोसुत बालक संग ॥ प्र
भु की अति उदार लीला में मनों कियो रस भंग ॥ १५ ॥ चिंतामनि
तन चितें नवें यह मनें विचारी ॥ बालक रचे वनाइ सवें वछ
रा इक सारी ॥ १६ ॥ करत कुलाहल व्रजगए आप आपने घर मांहि

Brihanmandiradhishwar

सवहु निश्रुति आदर कियो काहे भ्रमनाहि ॥ १७ ॥ नवव्रजआभयो
सोवजायगोकुलकों देखो ॥ कारिहै लोकसंताप जामगोपनश्र
वलेखो ॥ १८ ॥ श्रुतिश्रानुरहकें विधिचल्यो गोकुल पहुच्यो श्राइ
संध्यासमेंपरमकों तूहल जहांतहांदृष्टिमेंगाइ ॥ १९ ॥ कें यह
गोकुल श्रोरकिधों मेंहीचिनभूल्यो ॥ किधों अविनासीयह
थांनमेरोई डोल्यो ॥ २० ॥ अंतरजांमीजांनिधोंगो सुतल्यायेथा
य ॥ मातपिताकों भ्रमभयोंगयोलोकपितिरिधाय ॥ २१ ॥ विधि
देखेंतहांजाइवछवालकजहांराखे ॥ कौमनमेंसंतापवहु
रिव्रजकेंअभिलाखे ॥ २२ ॥ छिनभूतलछिनलोककोंछिन
आवेंछिनजाइ ॥ ऐसेंकरनवहुनदिन्वीनेथकितभयेद्विज
राइ ॥ २३ ॥ तवचितयोंहरिचरणज्ञानमनमेंजवआयों ॥ धृगय
गमेरीवुद्धिकृष्णसोंवारवढायों ॥ २४ ॥ लेगोसुतगोपालसव
सरनिगयेरिषिसाध ॥ वरोमुखअस्तुतिकरीछमियेंअवअ
पराध ॥ २५ ॥ अनजानेंमेंकरीवहुततुमसोंढिठियाई ॥ एमेरेअप
राधछमोत्रिभुवनपतिराई ॥ २६ ॥ तोवालकअपराधसवजन
नीलेहुसभांरि ॥ सरनगयेंराखतसदाश्रोगुनसकलविसारि
२७ ॥ ज्योंखद्योतउदोतहोइकातिमरनसावें ॥ दीपकभयोंप्र
कासकहांसूरजसुचपावें ॥ २८ ॥ हौंब्रह्माइकलोककोंज्योंगू
लरफलजीव ॥ तुमरेसकएकरोमपरकोटिकव्रह्मासीव ॥ २९
मिथ्यासवसंसारहै मिथ्यासवमाया ॥ मिथ्याहैयहदेहजा
सतेहरिविसराया ॥ ३० ॥ तुमजांनेंविनुजीवसवउतपतिप्रल
यसमाइ ॥ तानहकृपाकरिराखिहौंचरणकमलकीछाय ॥ ३१
व्रजअवतारमनुष्यकरिअपवाडुमकरिदेहि ॥ इनग्वारनके
संगरहोंसत्यवचनहेंएहि ॥ ३२ ॥ जोंसुरसननरनागअमरसु
रपतिहूंनपायों ॥ खोजतजुगगयेवीतिअंतमोहूंनलखायों
३३ ॥ कीजोंव्रजकीरेणुरहोंपरसंवुजपासा ॥ मागोयहूपरसा
ददेहुवृंदावनवासा ॥ ३४ ॥ मायारसव्रजभूमिमेंमें देख्योहैंआ
य ॥ देखिपरमरसनाकमह्यव्रजश्रोरनलोकसुहाइ ॥ ३५ ॥ मागों
यहप्रसादसंगग्वारनकोंपाऊं ॥ छांडेलोकप्रभुलखचतुर्मुखगु
नगुणगाऊं ॥ ३६ ॥ अवमेरेप्रभुपहमतोंसेऊंतुमरेपाइ ॥ श्रोमवि
धानाकीजियेंरचेजुसृष्टिवनाइ ॥ ३७ ॥ तुमकर्ताधर्मकर्मकेतु
महीसंसार ॥ मेरीमायातुरतहैंकोऊनपावेंपार ॥ ३८ ॥ नववोले

Brihanmandiradhishwar

सू.सा ९६ गोकुलनाथजूं वचन मेरौं जिनि मांनौं ॥ जो जाकौं अधिकार
नासकौं सोई प्रमांनौं ॥ ५२ ॥ वेगि जलजसुत जाहु फेरि गोकुल
जिनि आंवहु ॥ हनपसिक मारिहु देहु की कलहु न सावहु ॥ ५३
विदा कियौ निज लोककौं करी वहुत मनुहार ॥ कवि अस्तुति
ब्रह्मा चले हु कृष्ण हृदु उपहार ॥ ५४ ॥ धनि गोपी धनि ग्वार धन्य ए
सव व्रजवासी ॥ धन्य जसोदा नंद भक्ति वस किये अविनासी ॥
५५ ॥ धनि गोसुत धनि गाय ए कृष्ण चराई आप ॥ धनि कालिंदी
मधुपुरी जार वसत नासे पाप ॥ ५६ ॥ मथुरा आदि अनादि भा
क्ति जातें चलि आई ॥ व्रजवासी हें धन्य कीर्ति जिनिकी विधि
गाई ॥ ५७ ॥ वृंदावनकौं महातम कापें वरन्यौ जाइ ॥ वछहर
न लीला भई कछु जस कहियें गाइ ॥ ५८ ॥ हरि जन्म कर्म विस्तार
पार सारदा न पावें ॥ सतगुरु कृपा प्रसाद कछुक तातें कहि
गावें ॥ ५९ ॥ सूरदास कैसें कहें हरि गुणकौ विस्तार ॥ शेष सह
स्त्रफण रटत हें तऊ न पावें पार ॥ ६० ॥ इ जामे शासो भा वर्णनं
राग कान्हरौ ॥ आसु वने वनतें व्रज आवत ॥ नाना रंग सुमन
की माला नंदनंदन उर पर छवि पावत ॥ १ ॥ संग गोप गोधन
गन लीनें नाना गति कौतुक उपजावत ॥ कोउ गावत कोउ
निर्त करत हें कोउ करतार वजावत ॥ २ ॥ रांभत गाय वछ हि
त सुधी करि प्रेम मगन थन दूध चुवावत ॥ जसुमति वोलि
उठी हरषित व्हें कुंवर धेनु चराएं कान्ह जु आवत ॥ ३ ॥ इतनी कहत
आय गए मोहन जननी दोरि हियें लें लावति ॥ सूरस्याम के सु
कृत जसोमति ग्वाल वालक हि कहि समुझावति ॥ ४ ॥ राग
सोरठ ॥ गोविंद चलत देखि अति नीके ॥ मध्य गुपाल मंडली
राजत कांधें धरि लें छीके ॥ १ ॥ वछरा वृंद घेरि आगें करि
जन जन अंग वनाए ॥ जो वन कमल सरोवर तजिकें मधुप
गुनी दें आए ॥ २ ॥ वृंदावन प्रवेश अघ मारौ वालक जसुम
ति तेरे ॥ सूरदास प्रभु रही जसोमति चितें वदन हरि तेरे ॥ ३
राग गौरी ॥ अघ मारौ आए नंदलाल ॥ व्रज जुवती सुनिकें
उठि धाई कहत फिरत सब ग्वाल ॥ १ ॥ निरखत वदन चकृत
भई सुंदरि मन ही मन यह करि अनुमान ॥ एई हें रतिपति के
मोहन राई हें हमारे पति प्रांन ॥ सूरदास जननी मन मोहन
वार वार मांगत कछु षांन ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ आजु जसोमति

Brihanmandiradhishwar

तेरेबालकअरिसुअतिमाह्यौं॥ गिरिकंदरासमानभयानक
जवअहिविवरनपसाह्यौ॥१॥ पन्नगरूपहूरेसवगोसुतयहसव
साथ्युवाह्यौ॥ निदरगोपालजायमुखभीतरवपुप्रचंडकरि
फाह्यौं॥२॥ नाकेवलहमवदननकाहूसकलभूमितनवाह्यौं
जेतेभयेसत्रुपहलेंहूहरिजूकवहूंनहाह्यौं॥३॥ वरषविनांन
भयोंनादिनकोंजवअघासुरमाह्यौ॥ सूरदासप्रभुकीयहलीला
याव्रजकोंकाजसवाह्यौ॥४॥ रागनट॥ जसोमतिसुनिसुनिच
कृतभई॥ मोवरजतवनजानकन्हैयाकाधोंकमारिदई॥१॥क
हूंकहूंतेउवरह्योंमोहूननेंकतऊनडरानि॥ आपुनकहांननक
सोंनांहीसूनेवनमेंजानि॥२॥ मेरोंकह्योजोसुनेंश्रवणनिक
हूतिजसोदाषीजनि॥ सूरदासकह्योंवननरिहैंयेंयहकहिक
हिमनरीफति॥३॥ रागगोरी॥ मैयावोहनेखुरोंवलदाऊ॥ कहू
नलगेवनवहुततमासोंसववालकमिलिआऊ॥१॥ मोहूकों
चुचकारिगएलेंजहांसघनवनजाऊ॥ भागिचलेकहिगयो
उहांतेकांटिखाइहेहांऊ॥२॥ होंडरपोंकांप्योंअरुरोऊंकोउनथी
रजधराऊ॥ परमालिगयोंनभाभीतकोंवेभागेजानअगाऊं॥३॥
मोसोंकहतमोलकोंलीनोंआपकहांवतसाऊं॥ सूरदासवलि
वडेचवाईतैसेमिलेसखाऊ॥४॥ रागनट॥ हरिकीलीलाक
हतनआवें॥ कोटिब्रह्मांडछिनकमेंनासेंछिनहीमेंउपजावें
॥१॥ बालकवछहरेहरिलेंगयोंताकोंमार्भनवावें॥ ऐसोपुरुषा
र्थीसुनिजसोमतिषीजतिफिरिसमुझावें॥२॥ सिवसनिकादिक
अंतनपावेंभक्तवछलकहावें॥ सूरदासप्रभुगोकुलमेंसो
घरघरगायचरावें॥३॥ रागनट॥ हेपरमातमआदिमुरारी॥ हों
अपराधकियोंअतिभारीलीजेसरनउवारी॥१॥ दीनदयालक्रि
पाकरिमोपेंहोंअजानमतिमूढ़॥ तुमउदारभक्तनभयहारी॥
ज्ञानगम्यअतिगूढ॥२॥ नरतनधरिभुवजसविस्ताह्योंअवजा
न्योंप्रभुसोई॥ सूरदासयोंहिविधिहरिकोकरिअस्तुतिवरनत
जोई॥३॥ ब्रह्मास्तुति॥ रागमारु॥ योंहिविधिहरिकेपाइनपह्यौं
लोटतहरिपदरजमांहीमनअतिविकलकह्यो॥१॥ हरिनें
ननहखलखबानितुरनहीहरिपानिकर्मादीनों॥ नायचरणसिर
विनयवहुतकरिधांमगवननिजकीनों॥२॥ पुनिअपनेवछरा
अरुवालकअंतरहितकरिलीनों॥ पहलेंकेवछरागोपनसं

Brihanmandiradhishwar

सू.सा गग्वालवहुतविधिकीनों ॥३॥ पुनिसवग्वालमंडलीकरिकेंछाक
५८ विविधिविधिखाए ॥ करनकेलियहविधिव्रजभीतरआनंदरास
वरखाए ॥४॥ पुनिवछरुनकोंटेरितुरतहीमखनसंगगहआवत
माथेंमुकटपीतपटराजतमुरलीमधुरवजावत ॥५॥ फूलनके
सिंगारविविधिकीगोपीनसुखउपजावत ॥ सखाअंसपर
निजभुजधरिकेंएकरएकदृष्टिलगावत ॥६॥ येहिविधिव्रजम
वेशहरिकीनोंजसुमतिनेंनासिरायों ॥ करिआरतीन्योछाव
रिवहुविधिसुनहिउछंगचढायों ॥७॥ तवलरिकनएकवर्ष
रिनामेंअघवधसवाहिसुनायो ॥ सूरदासप्रभुचरननभयेसु
निपुनिधीरजमनल्यायो ॥८॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेद
शमस्कंधेचतुर्दशोध्यायः ॥१४॥ रागसारंग ॥ मैयागायचरावन
जेंहों ॥ तूकहिनंदमहरिसोंवाहावडोंभयोंनडरेहों ॥१॥ रैतापेता
मनामनसुखाअरुहलधरसंगलेंहों ॥ वंसीवटतरग्वालनके
संगखेलतअतिसुचिपेंहों ॥२॥ ओदनभोजनवेरधिगादेंभू
खलगेंतवखेंहों ॥ सूरदासहेंसाखिजमुनजलसोहदेहुजुअरे
हों ॥३॥ रागरामकली ॥ आजुमेंगायचरावनजेंहों ॥ वृंदावनके
भांतिभांतिफलअपनेंकरमेंखेंहों ॥१॥ ऐसीभांतिकहोंजिनि
प्यारेदेखोंअपनीभांति ॥ तनकतनकपगचलिहोंकेंसेंआव
तहेंहेंराति ॥२॥ प्रातजातगेयालेंचारणघरआवतहेंसांझ ॥
तुमरोंवदनकमलकुमिलेहेंरंगतघामेंमांझ ॥३॥ तेरीसोंमो
हिघामनलागतभूखनहीकहूनेंक ॥ सूरदासप्रभुकह्योंनमा
नतपरेंआपनीटेक ॥४॥ रागरामकली ॥ चलेसवगायच
रावनग्वाल हरीटेरसुनतलरिकनकीदौरिगयेनंदलाल
॥१॥ जातचलोंगायनकेपाछेंवलदाउकहिटेरत ॥ आवतपा
छेंजननीदेखितवफिरिफिरिइतउतहेरत ॥२॥ फिरिइतउ
तढेंजसुमतिदेखेंदृष्टिनपरेकन्हाई ॥ जानेजातग्वालसंगदौ
रोटेरतिजसोमतिमाई ॥३॥ वलिदेख्योमोहनकोंआवतस
खाकियेसवठाये ॥ आययोहेंचितिसजसुमतिसोंदेउभुज
पकरेगाये ॥४॥ हलधरकह्योंजानदेमोहिसंगआवेंआजअ
वारे ॥ सूरदासवलिसोंकह्योंजसुमतिदेखतरहियोंप्यारे ॥५॥
रागविलावल ॥ खेलनकोंन्हचलेग्वारनसंग ॥ जसुमतियहक
हतिघरआयदेखोंहरिकियेजेसेरंग ॥१॥ देखोंजायआजवन

Brihanmandiradhishwar

कोंमुखकहांपरोसिधरह्योहे ॥ प्रातहीतेलाग्योयाहीढंगअपनी
टेककह्योहे ॥ २ ॥ मांखनरोटीऔरसीतलजलजसुमतिदियों
पठाइ ॥ सूरनंदहसिकहतमहरिसोंआवेंगाइचराइ ॥ ३ ॥ रा ग
कांन्हरो ॥ वृंदावनदेखतनंदनंदनअतिहीपरमसुखपायों
जहांजहांगायचरतग्वालनसंगडोलतआपुनधायों ॥ १ ॥ ब
लदाऊमोकोंजिनिछांडोंसंगतुम्हारेऐहों वैसेहूआजज
सोमतिछांड्योंकालिकआवनपैंहों ॥ २ ॥ सोवतमोकोंटेरि
लेहुगेबाबानंददुहाई ॥ सूरस्यांमविनतीकरिबलसोंसख
नसमेतसुनाई ॥ ३ ॥ धे नु क ब ध ॥ रा ग भैं रों ॥ सखाकहतनला
गेहरिसोंतब ॥ चलौंतालवनकोजैयेंअब ॥ १ ॥ तावनमेंफल
बहुतसुहाए ॥ वैसेहमकबहूंनहिखाए ॥ २ ॥ असुरधेनुकतहां
हैंरखवारी ॥ चलौकह्योंहरिमिलवनचारी ॥ ३ ॥ विहसतिहरि
संगचलतगुवाला ॥ नाचतगावतगुणगोपाला ॥ ४ ॥ सोयो
हुतोंअसुरतरुछाया ॥ सुनतसब्दतुरतेंधाया ॥ ५ ॥ हलधर
कोंदेख्योंतिनआवत ॥ हाथरेकलोकपेजुचलावत ॥ ६ ॥ प
करिहाथहलधरफलरायों ॥ मारितारपरनांहिगिरायों ॥ ७ ॥
औरबहुततांकोंपरवारा ॥ हलधरहरिनिहिसबकोंमारा ॥
८ ॥ ग्वारनिवनफलरुचिकरिखाए ॥ बहुरोवृंदावनहिसिधा
ए ॥ ९ ॥ हरिहलधरछबिवरनीनजाई ॥ सूरदासयहलीलागा
ई ॥ १० ॥ व्र न प्र वे स ॥ भा ॥ आजुहरिधेनुचरायेंआवत ॥ मोरमुक
टवनमालविराजतपीतांबरफहरावत ॥ १ ॥ जिहिजिहिभांति
ग्वालसबबोलतसुनिश्रवणनिमनराखत ॥ आपुनटेरले
ततानेसुरहरखतमुनिमनभावत ॥ २ ॥ देखतनंदजसोदा
देखतरोहिनीऔरव्रजलोग ॥ सूरस्यांमग्वालनसंगआए
मैयालीनोगोद ॥ ३ ॥ रा ग गौ री ॥ जसोमतिटेरिलयेहरीकनियां
आजुगयोमेरोंगायचरावनमेंहूंवलिजाऊंनछनियां ॥ १ ॥ मो
कारनआन्योंकछुनांहीवनफलतोरिकन्हाई ॥ तुमहिमिले
मेंअतिसुखपायोंमेरेकुंवरकन्हाई ॥ २ ॥ कछुकखाऊंजोभावें
मोहनदेरीमांखनरोटी ॥ सूरस्यामप्रभुजुगजुगजीवोंहरिहल
धरकीजोरी ॥ ३ ॥ रा ग सा रं ग ॥ मेंअपनीसबगायचरेंहों ॥ प्रातहो
तबलिकेसंगजेंहोंतेरेकहनरहेहों ॥ १ ॥ ग्वालवालडहिसबके
भीतरनेंकनहींडरलागत ॥ आजुनसोऊंनंददुहाईरैंनिरहूं

Brihanmandiradhishwar

सू.सा गोजगान॥४॥ औरग्वारसबगायचरेंहूंमेंघरवेंधिहों सूरस्यां
५८ म अबसोइरहोंत प्रांतजांनमेंरेंहों॥ ओ॥ रागकेदारो॥ बहुतेंदु
खहरिसोयगएरी॥ सांझहितेंलागेपोइहिवातनक्रमक्रमक
रिमनवोधिलियेरी॥४॥ एकदिवसगयोंगायचरावनगाइ
नसांथसखारें॥ अबतोंसोइरहोंहोकहिकेंप्रातहिकहांखिवा
रें॥ ॥ यहसुनोंसबबलिरांमहिलागेसंगलेंगयोंलिवाई॥ सूर
नंदयहकहतिमहरिसोंआवनदेंबहराई॥३॥ रागतियरिन॥ रा
गसोरठि॥ करोंकलेउकान्हप्यारे॥ टेरतग्वालद्वारकेंठाढेंआ
येतबकेहोतसवारे॥१॥ खेलोंजाउघोषकेभीतरदूरिकहोंजिन
जेहोंवारे टेरिउठेबलिरांमस्यांमकोंआवहुजाहिधेनुवनचारें
सूरस्यांमकरजोरिमानसोंगाइचरावनकहततहहारे॥२॥ रा
गसारंग॥ मैयारीमोहिदाऊटेरत॥ मोकोंवनफलतोरितदेंआ
पुनगैयनघेरत॥१॥ औरग्वालसंगकहूंनजेहों सबमोहिखि
जावत॥ मेंअपनेदाऊकेसंगजेहोंवनदेखेंसुखपावत॥२॥ आ
गेंकरिपुनिल्यावतघरकोंतूमोहिजानिनदेत॥ सूरस्यामजेंगैय
नसोंअतिहितखेलनसोंअतिहेत॥३॥ रागसारंग॥ बोलिलियें
बलिरामजसोमति॥ आवहुलालसुनोंहरिकेगुनकालिहितें
लगरयोंकरनअति॥ ॥ स्यामहिजांनदेहुमेरेसंगतूकाहेंडर
मांनति॥ मेंअपनेटिगतेंनहिटारतजियप्रतीतिनहिआनति
२॥ गाइलईसबघेरिघरनितेंमहरिगोपकेबालक॥ सूरस्याम
चलेगायचरावनकंसउरहिजियसालक॥३॥ रागनट॥ अ
तिआनंदभएहरिधाए॥ टेरतग्वालबालसंगआवहुमैया
मोहिपठाए॥१॥ इनतेंसखासहितसबआवत चलेस्यामवन
देखो॥ वनमालातुमकोंपहरावेंधातविचित्रनरेखों॥२॥ सू
सीमहरिबलिकीवांनीसुनिबलिहारीयामुखकी॥ जाहुलि
वायसूरकेप्रभुकोंकहततवारकेरुखकी॥३॥ रागसारंग॥
चरावतवृंदावनहरिगाय॥ सखालियेंसंगासुबलसुदांमा
डोलतहेंसुखपाइ॥१॥ क्रीडाकरतजहांतहांसबमिलिअति
आनंदबढाई॥ वगरिगेयावनवीथनिदेखीअतिबहुताई॥२॥
कोउगएग्वालगायवनघेरनकोउगएवछलिवाइ॥ आपु
हीरहेअकेलेवनमेंकहूंहलधररहेजाइ॥३॥ वंसीवटसीतल
जमुनातटअतिहिपरमसुखदाई॥ सूरस्यामननहांवेंठेविचार

Brihatmandiradhishwar

नसखाकहूंबिसराई ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ बारबारहरिकहतमनें
मनअबहिंरहु संगचारनधेंनु ॥ ग्वालबालकोउकहूंनदेषौ
टेरिनाउलेलेदैसेंन ॥ २ ॥ आलसगांतजांनिसुनमोंहनबेठेछां
हकरतननचेंन ॥ अगमरहतकहूंसुनतनहींकछुनहिंगाऊ
रांभनबालकबेंन ॥ २ ॥ तषावेंतसुरभीबालकगनकालीद
हअचयोंजलजाइ ॥ निकसिआइसबतरभएटाढेबेंढिग
एजहांतहांअकुलाइ ॥ ३ ॥ बनघनढूंढिस्यांमतहांआयेगो
सुनगायरहेमुरझाइ ॥ मनमेंध्यांनकरतहींजांन्योंकालीदुस
रह्योंयहांआइ ॥ ४ ॥ गारुडत्रासकरिआयरह्योंहरिअंतरजांमी
सबकेनाथ ॥ अमृतदृष्टिभरिचितेंसूरप्रभुबोलिउठेआवत
हुसिनाथ ॥ ५ ॥ राग गौरी ॥ मोहिबनछांडिआएग्वाल ॥ कहांते
कहांआयनिकसेकरकेसेख्याल ॥ १ ॥ मुरछितकाहेपरेधर
नीकहाभयहूजंजाल ॥ मेंइहांजोआयदेषौंपरेसबबेहाल ॥ २ ॥
आयअचयोंजलजमुनकोंतबगएअकुलाइ ॥ निकसिकेंग
बकूलआयेगिरिपरेसबधाइ ॥ ३ ॥ अंतिबेनुहमसबभएतनु
माहिरिएजिवाइ ॥ सूरकेप्रभुलेतसबकोंजहांतहांसहाइ ॥ ४ ॥
राग गौरी ॥ बलदाऊकहिस्यांमसुकाम्हौं ॥ आवहुबेगिचलौघ
रजेयेबनहींमेंपुनिहोतअधारो ॥ १ ॥ लाएबोलिसखाहल
धरकोंहसेस्यांमसुखचाहि ॥ बडीबारभईबनभीतरतुमगे
यालेहुनिबांरि ॥ हेरीटेरतचलेसबबननतेगोधनरियोंच
लाइ ॥ सूरदासप्रभुस्यामरामदोऊब्रजजनकेसुखदाइ ॥ ३ ॥
बृंदाबनप्रवेशसोभा ॥ राग गौरी ॥ बेमुरलीकीटेरसुनावत
बृंदाबनमेंबासरबसिनिसिआंगमजांनिचलेब्रजआवत
॥ १ ॥ सुबलसुदांमाश्रीदामामिलिसखामध्यमोंहनछबिपाव
त ॥ सुरभीगनसबलेंआगेंकरिकोउनिर्ततकोउबेनबजाव
त ॥ २ ॥ केकीपछमुकटसिरराजतगौरीरागमिलेरसगावत
सूरस्यांमकेललितबदनपरगोरजछबिमनुचंदछिपाव
त ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ हरिआवतगायनकेपाछें ॥ मोरमुकटमक
राकृतकुंडलनेंनबिसारतकमलतेंआछें ॥ १ ॥ मुरलीअधर
धरेंसीखतहेंबनमालापीतांबरकाछें ॥ ग्वालबालसबब
नेबिराजतकोटिमदनकीछबिबांछें ॥ २ ॥ पोंहोंचेआइस्यां
मब्रजपुरमेंघरहिचलेमोहनबलकांछें ॥ सूरदासप्रभुदोऊ

Brihanmandiradhishwar

सू.सा.
९६
जननीमिलिलेतिबलाइबोलिमुखचांबें॥३॥ राग कल्यान॥ आनंद
सहितसबैंब्रजआये॥ धन्यजसोदाजेरोवारोंहूमसबमरतजि
वाए॥१॥ नरतनधरिदेवयहकोऊलीयोंआयअवतार॥ गोकु
लग्वालगायगोसुतकोंराईरांखनहार॥२॥ पयपीवतपूतना
निपातितनावर्तइहिभांति॥ वृषभासुरवछासुरमोहौंबलि
मोहनदेखअघांत॥३॥ जबतेंजन्मलियोब्रजभीतरतबतेंयह
उपाई॥ सूरस्यामकेबलप्रतापतेंबनबनचारतगाई॥४॥ रा
ग गौरी॥ तुमकितगायचरावनजात॥ पितातुमारोनंदमह
रिसोंजसुमतिसीहैंमात॥१॥ खेलतरहोंअपनेघरमेंमाखन
दधिभावेंतवखात॥ अमृतवचनकहौंमुखअपनेरोमरोम
पुलकितसबगात॥२॥ अबकाहूकेकहेंजहूंजिनआवति
हैंजुवतीइतरात॥ सूरस्याममेरेनैनआगेंतेंकितहूंजातहौं
तात॥३॥ राग सारंग॥ मैयाहौंनचरेंहौंगाइ॥ सगरीगायघिर
वतमोपैंमेरेपाइपिराइ॥१॥ जोनपत्याइपूछिबलदेऊअप
नीसोंहहरिखाइ॥ यहसुनिमातजसोदाग्वालनिगारीदेतरिसा
इ॥२॥ मैंपठवतिअपनेलरिकाकोंआवेंमनबहराइ॥ सूर
स्याममेरोंअतिबालकहैंमारतताहिरिगाइ॥३॥ राग गौरी
बलिमोहनदेऊबनतेंआये॥ जननीजसोदामातरोहिनि
हारखदुहुनेदोऊकंठलगाये॥१॥ काहेंआजुअबारलगाईब
दनकमलकोहूकुम्हिलाये॥ मुखभयेआजुदोऊभैयाआछ
कलेऊकाननपाए॥२॥ देखोंजाइकहांजेंबनकोंजसुमति
रोहिनितुरतपठाई॥ मेंअन्हवायदेतदोऊनकोंतुमभीतर
अतिकरोंचढाई॥३॥ लकुटलियोंमुरलीकरलीनीहलधर
कह्योंबखांन॥ नीलांबरपीतांबरदीनोंसैतिधरतिकैंआं
न॥४॥ मुकटउतारिधस्योंमंदिरलैंपोंछतिहैंअंगधात॥ उरव
नमालउतारतिगारतेंसूरस्यामकीमात॥५॥ राग कल्यान॥ अं
गनिआभूषनजननीउतारत॥ हलरीग्रीवनमालमोतिनकी
केवलभुजस्यांमनिहारत॥१॥ छुद्रावलीउतारतिकटितेंसे
तिधरतिमनहीमनविचारति॥ सूरदासप्रभुमातजसोदा
पटलैहूदहूनअंगोरजझारति॥२॥ राग कल्यान॥ आजमेरेछ्या
ईंगायचरैया॥ मोलविसाहिलीयोंमेंतुमकोंजबदोउरहे
नन्हैयां॥१॥ तुमसोंटहलकरावतनिसदिनऔरनटहलक

Brihanmandiradhishwar

रैया यह सुनि स्यांम हूं से काहे रूठे क रति हैं मैया ॥ ४ ॥ नांनि
परति हैं सो चरु ठाई धेनु चरावन रहै हुं रैया ॥ सूरदास प्रभु हूंस
तिजसोदा में चेरी कहि लेत बलैया ॥ ५ ॥ रा॥ कल्यान ॥ यह कहि ज
ननी दूहन उरलावति ॥ सो मैया सुत अंगपरसि जलबलिव
लिगई कहि कहि अन्हवावति ॥ १ ॥ सरस वसन तन पोंछि ग
ई लें षटरस कीजें वनारि ॥ सीतल जल कपूर रस अचयो का
री कनक लीयें अचवावति ॥ २ ॥ मयौ खुहू मुख धोइ तुरत ही
पूछी पांन बीरी मुख नावत ॥ सूरस्यांम मुख देखत चैन सजा
परपों ढावत ॥ ३ ॥ रा॥ विहागरो ॥ सो वत नींद आयगई स्यांम हि
महरि उठी पोंढाइ दुहूंन कों आप लगी ग्रह कांमहिं ॥ १ ॥ बरजति हैं
घर के लोगन कों हरुवे लें लें नामहिं ॥ गाढे बोलनि पावत कोउ
डुर मोंहन बलि रांमहिं ॥ २ ॥ सिवसनकादि अंत नहि पावें ध्याव
त हैं निसजांमहिं ॥ सूरदास प्रभु ब्रह्म सनातन सो सोवत नंद धा
महिं ॥ ३ ॥ रा॥ विहागरो ॥ देखत कान्ह नंद घरनि सो वत ॥ भूखे भ
ए आसु वन भीतर यह कहि कहि मुख जो वत ॥ १ ॥ कहो न ही मा
नति काहू कों आप हठी दोउ वीर ॥ वारवार तन पोंछत कर सों
अति ही प्रेम की पीर ॥ २ ॥ सेज मंगाय लई तब अपनी जहां स्यां
म बलि रांम ॥ सूरदास प्रभु के ढिग सोई संग नंद की बांम ॥ ३ ॥ रा
॥ गोरी ॥ जागि उठे तब कुंवर कन्हाई ॥ मैया कहां गई मो ढिग तें
संग सोवत जो बलभाई ॥ १ ॥ जागे नंद जसोदा जागी बोलि
लिये हरि पास ॥ सोवत झझकि उठे काहे ते दीयक किये प्रका
स ॥ २ ॥ सुपने कूदि परयो जमुना दह काहू दियो गिराई ॥ सूरस्यां
म कों कहति जसोदा जिन मेरे लाल डराई ॥ ३ ॥ रा॥ गोरी ॥ मैं
बरज्यों जमुना तट जात ॥ सुधि रहि गई न्हात की तेरे जिनि डर
पों मेरे तात ॥ १ ॥ नंद उठाय लिये कोरा करि अपने संग पोंढाइ
बृंदावन में फिरत जहां तहां किहि कारन तू जाइ ॥ २ ॥ अब जि
न जैहो गाय चरावन तहां को कर रहति बलाइ ॥ सूरस्यांम दंप
ति बिच सोए नींद गई तब आइ ॥ ३ ॥ रा॥ कल्यान ॥ सुपनों सुनि
जननी अकुलांनी ॥ दंपति बालक हूं त आपुस में सोवत सा
रंग पांनी ॥ १ ॥ या ब्रज के जीवन यह ढोटा कहां देख्यो इहि आज
गाय चरावन जान न दीजे या कों है कहा काज ॥ २ ॥ यह संपति
दोउ जनक से ढोटा इन ही सों सुख भोग ॥ सूरस्यांम वन जात व

Brihanmandiradhishwar